कुलटा

राजेन्द्र यादव की रचनाएं

जन्म : 29 अगस्त, 1929 (आगरा)

शिक्षा : एम० ए० 1951

प्रथम रचना : प्रतिहिंसा (कहानी) 'कर्मयोगी' 1947

रचनाएं :

कहानी-संग्रह

देवताओं की मूर्तियाँ, खेल-खिलौने, जहाँ लक्ष्मी क़ैद है, अभिमन्यु की आत्महत्या, छोटे-छोटे ताजमहल, किनारे से किनारे तक, टूटना, ढोल, अपने पार, श्रेष्ठ कहानियाँ, प्रिय कहानियाँ ।

उपन्यास :

सारा आकाश, उखड़े हुए लोग, शह और मात, कुलटा, एक इंच मुस्कान (मन्नू भण्डारी के साथ), अनदेखे-अनजान पुल, मन्त्र-विद्ध ।

कविता-संग्रह :

आवाज़ तेरी है ।

सम्पादन :

नये कहानीकार पुस्तकमाला में कमलेश्वर, राकेश, रेणु, मन्नू और राजेन्द्र यादव की चुनी हुई कहानियाँ; एक दुनिया : समानान्तर, (नयी कहानियों का प्रतिनिधि संकलन) कथा-यात्रा ।

समीक्षा :

कहानी : स्वरूप और संवेदना; प्रेमचन्द की विरासत; 18 उपन्यास,

व्यक्ति-चित्र : औरों के बहाने ।

अनुवाद :

चैखव, तुर्गनेव, लर्मान्तोव, स्टीनबैक, कामू की रचनाएं

कुलटा

(उपन्यास)

राजेन्द्र यादव

अक्षर

'चांद' पत्रिका के संस्थापक-सम्पादक

रामरख सिंह सहगल

की

स्मृति को

कुलटा

मिसेज तेजपाल कुलटा थीं।

बीनू के मुँह से जब मैंने यह सुना कि मिसेज तेजपाल कुलटा हैं तो सचमुच दिल को बड़ा धक्का लगा। मैं तो सपने में भी नहीं सोच सकता था कि ऐसी सुन्दर, हँसमुख और सौम्य-शिष्ट महिला भी 'कुलटा' हो सकती हैं। कैसी मस्त थीं, कैसी अच्छी तरह मिलतीं, कितनी आत्मीयता से गप्पें लड़ाती थीं वे ! मुझे क्या पता था कि वे वास्तव में हैं क्या ? दाँतों में अगर मिस्सी लगी होती, काजल की लम्बी-लम्बी लकीरें आँखों से बाहर खिंची होतीं, पाउडर पुते गालों पर रूज लगा होता, पान से होंठ और खासतौर से मुँह के कोने रंगे होते, पत्तीदार बालों के नीचे ईयरिंग झूल रहे होते और भौंहें मटका-मटका कर बातें करतीं—तब तो कोई बात ही नहीं थी। पहली मुलाक़ात में ही मैं भाँप जाता कि वे कुलटा हैं। लेकिन अब बीनू की बात से मुझे दुःख कम, आश्चर्य ही अधिक था। मानना पड़ता है कि मिसेज तेजपाल ग़जब की अभिनेत्री रही होंगी (कॉलेज के नाटकों में वे सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री मानी जाती थीं, यह उन्होंने खुद बताया था) तभी तो उन्होंने मुझे क़तई ऐसा सन्देह नहीं होने दिया। उन दिनों उन्हें लेकर जो-जो बातें मेरे दिमाग में आया करती थीं, वे बिलकुल ही दूसरी तरह की थीं।

फिर भी बीनू ने मुझे जो कुछ बताया उसे मान लेने के सिवा कोई चारा नहीं है ··वह अलसेशियन कुतिया, वह गोलियों का फूल, वह गाने की आवाज़···वे सब झूठ थे; असली बात का पता तो अब चला है···

कुछ साल बाद जब कम्पनी ने दुबारा स्पेशल ट्रेनिंग के लिए कलकत्ता भेज दिया तो क़दम ख़ुद-ब-ख़ुद कॉफी-हाउस की तरफ़ उठ गये। पिछले दिनों कलकत्ते के अलग-अलग हिस्सों में चार साल रहा था। उन दिनों कोई भी दिन नहीं गया जब कॉफ़ी-हाउस जाना न हुआ हो। अभ्यास ही कुछ ऐसा हो गया था कि शहर के चाहे जिस हिस्से में रहूँ, रोम की तरह सारे रास्ते मुझे कॉफ़ी-हाउस ही ले जाते। यह 'मिलन-मन्दिर' था।

घुसते ही निगाह मेजर तेजपाल पर गई। हाँ, वे ही तो थे। आइनों-जड़े खम्भे की तरफ मुँह और दरवाज़े की तरफ पीठ किये वे ही बैठे थे। लेकिन कपड़े साधारण नागरिकों के थे। दोनों हाथ पंजों तक अपनी पैंट की जेबों में अटकाये, कुहनियाँ इधर-उधर निकाले, वे शीशे में देख-देखकर इस तरह हँस रहे थे जैसे कोई उनकी बग़ल में गुदगुदी कर रहा हो। एक क्षण को मैं झिझका—शायद वे न हों; लेकिन सामने शीशे में मुझे अपनी पर-छाईं के साथ-साथ उनकी परछाईं भी दिखाई दे रही थी। हाँ, तेजपाल ही तो हैं। मगर वे और कॉफ़ी-हाउस में ? सो भी ऐसे ढीले-ढाले बैठकर यों हँसते हुए! जैसे अपने मन से यही बात हटाने के लिए मैंने गर्दन ऊँची करके सारी मेज़-कुर्सियों पर निगाह डाली। इसे तो वे दुनिया भर के आवारा और लफंगों का अड्डा कहा करते थे।

मैं पास जाकर खड़ा हो गया और वे उसी तरह शीशे में अपने-आपको देख-देखकर हँसते रहे। सामने मेज़ की काली-सतह पर आधा कप कॉफी और खाली प्लेट रखी थी। पास से देखा—हाँ, वही जहाँगीरी ढंग की कुछ-कुछ सफ़ेदी लिए नीची-नीची क़लमें और टेलीफ़ोन के चोंगे जैसी भारी-भारी मूँछें। और इस सब काले रंगों के बीच से झकझकाता लाल-सुर्ख़ रंग। मेरा ख़याल था कि वे उछलकर खड़े हो जायेंगे और अपनी उसी भव्य अदा से हाथ मिलायेंगे, और हाल-चाल पूछेंगे। लेकिन जब वे यों ही बैठे रहे तो मैंने पूछा, "मैं यहाँ बैठ जाऊँ ?"

वे उसी अलमस्त भाव से हँसते रहे। दूर औंधी थाली को छाती से चिपकाए अँगुलियों से उन पर बहुत हल्के-हल्के ताल देता, लाल पेटी वाला बैरा उन्हें देख-देखकर मुस्करा रहा था। हो सकता है यह तेजपाल की शक्ल से मिलती-जुलती शक्ल के और कोई साहब हों। मैंने फिर पूछा, "यह कुर्सी क्या खाली है ?"

उन्होंने बिना सिर घुमाये ही, मानो मुझे शीशे में देखकर कहा, "बैठो !" उनकी आवाज़ ऐसी थी जैसे वे बैरे से कह रहे हों—पानी लाओ। मुझे बुरा लगा। मन हुआ कहीं और बैठ जाऊँ। लेकिन हॉल भरा था। मेज पर किताब रखते हुए मैंने फिर उन्हें ग़ौर से देखा कि शायद वे अभी भी पहचान लें। वे यों ही बेख़बर शीशे में कुछ देख-देखकर मुस्कराते रहे। नहीं, ये मेजर तेजपाल नहीं हैं। मैंने कॉफ़ी मँगाई। शक्ल की समानता पर ऐसे भ्रम कई बार हो जाते हैं। अचानक उन्होंने मेरी किताब उठा ली और उसे आँखों के बिलकुल पास ले जाकर उलट-पलट कर इस तरह देखने लगे जैसे सूँघकर किताब की क़िस्म का पता लगा रहे हों। मुझे हँसी आ गई। जाने कैसे उन्होंने जान लिया कि मैं हँस रहा हूँ। झटके से मेरी ओर देखा और आँखें मिलते ही हम दोनों मुस्कराये। बीयर के अन्दाज़ से गिलास के पानी को पीते हुए मैंने पूछा, "आप क्या इस शहर में नये आये हैं ?"

उन्होंने किताब जहाँ से उठाई थी वहीं रख दी और फिर ठोड़ी उठा-उठाकर शीशे में इस तरह देखने लगे मानो सोच रहे हों कि शेव करा ली जाये या नहीं। मेरी बात से बिना चौंके बोले, "यह ख़याल आपको कैसे हुआ ?"

"यों ही, मुझे ऐसा लगा।" इस प्रश्न का जवाब और क्या हो सकता था।

"आख़िर लगने की वजह ?" इस बार जब उन्होंने सख़्ती से पूछा तो मैंने चौंककर उनकी ओर देखा। आँखें मुझपर टिकी थीं। उनकी आँखों के डोरों में एक ऐसी अजब क़िस्म की चमक कौंधी कि मेरी नस-नस सिहर उठी। घबराकर मैंने सहायता के लिए इधर-उधर देखा।

"कोई ख़ास वजह तो नहीं।" मुश्किल से हकलाकर मैं बोला।

"आपको मुझमें ऐसी क्या ख़ास बात लगी कि मैं नया हूँ ?" इस बार उनकी आँखों का व्यास फैल गया था और आवाज़ में एक ऐसी कड़क थी कि अगर मैंने जवाब नहीं दिया तो वे उछलकर मेरा टेंटुआ पकड़ लेंगे। मैंने चुपचाप किताब उठाई और एक नई खाली हुई कुर्सी पर चला गया। जैसे कुछ हुआ ही नहीं हो, ऐसी तटस्थता से वे बड़े अर्थ भरे ढंग से मुस्कराते रहे — मानो कह रहे हों, 'हुँह, कैसे-कैसे बेवकूफ़ आ टकराते हैं।'

···हुगली के किनारे दौड़ती सरदारजी की बस से भागती रेलिंग के पार जहाजों को देखता हुआ मैं अपने-आप से बोला, "थे तो ये मेजर तेजपाल ही, लेकिन इन्होंने मुझे पहचाना क्यों नहीं ? इन सालों में मैं आख़िर कितना बदल गया होऊँगा ?" इस प्रश्न के साथ ही मन में ऐसी बेचैनी हुई कि वहीं मैंने उन्हें अपना नाम क्यों नहीं बता दिया। कम-से-कम मुझे अपना चेहरा तो शीशे में देख ही लेना चाहिए था। शीशे की खोज में इधर-उधर आँखें घुमाईं, और उतरते समय उस तस्वीर—जिसमें गुरु गोविन्दसिंह हाथ पर बाज बैठाये थे—के नीचे लगे शीशे में अपनी शक्ल पर निगाह पड़ी तो मैं ठिठक गया। नहीं, बदला तो नहीं हूँ ! मैंने बालों पर हाथ फेरा और मुस्कराया, फिर अपने पीछे एक और चेहरा देखकर याद आया कि मेरी यह हरक़त भी तो मेजर तेजपाल जैसी ही है।

बात मन में कोंचती रही। घर आया तो वीनू देखते ही बोली, "मैं जाने कब से बैठी राह देख रही हूँ। आप पुलोवर ज़रा पहनकर देख लें। पता चले, कितना घटाना-बढ़ाना है।" बिना मुझे साँस लेने का अवसर दिये उसने झट मेज़ के नीचे रखी प्लास्टिक की डोलची से पुलोवर निकालकर मुझे पहनाना शुरू कर दिया। बोली, "हाथ ऊपर कर···"

हैंड्स-अप किये मैं सोचता खड़ा रहा और वीनू सलाई के साथ ही कभी मेरी पीठ और कभी छाती पर पुलोवर नापते हुए, खींच-खींचकर मुग्ध आँखों से उसकी डिजाइन देखती रही। पूछा, "बड़ा खुश है ; कोई

मिल गया था क्या ? किस-किससे मिल आया ?"

मैंने एकदम उमंगकर कहा, "बीनू, आज कॉफ़ी-हाउस में मेजर तेज-पाल मिल गये थे।"

"हैं, मेजर तेजपाल ?" बीनू अपना पुलोवर भूल गई, "ये तो कहते थे कि वे राँची में हैं।"

"राँची ! राँची में क्यों ?"

"मुझे नहीं मालूम ?अरे, उसका तो दिमाग़ ख़राब हो गया था न !"

"दिमाग़ !" मुझे फिर कॉफ़ी-हाउस की बात याद हो आई। ऐसे में भी बीनू से चुहल किये बिना मुझसे नहीं रहा गया, "मिलिटरी वालों का भी दिमाग़ होता है क्या ? अच्छा, क्यों···कैसे हो गया ?"

बीनू ने मज़ाक पर ध्यान न देकर कमरे से बाहर बरामदे में देखते हुए कहा, "लोग कहते हैं भई, हमें तो ठीक-ठीक पता नहीं। मिसेज़ तेज-पाल की वजह से ही उनका दिमाग़ बड़ा डिस्टर्ब्ड रहता था।" फिर चौंककर उसने पूछा, "अच्छा, क्या कह रहे थे ? ठहरे कहाँ हैं ? मैं इनसे कहूँगी, वो हमसे मिलने नहीं आये तो क्या है, हम ही देख आयें। कैसे हो गये हैं।"

अब मैंने बताया कि उन्होंने तो मुझे पहचाना भी नहीं; लेकिन अब मैंने पूछा कि मिसेज़ तेजपाल ने ऐसा क्या कर डाला था कि उनका दिमाग़ ख़राब हो गया, तो बीनू उदास हो गयी। घुटने पर बुनाई को रखकर उसे एक जगह दबा-दबाकर कुछ सोचती रही, फिर बड़े बेमालूम ढंग से गहरी साँस लेकर ज़रा होंठ सिकोड़ती हुई, उपेक्षा से बोली, "अरे ऐसी ही थीं वो भी।"

"तू तो उनकी भक्त थी पहले, और अब कहती है कि ऐसी ही थीं !" मेरे आगे वह कंधों से कटे बालों वाला गोरा-गोरा चेहरा घूम गया। बीनू के नाराज़ होने की बात मैं भाँप गया, लगा तभी यह कतरा रही है। मन और भी बेचैन हो उठा।

जैसे मैंने उसकी कोई कमज़ोर नस पकड़ ली हो, कुछ इस तरह तड़प-कर वह बोली, "अब मुझे क्या पता था कि भीतर से वो कैसी हैं ? कुलटा कहीं की !"

अत्यन्त नये फ़ैशन के ड्राइंगरूम में नाईलोन की फ़लसई साड़ी पहने कर्नल की पत्नी बीनू के मुँह से यह ठेठ निम्न-मध्य-वर्गीय शब्द सुनकर मुझसे मुस्कराये बिना न रहा गया।

बैरे ने पूछा, "साहब, चाय यहीं लगेगा ?"

उसे टाला, "हाँ, यहीं ले आओ।" फिर बीनू से बोला, "तुम भी जब कोर्ट-मार्शल करती हो तो सीधी गोली ही मारती हो। बीच का कोई रास्ता ही नहीं छोड़तीं ? हमें तो उनमें कुछ कुलटापन दीखा नहीं।"

बीनू नाराज़ हो गई। ऊन के गोले के चारों ओर सलाई समेत पुलोवर लपेटकर थैले में ठूँसती बोली, "तुझे क्यों दीखता ? तुझसे घुल-घुलकर बातें जो करती थी, हुगली पर जाकर।"

"तुम औरतें बस, एक जैसी ही होती हो।" मैंने अंग्रेज़ी में कहा। 'महिलाएँ' शब्द कठिन हो जाता और औरतें बाजारू। "तुम्हारी राय क्या ठीक है ?"

"अच्छा, नहीं ठीक है, बस।" उसने सिर झटककर गाल फुला लिये।

यह बीनू की पुरानी आदत है। विरोध की कोई भी बात सुनकर इसी तरह कहकर सिर मोड़कर बैठ जाती है, कोने में देखती रहती है, देखती रहती है। तभी अचानक उसे कोई ऐसी बात याद आ जाती है कि उसे कहने के लिए झटककर घूम पड़ती है। उसे ध्यान ही नहीं रहता कि वह अभी-अभी गुस्सा थी। मैं प्रतीक्षा कर रहा था कि अभी घूमकर वह फिर मेजर तेजपाल की बात पूछेगी, यह बात अभी पूरी कहाँ हुई। तभी बरामदे में घण्टी बजी—घनन्-घनन्।

और मुझे सहसा ऐसा लगा जैसे अभी गोमेज़ के दरवाज़ा खोलते ही मिसेज़ तेजपाल खिलखिलाती हुई, अपने बाल झटकतीं इस तरह झपटती चली आयेंगी जैसे उन्हें किसी ने धकेल दिया हो। वहीं से कहती आयेंगी, 'आज तो मज़ा आ गया मिसेज़ धीर!' और फिर सारा फ़्लैट एक अजब चहचहाहट से भर उठेगा। वे झूम-झूमकर आज मिलनेवाले दिलफेंकों की हरक़तें बयान करेंगी।

लेकिन वह नीचे के फ़्लैट का बैरा था। "मेम सा'ब को कर्नल सा'ब,

नीचू में बुलाता। बोला है, छोटा सा'ब होगा तो उसकू बी लाएगा। सब लोग नीचू है।"

आज नीचे बिलियर्ड्स का प्रोग्राम था और रणधीर वहीं था।

मैंने बीनू से मना कर दिया, "आज बहुत थक गया हूँ, सफर की थकान है। तू जा।"

असल में मेरा दिमाग़ बुरी तरह बौखला उठा था। मुझे रह-रहकर मिसेज़ तेजपाल की याद आ रही थी। सचमुच, उन्हें मैं कैसे यों एकदम भूल गया? मैं चुपचाप चाय पीता रहा। पता नहीं क्या कहकर बीनू नीचे चली गई थी। विश्वास नहीं होता कि मैं कुछ साल बाहर रहा हूँ। आज भी मिसेज़ तेजपाल का चेहरा उभर-उभरकर सामने आ रहा है। उनके नाम के साथ ही मुझे याद आता है—लाल नम्दे के चौकोर टुकड़े पर बना 'गोलियों का फूल' और कलाई में चमड़े का फीता लपेटे अपनी कमर से ऊँची अलसेशियन कुतिया के पीछे कमान बनी खिंचती-सी भागती जाती मिसेज़ तेजपाल की गुनगुनाती मूर्ति···वह रह-रहकर अपने बालों को पीछे झटकना···बीनू की बात मानने को भी मन नहीं करता और दिल के भीतर यह भी मैं जानता हूँ कि कहीं उसकी बात में वज़न है···मुझे लगा जैसे वही फ़्लैट है, वही लोग हैं और वही दिन हैं·· इस कम्बख्त बीनू ने यह फ़्लैट भी तो उसी तरह का लिया है, सब कुछ उसी तरह का सजा रखा है।

यों तो सारे ब्लॉकों के फ़्लैटों की डिज़ाइनें एकजैसी हैं; लेकिन पहली बार जब मैं मेजर तेजपाल के फ़्लैट में गया था तो कितना फ़र्क लगा था कि दीवारें, बरामदा, कमरे, एक डिज़ाइन के होकर भी, सब कुछ वे ही नहीं हैं जो नीचे वाले हमारे फ़्लैट के।

···उनके यहाँ हमारा खाना था।

हमने घण्टी बजाई। मैं, बीनू और रणधीर—तीनों सीढ़ियों पर खड़े थे। इंतज़ार था कि दरवाज़े के धुँधले बूँदोंवाले काँच के पीछे छाया दिखाई दे और किवाड़ खुलें। कोई नहीं आया। बैरा व्यस्त होगा। वैसे भी यहाँ का यह क़ायदा है। नीचे दूर से देख लेने पर भी दो-तीन बार घण्टी बजानी पड़ सकती है। क्योंकि किवाड़ बैरा ही खोलता है। दूसरी घण्टी बजाई तो बैरे ने झपटते हुए किवाड़ खोले। मैं नवीं वार नेम-प्लेट को पढ़ रहा था। पूछा, "हैं?"

"हाँ सा'ब!" रणधीर के लिए उसने एड़ियाँ ठोककर सैल्यूट झाड़ा और अदब से एक ओर हट गया। हम लोग बरामदे में आ गये। ड्राइंगरूम में घुसते हुए जिस चीज़ पर मेरी निगाह सबसे पहले पड़ी थी, वह थी दो दरवाज़ों के बीच की जगह में ऊपर लगा हुआ फूल। दोनों दरवाजों के ठीक ऊपर बारहसिंघों के दो बड़े सिर लगे थे। बीच के फूल को देखते ही जैसे बिजली का धक्का लगा और मन एक अजीब दहशत से भर उठा। फिर भी मैं उसे कुछ क्षण देखता रहा। छह इंच से लेकर आधे इंच लम्बी बन्दूकों और पिस्तौलों की गोलियों को नम्दे के सुर्ख़ टुकड़े पर जमाकर यह डिज़ाइन बनाई गई थी, पीले-पीले पीतल के शरीर और सिलेटी जस्ते की चोंचें। गोलियों पर पॉलिश भी होती होगी, तभी तो चमक रही थीं ···गोलियों का फूल···एकदम कौंधा, कहीं कोई इनमें पलीता न लगा दे ···अंधेरे में आतिशबाज़ी के अनार की तरह फूल मेरे सामने फूटता हुआ नाचने लगा···फ़्लॉवर आफ़ बुलैट्स···

मेजर तेजपाल लपककर कमरे से निकल आये थे। वही लहीम-शहीम और कुछ-कुछ सफ़ेदी लिये जहाँगीरी क़लमें, टेलीफ़ोन के चोंगे जैसी मूँछें। खिलकर बोले, "हल्लो, मैं सोच ही रहा था कि बैरे को भेजूँ। रुद्रा नहीं आया अभी?"

"हमें देर तो नहीं हुई?" बीनू ने घड़ी देखी। यों हम लोग ठीक टाइम देखकर ही चले थे।

"नहीं, नहीं।" फिर बरामदे में पड़ी बेंत की कुर्सियों की ओर इशारा करके कहा, "यहाँ बैठेंगे या भीतर···? अच्छा चलिए भीतर ही बैठें···"

बीनू ने भीतर झाँकते हुए कहा, "जहाँ चाहें, मिसेज़ तेजपाल किधर गईं ?"

"जी, वो किचिन में हैं, अभी आती हैं।" पर्दा एक ओर हटाकर वे खड़े हो गये। मैंने ध्यान दिया, दोनों हथेलियों को मिलाकर हाथ जकड़े खड़े रहना उनकी आदत थी, मानो ठण्ड लग रही हो, या हथेलियों के बीच में दबाकर कुछ तोड़ रहे हों। मुझे ऐसा लगा जैसे यह आदत मैंने किसी और की भी देखी है। दिमाग़ टटोलता रहा, लेकिन वहाँ तो 'गोलियों का फूल' घूम रहा था।

भीतर क़दम रखते ही किसी चीज़ से मेरा पाँव टकराया। देखा तो चिहुँककर सकपका उठा। घड़े के बराबर के आकार का शेर का सिर, मुँह फाड़े, आँखें चमकाता रखा था, और उसकी गहरी कत्थई धारियों वाली सुनहरी खाल ग़लीचे पर बिछी थी—मानो हाथ-पाँव फैलाये लेटी हो। उसके चारों ओर लाल-गलीचे पर चाकलेटी सोफ़ासेट रखा था। कोने में मेज़ पर निकिल के चमचमाते फ़ोल्डिंग-फ्रेम में एक ओर कैडेट तेजपाल और दूसरी ओर डिग्री हाथ में लेकर गाउन ओढ़े मिसेज तेजपाल की फ़ोटो थी। तेजपाल की मूँछें ऐसी तनी थीं जैसे किसी ने नाक के नीचे सीधी पेंसिल रख दी हो। रेडियोग्राम हल्के-हल्के कोई साज़ बजा रहा था।

ड्राइंग-रूम में बैठे-बैठे बड़ी बेचैनी हो रही थी। यहाँ कुछ ऐसा तनाव था कि इच्छा होती थी, उठकर बाहर बरामदे में जाकर खुली साँस लूँ, लेकिन वहां वह 'गोलियों का फूल' था, जिसे देखने की व्यग्रता भी होती थी और देखकर डर भी लगता था। मेजर तेजपाल ने एक टाँग सीधी तानकर मानो बड़े परिश्रम से, सख़्त फ़ौजी पतलून की जेब से सिगरेट-केस निकाला और हमें बारी-बारी से ऑफ़र करते हुए शिष्टतापूर्वक बीनू से कहा, "विद् योर परमीशन !"

"जी हाँ, जी हाँ !" बीनू बोली। कन्धे और कुहनी पर साड़ी का पल्ला लेती वह उठ खड़ी हुई, "मैं अभी आ रही हूँ। ज़रा मिसेज तेजपाल की मदद करूँ।"

"नहीं जी, बैठिए। काम तो ख़त्म हो गया सब।" तेजपाल बोले।

उनके हाथों और अँगुलियों पर मोटे-मोटे बाल थे। कलाई में बंधी, चौड़े काले-काले डायल वाली घड़ी रह-रहकर रोशनी में झिलमिला उठती थी। अंकों की जगह उसमें सुनहरी लम्बी-लम्बी बूँदें रखी थीं और लाल रंग की साँप की जीभ जैसी सेण्टर-सैकिण्ड चारों ओर घूम रही थी। उसे देखकर भी ज़रा झटका-सा लगा जैसे कोई परिचित चीज़ याद आ गई हो।

लेकिन बीनू चली गई। रह-रहकर मन में सवाल उठता रहा, नीचे से हम जो गाने निरन्तर सुनते रहते हैं वे क्या सचमुच इसी फ़्लैट में रहने-वाला कोई गाता है ? कौन गा सकता है ऐसे में···? यह शेर, यह गोलियों का फूल···

"कैसा लग रहा है कलकत्ता आपको ?" तेजपाल ने एक ओर होंठ सिकोड़े और धुएं की धारी छोड़ी। मैंने देखा, उनका चेहरा सचमुच ऐसा है जिसे 'रौबीला चेहरा' कहते हैं।

"ठीक ही है जी। मुझे तो यहाँ अभी कोई ऐसा खास काम है नहीं। रिपोर्ट बनानी होती है, सो यहाँ बैठकर टाइप कर लो या वहाँ।"

"और शायरी ?" इस बार तेजपाल मुसकराए।

"वह भी कभी-कभी चल जाती है। फ़ुरसत की चीज है वह तो।" मैं उनके पूछने के ढ़ग पर मन-ही-मन हँसा, मानो पूछ रहे हों, वह जो कभी-कभी तुम्हारे सिर में दर्द हो जाता है उसका क्या हाल है ?

"अरे हाँ, मेजर तेजपाल, क्या हो गया था दोपहर को ? बड़ा शोर था !" रणधीर ने सहसा पूछा।

"ओ···वह ! कुछ नहीं यार···" इस बार उनकी आँखें चमक उठीं। वे सीधे बैठ गए। घुटनों पर कुहनियाँ रखकर बोले, "हमारे यहाँ फ़र्श-वर्श पोंछने के लिए जो नौकरानी आती है न, उन मेम-साहिबा का इश्क़ हो गया हमारे खानसामे से। साला अपने हिस्से का सारा खाना उसे खिला देता था। उनमें कुछ है, यह मार्क तो मैं बहुत दिनों से कर रहा था। वह साहब उसके जाने से पहले किसी न किसी बहाने से आगे निकल जाते और सड़क पर बाहर उसकी राह देखा करते। आते हुए मैंने एकाध बार देखा; लेकिन गाड़ी खड़ी करके रुकना ठीक नहीं समझा। बरामदे के

सामने कोने वाला जो कमरा है न, बाई द वे, मैंने आते हुए उधर जो सिर उठाया तो देखा आप उसे किस कर रहे हैं···"

"तो क्या हो गया ?" मैंने जरा दिलचस्पी से पूछा, "इन लोगों की जिन्दगी में भी तो कहीं रोमांस होना चाहिए न।" तभी दिल में जैसे कुछ खटक गया और ज़बान रुक गई। अभी-अभी जबकि मैं कुछ 'भयानक' और 'रहस्यमय' देख आया हूँ तो किस तरह ये परिहास की बातें कर पा रहा हूँ।

"अरे राजेन साहब, आप समझते नहीं हैं। फ़ील्ड पर तो हम खुद इस तरह की छूट देते हैं, लेकिन यह तो फ़ील्ड नहीं है। और फिर···" अफ़सोस से तेजपाल बोले, "दिस चैप···यह ख़ानसामा मेरे पास बड़ा पुराना है। बड़े-बड़े राजा-महाराजाओं के यहाँ नौकरी करके इसका बाप हमारे फ़ादर के पास आया, और वहाँ कुछ ऐसा जम गया कि कहीं आने-जाने का उसने नाम ही नहीं लिया। मुझे जब कमीशन मिला तो फ़ादर ने इसे मेरे साथ कर दिया। घर का आदमी था, इसलिए मेरी ज़रूरत समझता था। दस-बारह साल से मेरे यहाँ है यह···आखिर कुछ तो लिहाज़ करना चाहिए इसे···"

रणधीर कुछ बोलने को था कि मैं बीच में ही बोल उठा, "मेजर साहब, उसकी भी तो अपनी जरूरतें हैं, दिल है, जवानी है।"

"न्नो ! मैं ये सब बरदाश्त नहीं कर सकता।" सिर झटककर तेजपाल झिड़कने के ढंग पर बोले, "उसे जरूरत हो तो मुझ से आकर कहे। मैं कराता हूँ शादी। ये सब बदतमीजी मेरे यहाँ नहीं चलेगी। वह तो मैंने उसे कान पकड़कर ही निकाल दिया; आई सैड, गेट्टआउट ! वर्ना मैं तो उसे शूट कर देता···यह रोमांस करने की जगह नहीं, रहने की है।" फिर एकदम आवाज़ नीची करके मुसकराये, "देख लीजिए, कल-परसों आकर माफ़ी-वाफ़ी माँगेगा और फिर काम करने लगेगा। जायेगा कहाँ साला !"

"अरे यार, कभी-कभी तो इन बेचारों की ज़िन्दगी में भी कोई रस आ जाने दिया करो।" रणधीर टालता-सा बोला।

"तुम भी औरतों जैसी बातें करते हो धीर। ये भी कहती थीं कि क्या

बुरा किया ? मान लो वह इसी से शादी कर ले ? आई सैड, शटाप ! तुम समझते नहीं हो दोस्त, इन सस्ती पिक्चरों ने इनके दिमाग़ ख़राब कर दिये हैं।"

"ओ, तभी आज मिसेज़ तेजपाल किच्चिन में हैं।" रणधीर ने रेडियो-ग्राम पर रखी ऐश-ट्रे में सिगरेट ठूँसकर कहा।

"नहीं जी, अभी आई।" भीतर से आवाज़ आई—वही कुहकता-सा स्वर। तभी मुझे याद आ गया घड़ी के अंकों की सूरत उस बाहर वाले फूल से मिलती है। लेकिन सैकिण्ड की सुई इस तरह घूमती लगती थी जैसे कोई एक-एक गोली के मुँह से जलती मशाल छुआता चला जा रहा हो।

भीतर बीनू के बोलने का स्वर आ रहा था। कुहकता स्वर और गोलियों का फूल···मैंने मन-ही-मन दुहराया। वे लोग शायद मेज़ पर नौकर की मदद से प्लेटें लगा रही थीं।

"हाँ, मैं क्या कहती थी ?" सीधे आकर उन्होंने तेजपाल की ओर देखते हुए अपनी झुँझलाहट को मुसकराहट में छिपाकर कहा। फिर रणधीर से बोली, "मेजर धीर, इनकी बात सच मत मानिए। खुद ही तो निकाल दिया। मान लो, वह उससे शादी ही कर ले ?"

एक क्षण को लगा, तेजपाल सकपका उठे। शायद इस तरह उनके आ-पूछने की उन्हें आशा नहीं थी। सँभलकर बोले, "तो हमसे कहे !"

मुँह बिगाड़कर अँगुलियाँ नचाती-सी वे बोलीं, "हमसे कहे ! जी, वह आपसे कहे कि मुझे शादी करनी है ?"

"अच्छा, मारो गोली।" यह बात तेजपाल ने जिस ढंग से कही उससे लगा कि अगर हम न होते तो वे दहाड़कर कहते, "चुप हो जाओ।"

बात एकदम समाप्त हो गई। मुझे देखकर शिष्टता से हाथ जोड़कर वे बोलीं, "मैंने देर कर दी, माफ़ कीजिए।"

उनके आने पर हम लोग उठ खड़े हुए थे, "हमारी वजह से आपको बड़ी तकलीफ़···"

"खाना तो शायद हम लोग भी खाते ही हैं।" वे हँसकर बोलीं, और एक ओर अपने कटे बाल झटककर भरपूर मुझे देखती रहीं। वे निगाहें जैसे मुझसे सही नहीं जा रही थीं। मन बेचैन था और समझ में नहीं आ

रहा था कि क्या करूँ। उनकी बात पर हम सब खिलखिलाकर हँस पड़े।

"बैठिए न।" मिसेज तेजपाल बोलीं, "अभी कैप्टेन रुद्रा को आ लेने दें।"

"बड़ी देर कर दी, यह हमेशा देर से पहुँचता है, आई सैड, फ़ौज में भी जब तुम ऐसे ही तो टाइम की कीमत कहाँ सीखोगे।"

हम लोग बैठ गये। मैंने देखा मिसेज तेजपाल के चेहरे पर एक अजब तरह की चमक है। इस चमक का सम्बन्ध मैं हमेशा अभिनेत्रियों से जोड़ता रहा हूँ, क्योंकि बहुत अधिक मेकअप करने से उनकी खाल अस्वाभाविक रूप से चमकने लगती है। मुझे यह चमक कभी अच्छी नहीं लगी। लगता है जैसे खाल के ऊपर प्लास्टिक का पारदर्शी खोल चढ़ा दिया हो। वे शायद चौके से आई थीं, और वहाँ गर्मी थी। फिर भी बाल-बाल जिस सफ़ाई से बने थे और होंठों पर जैसी सावधानी से लिप्स्टिक का स्पर्श दिया गया था, उससे लगता नहीं था कि वे चौके से आ रही हैं। वे आसमानी शलवार और कुर्ते में थीं। पैरों में सफ़ेद कामदार हल्की जूतियाँ, और गले में सफ़ेद मलमल का दूधिया दुपट्टा।

तेजपाल ने मिसेज की ओर देखकर कहा, "तब तक एक रबर हो जाये?"

"नहीं।" वे सख़्ती से बोलीं, "वक्त हो, न हो, आपको अपनी ब्रिज की धुन। मेज पर खाना लगा है और ब्रिज लेकर बैठेंगे···"

ऐसे रोबीले आदमी का विरोध कर सकना भी सचमुच एक साहस का काम है। उनकी फुफकारती-सी निगाहों और फुंकारती-सी साँसों से मुझे हमेशा ऐसा लगता था जैसे अभी वे उठकर किसी को गोली मार देंगे। मैं सोच ही रहा था कि फिर घण्टी बजी, और बगल के कमरे से नौकर पीछे, दूसरी ओर का चक्कर लगता हुआ दौड़ा। इस बार कैप्टन रुद्रा और मिसेज रुद्रा थे। हम लोग फिर उठ खड़े हुए। देर से आने पर क्षमा का आदान-प्रदान हुआ।

"गुड्डी को नहीं लाईं आप?" ललककर मिसेज तेजपाल ने पूछा।

"वो सो गई थी जी।" मिसेज रुद्रा बोलीं। दो चोटियाँ और बंगलौरी सिल्क की धूप-छाहीं साड़ी। शरीर भरा था और दो ठोड़ियाँ बनती थीं।

चेहरे पर उदारतापूर्वक पाउडर लगाया गया था। तीनों महिलाएँ सोफे पर बैठ गईं।

"अरे, बड़ी जल्दी सुला दिया आपने।" मिसेज़ तेजपाल एकदम सुस्त पड़ गईं, "मुझे तो ऐसा लगा, जैसे वह अभी-अभी नीचे रो रही हो···"

डिनर-सूट में कपड़ों के प्रति अत्यधिक सजग (कांशस) कैप्टेन रुद्रा पतलून की क्रीज़ घुटनों से उठाकर सोफे के सिरे पर बैठ गये थे। टाई की गाँठ को गर्दन हिलाकर ठीक करते हुए बोले, "नहीं जी, सोई-वोई नहीं है। नीचे तक तो आई थी। शाम से ही ज़िद कर रही थी, हम आण्टी के यहाँ चलेंगे। गाना सुनेंगे, डान्स सीखेंगे।"

"तब फिर क्यों छोड़ आये?" भोलेपन से मुँह खुला रखकर वे बोलीं।

"हम तो लाये थे जी। साथ रूमाल में बाँधकर वह खुद अपने घुँघरू लाई थी। फिर नीचे पहली सीढ़ी पर ही रोने लगी।" मिसेज़ रुद्रा ने कहा, "हम नहीं जायेंगे···बहुत मचल गई तो फिर लौट के जाना पड़ा। इसीलिए ज़रा देर हो गई। बच्चों की ज़िद का कोई टाइम थोड़े ही होता है।"

"लौटकर क्यों जाना पड़ा? मैं ही छोड़कर आया। ये तो बोलीं, "ज़्यादा चढ़ने-उतरने से हमारी साड़ी में सलवटें पड़ जाती हैं। मैं इन्हें समझाता हूँ कि इन बंगालिनों से सीखो न, सपाट-सीधी सड़क पर चलते वक़्त भी साड़ी की पटली पकड़कर उठाये रहती हैं।" और वे झेंपती मिसेज़ को चिढ़ाने से खुद ही हँसने लगे। मैंने देखा, उनकी छोटी-छोटी घनी भौंहें बटरफ़्लाई मूँछों के ऊपर इस तरह थिरकती थीं जैसे वे अभी-अभी कोई गहरा मजाक करने वाले हों। उनकी चिकनी कनपटी की हड्डी इस तरह खाल के भीतर चलती थी जैसे वहाँ लहरें उठ रही हों। मुसकराकर बोले, "हमारी इनके साथ शादी थोड़े ही हुई! हमें तो इनके फ़ादर ने इनका नौकर बनाकर भेजा है कि बेटे, कमाओ और मालकिन की सेवा करो!"

वातावरण कुछ हल्का हुआ। सब लोग मिसेज़ रुद्रा की ओर देखकर हँस पड़े। वे लाल पड़ गई थीं। लगता था जैसे अपने पति के हँसमुख स्वभाव

और उनके प्रभाव पर उन्हें गर्व ज़रूर था; लेकिन शिकायत भी थी कि वे अक्सर बहुत हल्के और बेलगाम हो जाते हैं। शायद मेजर तेजपाल की उपस्थिति में यह हल्कापन उन्हें पसन्द नहीं आ रहा था। उनकी भौंहें खिच गईं। "करते होंगे सेवा···अपनी बेटी की करते होंगे, हमारा क्या है? हम नहीं रखते उसे दिन भर? और वह तो सच्ची, ऐसी शैतान है कि सारे दिन···एक तो जब देखो तब आण्टी की धुन···"

"देखिए जी।" रुद्रा ने मिसेज़ तेजपाल की ओर देखकर कहा, "यह बात निहायत ग़लत है। आपने हमारी लड़की को बहका लिया है। एक वह मेजर धीर का लड़का है, आते ही साहब बहादुर उसके गले में बाँह डालकर इधर-से-उधर घुमाते फिरेंगे। दुनिया भर का रोब छाँटेंगे। अभी से बाप के कदमों पर चल रहा है।" और वे मुड़कर बीनू से पूछने लगे कि किशोर अगली बार कब आ रहा है छुट्टियों में।

तरस खाकर ललकते-से स्वर में मिसेज़ तेजपाल ने कहा, "हाय, ले आतीं न। नीचे से ले गईं, आप भी मिसेज़ रुद्रा गजब करती हैं। मैं उसे बहलाकर ज़रा देर में चुप करा लेती।"

"आपके पास तो वह आ ही रही थी जी।" मिसेज़ रुद्रा ने अपनी पुत्री के प्रति उनके स्नेह से गद्‌गद् होकर कहा, "पर यहाँ आते डरती है जी।" उन्होंने एक बार मेज़र तेजपाल को देखा। फिर कुछ डरते-डरते बोलीं, "कहती थी, ऊपर छेल होगा।

"छेल क्या?" मैंने पूछा।

"शेर, भाई।" बीनू ने समझाया, "लेकिन किटी से बिलकुल नहीं डरती। उसके तो गले से लिपट जाती है।" किटी तेजपाल की अल-सेशियन कुतिया थी।

"ओह!" और फिर सब लोग ड्राइंग-रूम में हाथ-पाँव फैलाकर लेटे शेर को देखकर हँस पड़े। मैंने देखा मिसेज़ तेजपाल की सहमी-सहमी-सी निगाहें मेजर तेजपाल पर जा पड़ीं, जैसे प्रतिक्रिया भाँप रही हों। धीरे से बोलीं, "अच्छा, मैं ही जाऊँगी कल उसे मनाने।"

"उफ़, बड़ा खूँखार जानवर था यह भी।" मेजर तेजपाल ने गहरी साँस लेकर कहा। जाने क्यों उन्हें ऐसा लगा जैसे अनजाने ही सारा मज़ाक

उन पर आकर टिक गया है। एक बार तो वे हतप्रभ हो उठे। फिर बोले, "बड़ा तूफान मचा रखा था कम्बख़्त ने। आज इसकी भैंस को मार गया, कल उसकी गाय का पता नहीं है। फिर दिन-दहाड़े एक आदमी को उठा ले गया। मैं फ़र्लो पर था। हाँका किया गया···साले ने सात दिन परेशान किया। आई सैड, कुछ हो जाए इसे तो मारना ही है···" उन्होंने बात सँभाल ली थी।

मैंने देखा कि बात करते समय मेजर तेजपाल का शरीर ऐसा रहता था जैसे हर जोड़ के पेंच ढीले हो गए हों—यों फौजी स्वभाव के अनुसार रीढ़ की हड्डी तो तनी ही रहती थी, लेकिन इस बार उनमें जान आ गई। वे हाँके का सविस्तार वर्णन करते रहे। कैसी चालाकी से शेर बकरी को उठा ले गया था। मचान पर जब दाँव नहीं लग पाया तो मेजर तेजपाल नीचे उतर आए थे···मना करने पर भी घिसटने के निशानों का पीछा करते चले गये, फिर कैसे अचानक शेर ने नाले से उछलकर उन पर हमला किया। वे भी तैयार थे। आठ-दस गज के फ़ासले से ही गोली चलाई—एक के बाद एक, तीन गोलियाँ। एक हाँकेवाले को एक ही पंजे में खत्म करता हुआ शेर भागा। उन्होंने फिर दो गोलियाँ चलाईं। इसके बाद तेजपाल ने उठकर अपने मगर की खाल के जूते की टो से वे जगहें दिखाईं जहाँ गोलियाँ लगी थीं। वे भीतर डाइनिंग-रूम से एक फोटो उतार लाये, जिसमें सामने शेर लेटा था और कैप्टन तेजपाल उस पर राइफल टिकाए निहायत निश्चित शान से एक पाँव रखे खड़े थे। किस्सा ठीक वैसा ही था जैसा हर शेर के शिकार का होता है, लेकिन वह सब इस तरह सुन रहे थे जैसे पहली बार ऐसी अघटनीय घटना का आँखों देखा हाल सुन रहे हों। महिलाओं के चेहरे पर ऐसी तन्मयता और आतंक था मानो उनके सामने अभी-अभी शेर का शिकार हो रहा है। बीनू की तो आँखें निकली आ रही थीं और मिसेज़ रुद्रा के माथे पर भाँप-सी जम गई थी। बस, मिसेज़ तेजपाल तटस्थ भाव से अपनी कलाई की घड़ी की चाबी को व्यर्थ घुमाती रहीं। इसके बाद सब लोग उस शेर का सिर इस ख़ूबी और सफ़ाई से तैयार करने वाले की तारीफें करते रहे। आँखें, दाँत मूँछें—सभी कुछ असली शेर जैसा था। तेजपाल ने बताया कि कभी-कभी उसे

देखकर किटी कितनी ज़ोर से भूँकने लगती है। अपने एक मित्र के शिकार का किस्सा मुझे भी याद आ रहा था और इच्छा हो रही थी कि सुना दूँ। फिर सभी के चेहरों से ऐसा लगा जैसे हरेक के पास ऐसा ही एक-एक किस्सा कुलबुला रहा है···मुझे रह-रहकर लगता जैसे हर बेकार की बात के प्रति आवश्यकता से अधिक दिलचस्पी दिखाकर वे लोग अपना समय काट रहे हैं। ज़रा-ज़रा-सी बातों को ये लोग कितनी देर तक करते रह सकते हैं।

तभी बैरे ने खाना तैयार होने की सूचना दी। बात बीच में ही छूट गई।

"देखिए, खाना अच्छा न बना हो तो शिकायत न कीजिए।" मिसेज़ तेजपाल ने सजी हुई मेज़ के एक ओर खड़े होकर आतिथेय की औपचारिकता के साथ कहा, "आज तो उलटा-सीधा बना लिया है। फिर किसी दिन बाक़ायदा आपको खिलाया जायेगा।" उन्होंने तेजपाल की ओर बिना देखे कहा।

कुर्सियाँ खिसकीं, साड़ियाँ सरसराईं, कलफ़ लगे तह किये हुए नेपकिन फड़के और चम्मच, काँटे-छुरी बज उठे। 'आपको यह अच्छा नहीं लगा' 'यह थोड़ा और लीजिए, के विराम, अर्धविरामों के साथ-साथ महिलाओं ने अपने पास-पड़ोस, और खाना बनाने के बारे में बातें करना शुरू कर दिया और पुरुष लोग अपनी डिवीज़न का कोई किस्सा ले बैठे। किसी जे० सी० ओ० की बदतमीज़ियों का वर्णन करते हुए मेजर तेजपाल का स्वर कुछ ऊँचा उठ गया और नथूने फूल उठे। इसी गुस्से में एक बोटी को उन्होंने इतनी ज़ोर से चबा डाला कि उसकी हड्डियां कड़कड़ा उठीं। मिसेज़ तेजपाल रोशनदान की ओर देखने लगीं। हम सभी का ध्यान उस ओर जाये बिना नहीं रहा। अभी-अभी मिसेज़ तेजपाल ने जब कोई चीज़ काटी थी तो छुरी प्लेट से लगकर खट् से बज उठी थी। उस समय उनकी अँगुलियों को तेजपाल ने जिन आँखों से घूरा था वे अब भी मुझे याद थीं।

मैंने इधर-उधर सिर घुमाकर देखा, दीवारें पीली पुती थीं और चमड़े के खोल और पेटियों में बन्दूक-पिस्तौलें टंगी थीं। जब-जब मेरी

निगाह उधर गई, मुझे गोलियों के फूल का ध्यान हो आया। बैरा जल्दी-जल्दी रोटियाँ ला रहा था, लेकिन अकेला होने की वजह से पहले खुद ही सेंकता और फिर खुद ही लाता। सब्जियों के डोंगे लगातार इधर से उधर घूम रहे थे। कभी-कभी मिसेज तेजपाल का प्लेट पर झुका मोती जैसे दाँतों से रोटी कुतरता चेहरा मुझसे आँखें मिलते ही इस तरह मुसकरा उठता जैसे मुझे सान्त्वना दे रहा हो। वे रह-रहकर बाल झटकने के बहाने मुझे देखतीं। उनके कान में जड़ा आसमानी शेड का नग बड़ा खूबसूरत लगता था। वे महसूस कर रही थीं कि मैं अकेला पड़ गया हूँ। और जैसे इसी बेचैन अनुभूति से वे रह-रहकर मुझसे कुछ-न-कुछ लेने का आग्रह करतीं। उनकी इस मन:स्थिति को मैं समझता था और उनके देखते ही मुसकरा उठता, जैसे कहता, 'चलाइए-चलाइए, मैं ठीक हूँ।' लेकिन जब-जब ऐसा हुआ, मेरी निगाहें हर बार तेजपाल की ओर उठ गईं।

यों ऊपर से देखने में कहीं कुछ नहीं था और सब बड़ी स्वाभाविकता से चल रहा था। खाने की बड़ी तारीफें हुईं, किसी ने किसी डिश की तारीफ़ की, किसी ने किसी की। एक दूसरे को निमंत्रण दिए गए और बाहर ड्राइंग-रूम में बैठकर अंग्रेजी-अमेरिकन पत्रिकाओं के घिसे-पिटे मजाक दुहराए गए। सुनानेवाले के सम्मान की खातिर शेष लोगों को हँसना पड़ता था। बैरा कॉफी ले आया, तो एक ही मेज पर सारे प्याले तैयार करके मिसेज़ तेजपाल ने सबको एक-एक कप दिया। सिगरेटों और कॉफी के बीच मैं बैठा एक अलबम के पन्ने पलटता रहा। मुझे हर क्षण आशंका होती कि अभी किसी ओर से ब्रिज का प्रस्ताव उठेगा और मेरी रिपोर्ट कल भी तैयार न हो पायेगी। हुआ भी यही। मैं उठ खड़ा हुआ। सबकी गर्दनें मेरी ओर उठ गईं। 'कल रिपोर्ट तैयार करनी है' के आधार पर मैं माफी माँगकर चला आया। रुद्रा ने तो कहा भी, "अमाँ रिपोर्ट कहीं भागी जाती है। तैयार कर लेना।" बाकी लोगों ने केवल खड़े होकर विदा दी। बीनू और मिसेज तेजपाल सीढ़ी तक छोड़ने आईं।

"तू तो बहुत बोर हुआ न!" बीनू ने पूछा।

"हाँ सच, आप तो बिलकुल ही अकेले पड़ गए।" क्षमा याचना के स्वर में मिसेज तेजपाल बड़े आत्मीय आग्रह से बोलीं। "फिर किसी दिन

आइए न।" उन्होंने इस ढंग से भरपूर मुझे देखकर सिर झटका कि उनके कानों के दोनों आसमानी नग दिल के किसी कुहरिल अँधेरे के पार तारों की तरह टिमटिमाते रह गये। वे दरवाजे को एक हाथ से पकड़े खड़ी थीं। निगाह उनके सिर के ऊपर से पीछे दीवार पर टँगे बारहसिंघों के सिर और गोलियों के फूल पर चली गई तो जैसे मुँह का स्वाद खराब हो गया। मैं कोई बात पूछना चाहता था, वह एकदम इस तरह उड़ गई कि फिर याद ही नहीं आई।

मन-ही-मन मैंने निश्चय कर लिया कि इस फ्लैट में नहीं आना है। उनके आग्रह के सामने जैसे यह निश्चय एकदम घुल गया। मैंने आने का आश्वासन दिया। गोलियों के फूल जैसी महत्त्वपूर्ण चीज़ को मैं भूल कैसे गया था। सिर झुकाकर सीढ़ियाँ गिनता नीचे उतर रहा था कि मिसेज तेजपाल ने कहा, "हमारे लिए शेर आपने अभी तक नहीं लिखे न। इस बार जरूर लिख रखिए।" उनका स्वर सुनकर मुझे फिर याद आया कि मैं दरवाजे पर कहनेवाला था, "मिसेज़ तेजपाल, आप दिनभर गाती रहती हैं, लेकिन यहाँ आपने गाना ही नहीं सुनाया !" किसी और ने भी उनसे गाने के लिए नहीं कहा था।

अपने फ्लैट में आकर मैंने मुक्ति की गहरी साँस ली। जैसे कोई बहुत थकान का काम करके आया होऊँ, जिसने मेरे तन और मन को एक अस्वाभाविक तनाव की स्थिति में रखा हो। ड्राइंग-रूम में सोफ़े पर लेटे-लेटे पंखे को लगातार घूरते हुए मैं सुन्न-सा सोचता रहा। यह कमरा भी तो ऊपर के कमरे जैसा ही है, जैसे दो अलग दुनियाँ हों। ऊपर से कैप्टेन रुद्रा के कहकहों की आवाज़ आ रही थी, नीचे मेजर टर्नर के यहाँ पियानो की धुन के साथ-साथ कैप्टेन दिलजीत के फ्लैट में रेडियो, 'तेरी दुनियाँ में सभी कुछ है मगर प्यार नहीं।' गा रहा था···बाहर पर्दे की फाँक से सड़क की गैस बत्तियाँ पेड़ों के घूँघट से झाँकती दिखाई दे रही थीं। रह-

रहकर के जूं-जूं करती कारें और सामान लादे ट्रक घों-घों करते गुज़र जाते थे···मन में किसी ने कहा—'आज दाना बड़ा सुस्त था।' यह रणधीर की भावनाओं को मैं अपने शब्द दे रहा था। उसका 'दाना' शब्द जैसे ही याद आया तो खुद अपना मुसकराता चेहरा आँखों में नाच गया···

आज उन बातों को एक अरसा हो गया। बीनू शायद बिलियर्ड्स् का खेल देखने गई थी। मुझे ऐसा कुछ आभास था। चाय पीते समय याद आया, सचमुच उस फ्लैट में कुछ अजब बात ज़रूर थी—वहाँ के रहनेवालों में कुछ विलक्षण निश्चित रूप से था। आज की कही बीनू की बात की पृष्ठभूमि के रूप में देखता हूँ तो लगता है कि मिसेज़ और मेजर तेजपाल के बीच उन दिनों जो कुछ देखा था, वह सिर्फ़ तनाव ही नहीं, बल्कि रस्साकशी जैसी कोई चीज थी। बीनू से मैं अक्सर सुना करता था कि मिसेज़ तेजपाल बड़ी मस्त हैं, बड़ी लापरवाह हैं। हमेशा ज़रूरत-गैर-ज़रूरत हँसती रहती हैं और दिनभर गाती रहती हैं। लेकिन मैंने ध्यान दिया कि मेजर तेजपाल की उपस्थिति उन्हें जैसे ढके रही। रणधीर और तेजपाल का रैंक (ओहदा) एक था। मगर रणधीर के बारे में मुझे आज, जब वह ले० कर्नल है, हम उसे कर्नल ही कहते थे। कभी यह ख़याल तक नहीं हुआ कि यह क्या है, जबकि इस बात को मैं स्वीकार करता हूँ कि तेजपाल की हर बात बोल-बोलकर कहती थी कि वह मिनिस्टरी के एक ऊँचे अफसर हैं, एक आतंक, एक रोब या एक अदृश्य दबाव था जो सारे वातावरण पर छा जाता था और रणधीर तक से उनका व्यवहार ऐसा लगता था जैसे किसी ख़ास ऊँचाई से झुककर मिल रहे हैं। मुझे वह ऊँचाई सह्य नहीं थी, इसलिए मैंने कभी उन्हें दिल से पसन्द नहीं किया। यों एक शिष्टाचार तो चलता ही रहा। मिसेज़ तेजपाल पर भी इस आतंक का जादू है, यह मैंने लक्ष्य किया; लेकिन साथ ही ऐसा भी लगा जैसे उनकी इच्छा-शक्ति इस जादू के विरुद्ध विद्रोह करती है। उनकी

उपस्थिति में वे चाहे जितनी बुझी रहती हों; मगर जब भी तेजपाल कुछ कहते, वे कुछ ऐसी उपेक्षा से देखती रहतीं मानो कोई नितान्त अपरिचित निहायत ही बेकार बातें कर रहा हो···इस बात की पहली झलक मुझे उसी समय मिली जब मैंने पहली बार उस 'दाने' अर्थात् मिसेज़ तेजपाल को देखा था···

हम लोग अभी-अभी सिनेमा देखकर आये थे। हाथ-पाँव फैलाये थके-से बैठे ड्राइंग-रूम में इन्तज़ार कर रहे थे कि गोमेज़ जल्दी खाने को बुलाये। सोफ़े पर पाँव फैलाकर रणधीर अपनी त्रिकुटी को चुटकी में पकड़े आँख बन्द किए पड़ा था। अर्दली नीचे बैठा जल्दी-जल्दी उसके जूतों के फ़ीते खोल रहा था, बीनू कपड़े बदलने गई थी। सहसा घण्टी बजी और साथ ही तेजपाल और मिसेज तेजपाल धड़धड़ाते भीतर दाखिल हुए। किवाड़ शायद खुले रह गये थे। तेजपाल सफ़ेद पतलून, खुले कॉलर की कमीज़ और सफेद स्वेड के नागरा पहने थे। उन्होंने बैठते ही अपने आने की सफाई दी, "आज तो चैंप, स्कॉच कुछ जमा नहीं। एक तो तुम नहीं थे, दूसरे अइयर ने बड़ा बोर किया। आई सैड, जब लोगों में स्पोर्ट्स-मैन स्प्रिट नहीं है तो खेलते ही क्यों हैं ? डाक्टर ने तो बताया नहीं है कि स्कॉच ही खेलो। कौन-सा सिनेमा था ?" दोनों रैकेट उन्होंने लापरवाही से फ़र्श पर डाल दिये।

रणधीर पाँव समेटकर सीधा बैठ गया। आज या तो तेजपाल बहुत खुश थे या बहुत झुँझलाए हुए, क्योंकि उसने ही बताया कि इस प्रकार वे कभी नहीं आये, न सँभलने का अवसर दिये बिना। रणधीर ने मेरा परिचय कराया, "आप मेजर तेजपाल। हमारे ठीक ऊपर के फ्लैट में रहते हैं। और आप रिश्ते में बीनू के भाई अर्थात् सालारजंग।"

वे कुर्सी से उठ आये, 'आपसे मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुई' का विनियम हुआ।

मिसेज़ तेजपाल की ओर मेरा ध्यान विशेषरूप से इसलिए आकर्षित हुआ कि उनके बाल बॉब्ड थे और इन्हें वे हर दूसरे मिनट कानों पर हाथ लगाकर इस तरह सँवारती थीं मानो किसी छूटी लट को सँवार रही हों ! जब मैंने उन्हें नमस्कार किया तो नजर भरकर देख लेने की इच्छा को बड़ी मुश्किल से अंकुश लगाकर रोके रखा । हल्के क्रीम कलर की क्रेप की साड़ी, उसी रंग का शर्ट-ब्लाउज़ और कंधों पर हलका काम किया हुआ ढीला-ढाला पश्मीने का केप और कानों के ऊपर खुँसा हुआ नरगिस का एक छोटा-सा सफेद फूल । नाखूनों पर पॉलिश । दोनों हाथ मोटी-मोटी बँटी हुई रेशमी डोरियों के फुँदनों से खेल रहे थे और छोटा-सा पीले चमकदार मख़मल का पर्स घुटनों के बीच में पीले सैंडिलों तक लटका था । पहली निगाह में तो ऐसा लगा जैसे वे उन लोगों में हैं जो मन ही मन किसी गीत की धुन गुनगुनाते हुए अक्सर अपने आप में ही व्यस्त रहते हैं ।

अपनी तलवार-छाप मूँछों से बीनू की ओर दुष्टता से देखता हुआ रणधीर कह रहा था, "ज़ोरू का भाई है यार, सो सिनेमा वग़ैरा दिखाकर खुश रखना पड़ता है ! वर्ना कल ही सुनने को मिले कि हमारे भाई की ख़ातिर ही नहीं की···"

लाइटर जलाते-जलाते तेजपाल रुक गये । होंठों में लगी सिगरेट से ही बोले, "ज़ोरू हो या ज़ोरू का भाई, हम लोगों की किस्मत में तो दबना ही बदा है !" और वे सिगरेट अँगुलियों में लेकर खुलकर हँस पड़े ।

एक ज़ोर का कहकहा लगा । बीनू लाल हो गई । उन दोनों की आँखें मिलीं और एक क्षण को—मुझे आज भी साफ दिखाई देता है—मिसेज़ तेजपाल की आँखों में एक अजब बहशियाना (वाइल्ड) चमक भभकी । लगा जैसे उसे तेजपाल सह नहीं पाये और झट आँखें झुकाकर व्यस्त भाव से सिगरेट जलाने के बाद लाइटर को इस तरह हिलाकर बुझाने लगे जैसे वह दियासलाई हो । मिसेज़ तेजपाल की वह निगाह घूमती हुई मुझ पर आई तो मैं अव्यवस्थित-सा हो उठा । उसी दिन रणधीर ने ऐसी बात कही जिसकी उस जैसे व्यक्ति से कतई उम्मीद नहीं थी, और यह उसकी ऐतिहासिक बात कहकर याद की गई । उसे याद करके आज भी हम लोग खूब हँसते हैं । बोला, "और इन लोगों के लिए अगर साकार

खुदा कहीं है तो वह इनके भाई के रूप में है।" फिर मेरी ओर देखा, "आप डी० जी० हैं।"

सभी की निगाहें उधर उठ गईं। डी० जी० क्या? रणधीर इत्मीनान से कश खींचकर बोला, "यानी डिप्टी-गॉड। एच० जी० अर्थात् हेड-गॉड, बड़े गम्भीर हैं वे, कहीं आते-जाते ही नहीं। अपने घर ही जमे रहते हैं।" इसके बाद जो कहकहे लगे कि पंद्रह-बीस मिनट तक रुकने का नाम ही नहीं लिया। रणधीर ने और जोड़ा, "बस, बीनू जी के लिए इन गॉडों का एक-एक वाक्य आयते-हदीस से कम महत्त्वपूर्ण नहीं है।"

'डी० जी०' कहकर सभी मेरी ओर देखते और हँसी का फ़ौवारा बेहताशा छूट पड़ता। उन्मुक्त पहाड़ी झरने की तरह मिसेज़ तेजपाल खिलखिलाये जा रही थीं। अब उनके पेट में शायद दर्द होने लगा था, वे एक हाथ पेट पर रखकर बुरी तरह हांफ़ रही थीं। और उस दिन के बाद अक्सर मज़ाक में मुझे लोग डी० जी० कहने लगे।

लम्बी-लम्बी बरौनियाँ, सुती हुई नुकीली नाक और चाकू से तराशे हुए से पतले-पतले कसे होंठ और उभरे हुए गाल—जिन्होंने उनके चेहरे को ऐसी अभिव्यंजना दे दी थी मानो वे मुस्करा रही हों, माथे पर छोटी-सी बिन्दी और कटे हुए बाल। इस मज़ाक से बीनू को लगा कि मैं कहीं बुरा न मान जाऊँ, इसलिए हँसते हुए भी उसने आँखें तरेरकर रणधीर की ओर देखा। हँसी रुक जाने के बाद जैसी एक स्थिर जड़ता आ जाती है, वैसी ही इस समय छा गई। मिसेज़ तेजपाल ने एक पाँव दूसरे घुटने पर रख लिया था। इस पाँव के घुटने पर हाथ के पंजों को आपस में फैलाये कुहनियों को गोद में रखे वे धीरे-धीरे चप्पल में अँगूठों को उठा-गिरा रही थीं। हाथों को इस तरह रखने में कलाइयाँ सामने आ गई थीं। उन्होंने घड़ी पर जब-जब भी बड़े बेमालूम तरीके से निगाह डाली, मुझसे छिपा नहीं रहा। मैं उनकी पतली-पतली सुन्दर अँगुलियों, रंगे हुए नाखूनों और अंगूठी पर निगाह जमाये रहा।

"हमारे डी० जी० साहब कभी शेर कहा करते थे।" रणधीर बोला। फिर मुझसे मुड़कर सहसा पूछा, "हाँ भई, तुम्हारी उस शेर और शायरी का क्या हुआ?"

"कहाँ शेर और शायरी ! स्टुडेण्ट-लाईफ की चीजें थीं, अब खत्म हो गयीं ।" मैंने टालने के ढंग से कहा, "अब तो रिपोर्टें टाइप करते हैं कम्पनी की ।"

"लो, सुन लो ।" रणधीर बीनू को चिढ़ाता-सा बोला, "मैं तो खुद ही कहता था कि उसने लिखना-लिखाना जाने कब का बन्द कर दिया, लेकिन नहीं साहब, दुनिया की कोई ख़सूसियत क्यों हो जो हमारे डी० जी० में न हो । दिन-रात बस यही, यह गज़ल हमारे भाई ने लिखी थी, फ़लाने सिनेमा में है, फ़ॉल ने इसे गाया है ।"

इससे पहले कि बीनू मेरे नाराज़ हो जाने के डर से चिन-चिनाकर कोई बात कहे, मिसेज़ तेजपाल बड़ी ललककर बोल उठीं, "आपके पास कुछ अच्छे शेर हों तो हमें दीजिए ।"

"क्यों, सिनेमा के गीतों का स्टॉक ख़त्म ?" तेजपाल ने मुँह खोलकर एक ख़ास अन्दाज़ से धुआँ निकालते हुए कहा । उनकी निगाहें व्यंग्य से हँस रही थीं । कुर्सी के हत्थे पर रखे हाथ में सिगरेट थी और उस पर आँखें टिकाए वे उसे तर्जनी और अँगूठे के बीच में घुमा रहे थे । फिर खुद हँसकर बोले, "उफ़, इनके पास सिनेमा के गीतों का बेइन्तिहा जखीरा है । कौन-सा वक़्त है जब ये गीत न गाती हों ? मैं तो गीतों से परेशान हूँ ।"

"क्या है मेजर तेजपाल, आप हमेशा बेचारी के गीतों को ही टोकते रहते हैं ।" मेरे प्रति बीनू की जो सहानुभूति अप्रकट रह गई थी वह मानो मिसेज़ तेजपाल के लिए उफन पड़ी । "आप ही देखिए, यहाँ की मनहूसी में यही तो एक ले-देकर ऐसी हैं जो सबको खुश रखती हैं, वर्ना यहाँ तो सभी अपने-अपने दबों में बन्द रहते हैं । पहले जरूर जरा ऑड (अज़ब) लगा था, लेकिन अब तो ऊपर से आवाज सुनाई दे तो बड़ी बेचैनी रहती है ।"

तेजपाल जाने क्यों उठ खड़े हुए और एक तस्वीर के बिलकुल नीचे खड़े होकर वे उसे देखते हुए बोले, "आप ही तो शायद बता रही थीं कि नीचे वालों ने इनका नाम रेडियोग्राम रख रखा है । ऑटोचेन्जर ।"

इस बार मिसेज़ तेजपाल पर हँसने का नम्बर था । लेकिन उनका

चेहरा सहसा तमतमा आया और भीतर की घुटन जैसे आँसुओं के रूप में उमड़ पड़ने को मचलने लगी। लगा यह उन लोगों के बीच का काफी नाजुक बिन्दु है। वे जल्दी-जल्दी पलक झपकाती हुई, निचले होंठ को दाँतों से दबाए एरियल के जालीदार फ़ीते को देखती रहीं।

"अच्छा डार्लिंग, इन्हें कोई एक अच्छी-सी चीज़ सुना दो तो चलें।" जैसे इस सारी बात को मजाक में लेते, परिस्थिति सँभालते हुए तेजपाल ने एड़ी पर घूमकर प्यार से कहा।

हम सबने आग्रह कहा, "हाँ, मिसेज़ तेजपाल।"

कॉफ़ी आ गई थी। बीनू ने एक बार उनका चेहरा देखा और चुपचाप प्यालों में कॉफ़ी तैयार करती रही।

"नहीं जी, मेरी तबियत अच्छी नहीं है।" वे घुटे गले और कातर भाव से बोलीं। मन से उनकी आँखें नम हो आई थीं और सामने की ओर निकले पाँव का छोटा-सा खूबसूरत अँगूठा जल्दी-जल्दी उठ-गिर रहा था।

मुझे लगा एकदम परिस्थिति बड़ी विकट हो गई है। उनका कहना क्यों नहीं माना जा रहा, इस भाव से तेजपाल के चेहरे पर सख़्ती आ रही थी और मिसेज़ तेजपाल को देखकर लगता था जैसे किसी ने एक बार भी अगर अनुरोध कर दिया तो वे रो पड़ेंगी। बीनू ने सबसे पहले प्याला उन्हीं की ओर बढ़ाकर कहा, "लीजिए, पहले आप कॉफ़ी पीजिए।" खड़े-खड़े तेजपाल पीछे से उनके सिर की माँग को बड़ी अजब निगाहों से घूर रहे थे···बीनू ने उन्हें प्याला ऑफ़र किया तो हठात् चौंक पड़े, 'थैंक्स' कहकर वे आराम की मुद्रा में खड़े-खड़े ही कॉफ़ी पीते रहे।

सहसा बड़े नाटकीय अन्दाज़ से कप को साइड-टेबिल पर रखकर रणधीर बोला, "कम-से-कम डिप्टी गॉड का तो अनुरोध रख लेतीं।"

हम सब लोग फिर बड़े ज़ोर से हँसे। "अच्छा छोड़िए, फिर कभी सही।" कहकर बात टाल दी गई। और फिर सब लोग अपने आरामिया बैरा गोमेज़ की बात करते रहे। वह हिन्दी नहीं जानता था। एक बार जब घड़ी बन्द हो गई तो उसे बीनू के पास लाकर बोला, "मेम साहब, यह घड़ी तो मर गिया।" चाबी-वाबी दूर, बीनू बुरी तरह हँसती रही। वाता-

वरण का तनाव हटाने के लिए बीनू उसी की बातें बता-बताकर हँसती रही। तेजपाल ने भी हँसी में योग दिया। वे सब बैठ गये थे।

फिर एक घूँट में सारा कप ख़त्म करके मेजर तेजपाल उठ खड़े हुए, "अच्छा मिसेज़ धीर, अब हम चलेंगे। आप भी खाना-वाना खाइए। घूम-फिरकर आये हैं।" उन्होंने अपना विशाल पंजा मेरी ओर बढ़ाकर कहा, "आप तो अभी यहीं हैं न ? फिर मुलाकात होगी। एक ही तो सीढ़ी है। कभी ऊपर आइए न।" उनकी उँगलियों के पौरों के ऊपर भी बालों के गुच्छे थे।

उनके इस प्रकार उठ खड़े होने से सभी चौंक पड़े। मिसेज़ तेजपाल ने अभी एक घूंट से ज्यादा नहीं लिया था। उन्होंने एक बार उठते तेजपाल और एक बार प्याले को देखा। मैं उस समय तेजपाल को जबाव दे रहा था, "आऊँगा ज़रूर, लेकिन आपके बराबर ऊँचा उठते डर लगता है।"

"मान गए भाई, आप डी० जी० शब्दों के खिलाड़ी हैं। ज़रूर शायरी कर लेते होंगे।" तेजपाल खुश हो गए। पता नहीं क्यों उनका चेहरा देखकर मुझे अलैक्जैण्डर ड्यूमा का चेहरा याद आ गया। उनकी तुलना के लिए फिर मिसेज तेजपाल की ओर देखा और जाने क्यों मुझे ऐसा लगा जैसे एक बार उनके मन में यह आया हो कि तेजपाल को खड़ा रहने दें और खूब आराम से कप खाली करके ही उठें। उनकी भौंहें खिंच गई थीं, लेकिन बड़ी मुश्किल से कप के हैंडिल से उलझी अँगुली निकाल-कर वे उठ खड़ी हुईं, सख्ती से गर्दन को झटका देकर। उन्होंने बालों को एक झोंका दिया और दोनों हाथ उठाकर कानों के ऊपर से उन्हें पीछे करने लगीं। उनकी खुली कमर और सुडौल शरीर ने सभी की निगाहें खींची। इसे उन्होंने भी भाँप लिया और यह प्रशंसा शायद उनके आहत अहं को थोड़ा सहला सकी…

कमरे से बाहर निकलते समय तक उनके चेहरे की सारी दीनता और निरीहता के पार कोई उद्धत क़िस्म की चीज उभरती चली आ रही थी; शायद लापरवाही, शायद मस्ती…शायद चुनौती। उन्होंने कमर पर दोनों हाथ इस तरह रख लिए कि कुहनियाँ पीछे की ओर निकल आईं और उन पर केप छाते की तरह तन गया। ऐसा लगा जैसे उन्होंने जान-बूझकर

अपने शरीर को ऐसा लचीला, गदरीला और त्वचा को ऐसा स्निग्ध-पारदर्शी बना लिया है कि ख़ामख़्वाह उसे छूकर देखने की इच्छा मन में जागती थी···शायद तेजपाल के उस हिस्से को चिढ़ाने के लिए उन्होंने सीधे मेरी ओर देखते हुए इस बार साधिकार कहा, "मिसेज़ धीर, आप लेकर आइए न !" और मुझे लगा, उनकी निगाहों का जादू नस-नस में तैरता चला गया।

"आपके कैम्प जाने का क्या हुआ मेजर तेजपाल ?" बाहर की ओर चलते हुए रणधीर ने पूछा।

तेजपाल ने ठोड़ी सहलाते हुए कहा, "इसी परेशानी में तो हूँ यार ! अगले महीने ही शायद तीन महीने को जाना पड़े।"

"जगह का पता चल गया ?"

"अभी कोच्छ पता नहीं।" तेजपाल दोनों कन्धे 'क्या पता' के सिनेमाई ढंग से झटककर होंठ सिकोड़ते बोले, "पाँच-छह दिनों में तो एन० सी० सी० के लड़कों को लेकर जाना है, यहाँ कहीं पास के गाँव में सोशल सर्विस के लिए। यह साली और मुसीबत लगी है जान को। फावड़े लेकर सड़कें बनाओ। शायद एक हफ्ते का कैम्प रहे।"

"हमारा अभी कुछ पता ही नहीं···" पतलून की जेब में हाथ डालकर रणधीर चिन्तित हो आया। "शायद आप ही के साथ पड़े।"

"आइये, ज़रूर आइये।" कहकर बड़ी अपनत्वभरी मुस्कान के साथ मिसेज़ तेजपाल ने अपनी सफेद हथेली उठाकर 'बाई' के ढंग पर नमस्कार किया। तेजपाल के हाथ में रैकेट थे। हम लोग उन्हें सीढ़ियों पर चढ़ता देखते रहे, स्लिम शरीर, भरी देह, सीढ़ियों पर उठते कदम, लहराते केप के फूल और ऊपर झूमते बाल···सीढ़ियों के मोड़ पर एक बार फिर बाई-बाई हुआ।

"सरकार अब चलिये।" बीनू ने याद दिलाया तो रणधीर झेंपकर मुस्कराया और बीनू के कन्धे पर हाथ रखकर लौट पड़ा, "मेजर तेजपाल की फैमिली बड़ी ऊँची है। देहरादून के प्रिंस ऑफ वेल्स कॉलेज में देखे थे मैंने इसके ठाठ। बाप शायद एच० एच० का कज़िन है। खुद छोटा-मोटा राजा है। हज़ारों एकड़ की जमींदारी है। देखा नहीं, हर बात में एक

अजब शान है—चेहरे-मोहरे सभी से राजसी रौब टपकता है।" फिर मानो मेरी आदतों को लक्ष्य करके कहा, "कभी आपको ढीला-ढाला नहीं दीखेगा। बड़ा स्मार्ट (चुस्त) चैप है।"

मैंने लापरवाही से कहा, "यार, हमें तो तुम्हारी मिसेज़ तेजपाल बड़ी अच्छी लगीं।"

रणधीर का हाथ धीरे से हटाकर बीनू ने रेडियो ऑन कर दिया था और उसके ऊपर झुकी, बिल्कुल उससे मुँह सटाये स्टेशन मिला रही थी। एकदम खिलकर हमारी ओर देखती बोलीं, "अच्छी हैं न! सचमुच कितनी स्वीट हैं···दिल की बड़ी अच्छी हैं बिचारी। कोई भी बात बतानी-कहनी होगी, खुद बीस बार चली आयेंगी। और ऑफ़ीसर्स की बीबियों की तरह घमण्ड नहीं है कि वह तो हमारे यहाँ एक ही बार आई हैं, हम दूसरी बार कैसे जाएँ। आलस्य तो छू नहीं गया। उनका बस चले तो दिन भर गाती हुई किटी को सीढ़ियों पर ही चढ़ाती-उतारती रहें···" सहसा खट् से स्विच बन्द करके कुछ सुनती हुई वह बोली, "लो, ऊपर पहुँचते ही गाने लगीं। दिन भर गाती हैं···दिन भर। बरामदे में स्वेटर बुनेंगी तो गाएँगी, किचिन में होंगी तो गायेंगी।"

"वह संगीत से भरी हुई हैं।" रणधीर ने कहा।

सचमुच मैं आश्चर्य में स्तब्ध रह गया। इतनी स्नायविक घुटन के वातावरण के बाद ही सहसा कोई यों गा भी सकता है, यह मेरी कल्पना में भी नहीं था···पहले तो मुझे ऊपर बजते रेडियो का भ्रम हुआ, लेकिन स्वर के साथ न कोई साज़-संगीत था न रेडियो की खरखराहट···आवाज़ बस एक मधुर गुनगुनाहट-सी थी।

"लेकिन इन लोगों में···"

"है अपनी कोई पर्सनल चीज़।" रणधीर टाल गया, "दूसरों के व्यक्तिगत मामलों से हमें क्या मतलब? बट यू सी हर···क्या ब्यूटी है, क्या शरीर है। बिल्कुल जैसे मक्खन का बनाकर खड़ा कर दिया हो। एकदम निन्नानवे नम्बर का दाना है।" वह पुलककर बोला।

"दाना क्या?" मैंने जिज्ञासा से पूछा।

बीनू नाराज हो गई। भौंहें तरेरकर बोली, "शर्म नहीं आती दूसरों

की बीवियों की बातें करते ? कोई आपकी बीवी को लेकर यों उल्टी-सीधी बातें करे तो ?"

रणधीर ने टाई खोलकर बीनू के कन्धे पर रख दी और लापरवाही से बोला, "करे तो करे। हमारी बीवी क्या किसी से कम दाना है !"

बीनू लाल हो उठी, "हिश्ट।" रणधीर की पीठ पर प्यार से टाई फटककर बोली, "इसका तो ध्यान करो।"

"यही कौन हमारा खयाल कर रहा था ? देखा नहीं, कैसा आँखें फाड़े दाने को खाये जा रहा था।" रणधीर अपनी लड़कपन की मस्ती पर उतर आया।

मेरे कान सन्ना उठे। पूछा, "दाना क्या ?"

झेंपकर जैसे बड़ी मुश्किल से बीनू ने बताया, "अरे भाई, हर खूबसूरत लड़की को ये लोग दाना कहते हैं। मतलब आँखों का भोजन। बड़े खराब हैं ये। इस बार शरद् अवकाश में किशोर आया था सो उसे भी सिखा दिया। सम्म या टेबिल्स याद करते-करते अचानक बोल उठता था—"मम्मी, मम्मी ! पापा का दाना जा रहा है'। इसे उतरते-चढ़ते या किसी भी लड़की को आते-जाते देखता तो कहता—पापा का दाना जा रहा है। बोलो, वहाँ वापस स्कूल में जाकर क्या नाम रखायेगा ? क्या कहेंगी सिस्टर्स भी कि अच्छे मैनर्स सिखाये हैं तेरे पेरेण्ट्स ने।"

दाना शब्द पर मुझे हँसी आये बिना न रही। बात चूँकि उसके बेटे पर आ गई थी इसलिए बीनू एकदम भूल गई कि किस चीज के बारे में बता रही थी। उसने अपने बेटे के मैनर्स और आदतों पर बोलना शुरू कर दिया था। इसलिए मैं बीच में बोला, "है तो सचमुच दाना ही ! बेशक निन्नानवे नम्बर का ! उसे देखते तो तुझे पच्चीस भी मुश्किल से मिलेंगे।"

"ए, माइण्ड इट," बनावटी क्रोध से रणधीर बोला, "यों हमारे शब्दों को मत खराब करो। गुड सैकिण्ड क्लास से कम नम्बर की चीज़ दाना नहीं कहलाती। भूसा हो जाती है।"

"सॉरी !" हमने फिर एक साथ परिहास से बीनू को देखा। ऊपर से गुनगुनाहट अब भी आ रही थी। मैं बोला, "यों साड़ी के साथ बॉब्ड

हेयर बहुत देखे हैं लेकिन किसी पर इतने अच्छे भी खिल सकते हैं, इससे पहले इसका अन्दाज़ा नहीं था!" सचमुच मुझे अब याद आया कि कटे बाल, लिप्स्टिक-पाउडर और पेट दिखाता ब्लाउज़ यह सब मुझे बड़ी ओछी मनोवृत्ति की चीजें लगती रही हैं। फिर भी मुझे उनसे घृणा नहीं हो पाई।

"च्च्···अए हए।" बीनू मेरा मज़ाक बनाती बोली, "बहुत भा गई क्या? कहो सन्देशा पहुँचवा दें? लेकिन याद रखना, मेजर तेजपाल गोली मार देंगे, मुझे तो देखते ही डर लगता है। राक्षस जैसी तो आँखें हैं।" आँखें बन्द करके बीनू ने भय की एक फुरहरी ली। फिर करुणा से बोली, "बाल इसके अब नहीं, दो महीने पहले देखते। रेशम जैसे बाल ऐसे घने और लम्बे कि पिंडलियों तक लहराया करते थे। शोर हो गया था सारी जुबली-लाइंस में। इसी डर के मारे बेचारी जूड़ा बाँधती थी। राह चलते रुक जाते थे। सिर के बराबर का जूड़ा होता था। कम्बख़्त चुपचाप गई और कटा आई। लेकिन जिन्दगी-भर की आदत अभी गई थोड़े ही है। देखा नहीं तूने, हाथ बार-बार बाल सँवारने को उठ ही जाता है।"

"क्यों, कटवा क्यों आई?" मैंने उत्सुकता से पूछा।

"अरे, ऐसी कोई बात भी नहीं थी। हमारे सामने ही की तो बात थी। यों ही सब लोग बैठे थे। ये गा रही थीं! गला तो अच्छा है ही, लोगों ने जी खोलकर तारीफ़ की। तेजपाल बोले, "इसका गाना सुनते-सुनते तो मैं आजिज़ आ गया हूँ, लेकिन मुझे इसके बाल बड़े खूबसूरत लगते हैं। इन्हीं पर मरता हूँ। उस वक्त तो कुछ नहीं बोली। दूसरे दिन ही जाकर सारे बाल कटवा आई और खुद उनकी याद करके रोती रही। है बड़ी मनकी।"

मैं जैसे धक् से रह गया···गुनगुनाहट अब भी सुनाई दे रही थी। आज जब सोचता हूँ तो फिर ध्यान आता है गोलियों का फूल और कुहकता स्वर। उस क्षण पहली बार मेरी इच्छा हुई कि घुँघराले बालों के ज्योतिर्मण्डल से घिरे उस मुख-मण्डल को पास से देखूँ। दोनों कनपटियों को हथेलियों में दबाकर देखूँ···देखूँ उन आँखों में कौन-सी गहराइयों की तरल कालिमा मचल रही है···

बरामदे में बेंत की कुर्सियों से बचकर इस सिरे से उस सिरे तक टहलते हुए बाहर देखा; हवा सील गई थी और हल्की-हल्की बूंदें गिर रही थीं। आकाश गुम था। यहाँ-वहाँ लगे बल्बों की रोशनियों में गिरती बूंदें साफ दिखाई दे रही थीं। लॉन सोये पड़े थे और बच्चों के खेलने-फिसलने के लिए बने हुए लोहे के भूले जन्तर-मन्तर से दिखाई देते थे। आइसक्रीम और बिस्कुट के कागज़ इधर-उधर बिखरे थे। लॉन के किनारों पर क्यारियों में लगे सुर्ख और पीले डलिया के फूल धुँधले-धुँधले दीखते थे। दूर किले के मैदान की ढालू सड़क से आती किसी मोटर की हैड-लाइटों की हल्की परछाईं आँखों पर कौंध जातीं और बरामदा हल्की रोशनी से भासमान हो उठता। सामने के ब्लॉक में हमारे फ़्लैट के साथ जो फ़्लैट पड़ता था, उसके पीछे की ओर वाला बरामदा उधर ही था। भीतर कमरे की हल्की-सी रोशनी में बनियान और खाकी नेकर पहने एक अर्दली दौड़-दौड़कर मसहरी लगा रहा था। सामने ही वह कोना दिखाई दे रहा था, जिसमें बैठकर मैं अक्सर टाइप किया करता था और ऊपर वाले बरामदे में कभी-कभी किटी इतने जोर से भौंकती थी कि सारा ब्लॉक गूँज उठता था। गाने का स्वर और किटी का भौंकना, कितनी विरोधी चीज़ें थीं, लेकिन लगता है जैसे इनमें कहीं गहरा साम्य है। हाँ, टाइप करते हुए, बरामदे में ही तो शायद पहली बार मैंने मिसेज़ तेजपाल के एक-दूसरे रूप को निकटता से देखा था···

मेज़ पर चारों ओर कागज़ बिखरे थे और मैं टाइप कर रहा था। फल-वाला आया था सो किवाड़ खुले ही थे···तभी डुबकी लगाने वाले हवाई जहाज की तरह गीत की गुनगुनाहट ऊपर से उतरती चली आई और भड़ से किवाड़ खुल गये···

"ओ सॉरी, मैंने सोचा मिसेज़ धीर बैठी-बैठी बिन रही होंगी, किवाड़ खुले होंगे तो अचानक जाकर उन्हें चौंका दूँगी।" दोनों हाथों से किवाड़

पकड़े वे खड़ी रहीं। आँखों पर काला चश्मा, हल्की गुलाबी क्रेप की साड़ी, वैसा ही ब्लाउज़, नाखूनों पर हल्के गुलाबी शेड की नेलपालिश, हाथ में बेंत की चपटी डोल्ची, जिसके दोनों ओर प्लास्टिक के फूलकढ़े पर्दे लगे थे। कन्धे पर सुनहरी काम का बिल्कुल सफ़ेद पर्स। मैं सचमुच चौंक पड़ा। हड़बड़ाकर उठा, "आइए, आइए।"

वे दरवाज़े को हल्का-सा भेड़कर उसी निश्चिन्त लापरवाही से एक-एक कदम पर ज़ोर देती बड़ी भीनी-भीनी खुशबू के झोंके के साथ भीतर चली आईं।

"बीनू बाथरूम में है। अभी आती है। बैठिए आप तब तक।" मैं अपने टाइप किये पृष्ठों पर निगाह डालता बोला। रणधीर का शब्द दिमाग़ में टकराया, 'निन्नानवे नम्बर का दाना है।' जब मुसकराहट किसी तरह नहीं रुकी तो सिर मोड़कर कागज़ समेटने लगा।

"अरे, मुझसे तो बोली थी कि दो बजे तैयार मिलूँगी। ये कोई नहाने का टाइम है? मरेगी।" वे बेंत की कुर्सी पर एक घुटने पर दूसरा चढ़ा-कर बैठ गई थीं और सैंडल पर अपलक निगाहें टिकाये धीरे-धीरे पाँव हिला रही थीं।

"कहीं बाहर जाना है क्या?" मैंने देखा, आज वे काफी हल्के मूड में थीं। वे मिसेज़ धीर की जगह बीनू कह रही थीं।

"न्यू मार्केट की बात थी, शायद कुछ खरीदना था। कहती थी चार बजे से पहले आ जाना है न, वर्ना मेजर धीर वेट करेंगे। शायद कुछ पर्दे-वर्दे लेने हैं।" फिर झटके से मुड़कर बरामदे में लटके छोटे-छोटे हरे गमलों की तरफ निगाह डालकर बोलीं, "मुझे तो ये गमले और फूल बड़े अच्छे लगते हैं। बीनू बोली, मैं दिला लाऊँगी। मैं अपने कमरे के साइड-वाले बराण्डे में लटकाऊँगी। रात में कभी आँख खुल जाये, बराण्डे में चाँदनी के टुकड़े बिखरे हों···गमलों में लटके फूल कुनमुना रहे हों, बाहर ओस पड़ रही हो तब धीरे-धीरे टहलने में कैसा अच्छा लगता है। है न?"

अरे, ये तो बाक़ायदा कविता करने लगीं। मैंने चौंककर उनकी ओर देखा! काला चश्मा उन्होंने उतार लिया था और दोनों कमानियों को

धीरे-धीरे दाँतों पर ठोंकती वे बाहर की ओर निगाहें टिकाये कह रही थीं। उन्हें निर्भय होकर देख लेने का अवसर था। मैं उनकी कनपटी और कन्धों को छूते रेशमी बाल देख रहा था। शायद अभी-अभी उन्होंने सिर धोया था, शैम्पू की हल्की-हल्की गंध आ रही थी। कान का रिंग टूटे चाँद-सा लटका था···कुहनी तक गुलाबी चुस्त ब्लाउज़ में बँधा हाथ कुर्सी की बाँह पर टिका था···घड़ी की काली डोरी कलाई पर बड़ी खूबसूरत लग रही थी। और लाल देसी उँगलियों पर ताजा लगी नेल-पॉलिस गँधा रही थी।

तभी झटके से घूमकर वे बोलीं, "अरे लो, मैंने तो आपको डिस्टर्ब कर दिया। बैठकर गप्पें लड़ाने लगी। यह मेरी बड़ी बुरी आदत है, जहाँ भी बैठ गई कि गप्पें। अच्छा, ऐसा है कि मैं ऊपर चली जाती हूँ, अपनी किटी से दो-एक बातें करूँगी, या नीचे गुड्डी से गाना सुनूँगी। जब मिसेज धीर···बीनू नहा लें तो मुझे कहलवा दीजिये। आप काम करें···।"

"नहीं, नहीं···मैं तो यहाँ खुद ही नींद से लड़ रहा था।" मैंने जान-बूझकर हाथ मुँह के सामने लगाकर जँभाई ली। वैसे उनके रंग-ढंग से भी उठने की कोई बात नहीं लगती थी। जैसे यह बात कहनी थी, इसलिये कह दी। धीरे-से हँसकर कहा, "यहाँ आकर तो खाने से मैं परेशान हूँ। एक तो यह सीली-सीली हवा, दूसरे हर अगले घंटे बाद ब्रेकफास्ट, लंच, टी या डिनर में से किसी न किसी का वक्त हो जाता है। बीच-बीच में फल-बिस्कुट तो चलते ही रहते हैं···। पहले खाने की खुमारी उतरी नहीं कि दूसरे का वक्त आ गया। सबके ऊपर यह जहाजों का सूट (कालिख) ···आप क्या कर आईं ?"

वे फिर बाहर देख रही थीं; झटके से मेरी ओर सिर घुमाया तो बालों ने झकोला लिया। "मैं!" फिर जैसे दर्द से हँसी, "मुझे क्या करना है ? वही सुबह उठो, ब्रेकफास्ट तैयार कराके दो, ये परेड से आयें तो साथ बैठकर खाओ और दोपहर भर बैठे-बैठे मक्खियाँ मारो। शाम को कहीं सिनेमा या वही आर्डिनेन्स-क्लब, या इस-उसके यहाँ रिटर्न-विजिट···। मन नहीं लगता तो बीनू के साथ शॉपिंग वॉपिंग पर चले

गये, नहीं तो गुड्डी से गप्पें लड़ाते रहे···अपनी किटी के साथ थोड़ा-बहुत घूम आये, स्वेटर बुनते रहे। वही बँधी-बँधाई ज़िन्दगी···वही बँधे-बँधाये लोग···बस अपनी तो यहाँ बीनू से पटती है।" वे गोदी में रखे चश्मे की कमानियाँ उठाती-गिराती रहीं।

"और बीनू आपके गुण गाते नहीं थकती।" मैं देख रहा था, इस समय उनके ऊपर उस छाया का कोई नामोनिशान नहीं था जो मेजर तेजपाल की उपस्थिति में उनकी आँखों में मँडराया करती थी। वे ऐसी खुलकर बैठी थीं जैसे न जाने कब की परिचिता हों। पता नहीं यह काल्पनिक इच्छा-पूर्ति होती है या कुछ और कि कुछ चीज़ें हमें इतनी अच्छी लग जाती हैं, और हम उनमें अपनापन झलकता देखने लगते हैं।

वे कह रही थीं, "बीनू से ही क्या होता है, यहाँ तो सभी लोग नाराज हैं।" सहसा चुप होकर वे कुछ सोचने लगीं। मैंने सोचा, शस्त्रानुसार आकर्षक न होते हुए भी ये आँखें कम सुन्दर नहीं हैं। 'सभी लोग' में कहीं न कहीं निश्चय ही तेजपाल होंगे, लेकिन यह विषय इतना कोमल था कि छूने की हिम्मत न होती थी। उत्सुकता के मारे मन बेचैन हो उठा। मैंने बड़े आग्रह से कहा, "आपने हमें गाना नहीं सुनाया मिसेज तेजपाल!"

मेरी बात पर ग़ौर से उन्होंने मुझे देखा और सहसा खिलखिलाकर हँस पड़ीं, "गाना!" उनके गालों के भँवर और गहरे हो आये। हँसते-हँसते वे दो-तीन बार आगे-पीछे झुकीं और दाँतों की बिजली से चौंधियाकर मैंने आँखें दूसरी ओर घुमा लीं। "दिन भर तो गाती रहती हूँ। अब अलग से ही गाने में क्या रखा है?"

मुझे उनके हँसने का कारण समझ में नहीं आया। लगा, यह हँसी बड़ी नपी-तुली और सब मिलाकर नक़ली है। फिर जैसे मुझे बड़े विश्वास में लेकर बोलीं, "कभी ख़ूब जी भरकर सुना दूँगी, इतना कि आप खुद मना करने लगें।"

"अब सुनाइये न।" मैंने फिर उसी आग्रह से कहा। सोचा शायद और गाने वालों की तरह दो-एक बार कहे बिना वे न गाती हों। "अपने मन से जब गायेंगी, तब तो गायेंगी ही।"

हठात् वे उठ खड़ी हुईं। चश्मे की कमानी पकड़कर घुमाती हुई बोलीं, "तो ज़िन्दगी भर दूसरों के मन से ही गाती रहूँ ? नहीं, मैं ऐसा नहीं कर सकती। अकबर का वो कौन-सा शेर है ?—भरते हैं मेरी आह को वे ग्रामोफ़ोन में, कहते हैं दाम लीजिए और आह कीजिए।" फिर सहसा बात तोड़कर कहा, "अरे बड़ी देर लगा दी बीनू ने।" वे एक-एक कदम रखतीं; चश्मे को कमानी से घुमातीं बरामदे के दूसरे सिरे अर्थात् बाहर के दरवाज़े के पास तक गईं और बुन्दकियोंदार धुँधले काँच के पार देखने की कोशिश करती रहीं।

मेरा मुँह तमतमा आया। स्तब्ध बैठा देखता रहा। वे मुझसे अचानक इतनी सख़्त बात कह बैठेंगी, इसके लिए मैं तैयार नहीं था। मैंने क्यों कहा उनसे गाने को ? रेडियो-सिनेमा में मैंने उनसे अच्छे गाने सुने हैं। ऐसी कोई खास जन्नत की हूर भी नहीं हैं। हम लोगों ने अपने को गिरा-गिराकर इन औरतों के दिमाग़ सचमुच बहुत बढ़ा दिये हैं। बैठी रहतीं चुपचाप। वह तो मैं शिष्टाचार के नाते बोलने लगा था। उनके चेहरे की मुसकराती छवि देखकर जाने कैसे मुझे ऐसा विश्वास हो गया था कि मैं उनसे चाहे जैसी बात कहूँ, वे बुरा नहीं मानेंगी और मेरी बात रखेंगी। और झूठ नहीं बोलूँगा, अपने को मैं विशिष्ट-व्यक्ति भी समझता था, इसलिए चाहता भी था—उन्हें मेरी बात रखनी ही चाहिये। शायद इस वक्त उनका रंग-ढंग भी इतना कुछ उन्मुक्त था। मैं उन्हें पीछे गौर से देखता रहा—सुडौल तो उनका शरीर है ही। गुलाबी साड़ी का फ़ॉल और पटलियाँ। झीनी साड़ी से झाँकती बालिश्त भर चौड़ी कमर की पट्टी। जाने क्यों मुझे उन पर क्रोध ही नहीं करते बन रहा था, लगता था कहीं वे बहुत निरीह हैं। वे अब लौटेंगी, सोचकर मैं अपने कागज़-पत्तर घूरने लगा।

"और बताइए, आपकी शायरी कैसी है ?" मुड़ते ही उन्होंने ऐसी स्निग्धता और अपनत्व से पूछा जैसे कोई बात ही नहीं हुई हो। दोनों पंजे फैलाये मुझे टाइप करने को तैयार देखकर वे सहसा खिलखिलाकर हँस पड़ीं, "एक ही बात से सारी सुस्ती दूर हो गई न ? सचमुच, आप आदमी लोग भी अजब होते हैं। आप चाहते हैं इसीलिये फूल खिलें, इसीलिए

कोयल बोले, इसीलिये झरने बहें, बादल भटकें ! मैं देखती हूँ कि रूप-रंग चाहे जितने अलग हों, मिट्टी सबकी एक है।"

नहीं, मैंने सोच लिया था कि मैं इनकी किसी बात पर आश्चर्य नहीं करूँगा। ऐसा नहीं लगता कि वे अपनी स्वाभाविक स्थिति से गुज़र रही हों। मैं चुपचाप व्यर्थ ही टाइप करता रहा। एक बार मन में आया कि कोई सख़्त बात कह दूँ, फिर चुप रह गया। फिर वे एकदम स्वाभाविक स्वर में बड़े अनुरोध से बोलीं, "हमारा एक काम कर दीजिये न ! कुछ अपने और दूसरों के अच्छे-अच्छे शेर लिख दीजिये।"

मैंने सिर हिलाया और व्यस्तता से अनमने भाव से कहा, "जी।"

उन्होंने सहसा बाल झटकते हुए मुझे देखा और दो चक्कर लगाये, हुँ; आपसे तो ज़रा-सा गाने को कहा सो नहीं हुआ और दूसरे से आप उम्मीद करेंगी कि दुनिया भर की बेगार करेगा। वे मुसकराकर बोलीं, "आपको अभी कहीं फाँसी-वाँसी नहीं मिली।"

मैंने सिर उठाकर प्रश्नवाचक मुद्रा से देखा, अर्थात् क्या मतलब ?

"नहीं समझे ?" वे इस तरह हँसीं जैसे बहुत बड़ा मज़ाक करने जा रही हों। "कहीं कोई फयासी-व्याँसी (वाग्दत्ता प्रेमिका) नहीं है ?"—मानो गाने का अनुरोध करने का मेरी प्रेमिका से कोई सम्बन्ध हो। "अच्छा आप तो बताएँगे नहीं, बीनू से पूछती हूँ।" फिर सुना, वे गुसलखाने के पास जाकर बीनू से बातें कर रही हैं। उनकी डोलची अभी तक कुर्सी के पास रखी थी। मन हुआ कि उठाकर नीचे फेंक दूँ, फिर अपने बचपन पर खुद ही हँसी आई। कार्बन को मुटठी में गोल-मोल करके फेंकने से पहले एक बार फिर इच्छा हुई कि उसे उनकी डोलची में रख दूँ। तभी दूसरी ओर के बरामदे से सुनाई दिया।

"जवाँ है मुहब्बत हसीं है ज़माना।
लुटाया है दिल ने खुशी का खज़ाना···"

अरे, वे तो गाने लगीं। मैं मुसकरा उठा। नीचे का पेड़ हमारे फ्लैट के बराबर उठा था। इस कुहुक को सुनकर पेड़ पर बोलती कोयल सहसा चुप हो गई···

लेकिन आख़िर मिसेज़ तेजपाल ने ऐसा क्या कर डाला कि तेजपाल

पागल हो गये, यह बात अभी तक मेरी समझ में नहीं आ रही थी। और जब किसी तरह मन नहीं लगा तो मैं चुपचाप नीचे उतर आया। मेजर अइयर के फ़्लैट में रणधीर के खिलखिलाने की आवाज़ आ रही थी। किसी के यहाँ टेलीफ़ोन घनघना रहा था। उतरते हुए मुझे बेचैनी-सी हुई कि कोई इसे उठा क्यों नहीं लेता। ग्राउण्ड फ्लोर के बरामदों या भीतर के कमरों की रोशनियाँ बाहर सड़क तक फैली थीं। पर्दे के लिये नीचेवालों ने रेलवे-क्रीपर और बेगम-बेलिया की घनी बेल सामने की तरफ लगा ली थीं। बेगम-बेलिया के सुर्ख रेशमी कतरनों जैसे फूलों के बीच-बीच से ग्रामोफ़ोन के भोंपू-से झाँकते रेलवे-क्रीपर के बैंगनी फूल बड़े अज़ब और प्यारे लगते थे। बिलियर्ड्स जोरों से जम रहा होगा। गेंदों, क्युओं और मार्कर की खटर-पटर के साथ बीच-बीच में एक साँस-रोक सन्नाटा छा जाता होगा। मेरा मन किसी तरह वहाँ नहीं लगेगा, मैं जानता था। यों ही हुगली के किनारे तक घूमने के इरादे से सड़क पर निकल आया। पानी बरस चुका था। आती-जाती मोटरें अपने पहियों से सड़क के पानी को चर्रर्र करके रगड़ती हुई चली जाती थीं और हैडलाइटों से सड़कों की भीगी हुई काली सतह चकाचौंध हो उठती थी। किले के मैदान की हरी घास सीलन सोख रही थी। सड़क की नियोन-बत्तियाँ चिड़ियों की तरह पेड़ों के गीले पत्तों के पीछे छिपी झाँक रही थीं। सड़क के एक ओर जुबली-लाइन्स के ये ब्लॉक अँधेरे और उजाले के चार खानों से बने हुए लगते थे। अब तो किले की बगल में भी रहने के लिये क्वार्टर बन गये थे। पहले मुझे अच्छी तरह याद है, उधर क्वार्टर बनने की कोई बात ही नहीं थी। इसी सड़क पर तो मैंने अक्सर मिसेज़ तेजपाल को किटी की जंज़ीर पकड़कर धीरे-धीरे गुनगुनाते हुए उसे घुमाकर लाते देखा था। उनके एक हाथ में एक पतली-सी बेंत रही थी और दूसरे में कलाई पर चमड़े का फीता लिपटा रहता था। वह अलसेशियन कुतिया किटी आगे-आगे और वे कमान की तरह झुकी पीछे-पीछे···उनकी जो तस्वीर नाम के साथ ही मेरे सामने कौंध जाती है वह यही कि तगड़ी, ताक़तवर कुतिया जैसे उन्हें खींचे लिये जा रही है और वे पीछे-पीछे मजबूर-सी खिचती चली जा रही हैं···डर होता है कि ज़रा-सी ठोकर लगी या सन्तुलन बिगड़ा और वे

लुढ़कीं···वे हैं कि गुनगुनाती खिंची चली जा रही हैं। शायद मन पर पड़ी इस छाप का कारण यह हो कि मैंने पहले-पहल उन्हें इसी रूप में देखा था···

मैं बस से उतरकर हाथ में किताब लिये क्वार्टर की तरफ़ चला आ रहा था कि देखा—सामने किटी मिसेज़ तेजपाल को खींचती हुई फाटक से निकल रही है। किटी के साथ-साथ उन्हें भागते हुए चलना पड़ता था। एक बार तो मेरे मन में आया कि अनदेखा कर जाऊँ। लेकिन उन्होंने भी देख लिया था। साथ ही मुझे उनकी कुहनी में बँधी सफ़ेद पट्टी दिखाई दी। अब उनसे उस पट्टी के बारे में न पूछना मुझे अशिष्टता लग रही थी। उस दिन की बात अभी भूला नहीं था। फाँसी—मैंने शब्द मन-ही-मन दुहराया और मनाने के जिस अन्दाज़ में वह मुझसे कहा गया था, उसका ध्यान आते ही हँसी आई। निगाहें मिलते ही दोनों मुसकराये।

"अपनी किटी को घुमाने ले जा रही हैं!" दोनों कान जोड़े खड़ी अपनी ओर ताकती उनकी कमर से ऊँची उस कुतिया को सहमी नज़रों से देखते हुए मैंने हँसकर पूछा। चमड़े की पेटी से उसका पेट भी बँधा था।

"हाँ जी, इस वक्त इसका मन ही नहीं लगता। मन परेशान कर रखा था जब से। मैंने कहा, चल पहले तुझे ही घुमा लाऊँ। उनके बाल अस्त-व्यस्त हो गये थे। बड़े बेमालूम तरीके से हाँफते हुए उन्होंने छड़ी वाले हाथ से कानों के ऊपर के बाल हटाये। पूछा, "आज टाइप नहीं करेंगे?"

"अब?" मैंने घिरते अँधेरे और छिपते दिन की ओर इशारा करके कहा, "ये कोई वक्त है टाइप करने का? मुझे तो आज तक याद नहीं कि मैं इस वक़्त कमरे में बन्द होकर बैठा होऊँ। कहीं इधर-उधर टहलूँगा, इसके बाद टाइप करने बैठूँगा। आज तो काफ़ी काम करना है।" तब मुझे फिर परसों की बात याद हो आई। कुछ ठण्डे ढंग से पूछा, "आज क्लब वग़ैरा नहीं गईं?"

"मेज़र तेजपाल एन० सी० सी० कैम्प में गये हैं न ?" कुतिया उन्हें एक तरफ़ खींच रही थी। भूरा मटमैला रंग और जगह-जगह काले रोएँ। छाती पर पीले-पीले से मुलायम बाल और अजब खूँख़ार रंग की बादामी आँखें। उस कुतिया की आँखों में देखने में मुझे डर लगता था। उसकी आँखों में देखते ही उसकी पुतलियों के सुनहले तिल एक अजब वहशियाना भूख के साथ सिकुड़ने-फैलने लगते थे। कुतिया उनकी कमर से ऊँची थी। अगर यह चाहे तो उन्हें तिनके की तरह खींचकर ले जा सकती है। न यह फैशनेबल ढंग की बेंत मदद करेगी और न यह संगीतमय गला उसे रोक पायेगा। मैंने ऊपर से कहना चाहा, 'अच्छा यह बात है। तभी आजकल गाने-बाने की आवाज़ें कम आ रही हैं।' लेकिन हिम्मत नहीं पड़ी। जाने क्या जबाब दे दें।

कुतिया से खींचातानी की व्यस्तता में उन्हें मेरी बात सुनने की फुर्सत नहीं मिली। एकदम बोलीं, "चलेंगे, ज़रा हुगली तक इसको घुमा लाएँ··· काम तो नहीं है कुछ ?"

"चलिये।" मैंने किताब गेट पर खड़े दरबान को दी और हम दोनों हुगली की तरफ़ चल दिये। आज मुझे मिसेज तेजपाल में कुछ अजब-अजब बात लग रही थी। लग रहा था जैसे मुझे उनसे कोई बात कहनी थी जो याद नहीं आ रही है। कनखियों से देखा तो सहसा चौंक उठा, "अरे ये आपके हाथ में क्या हो गया ?" मुझे याद आया कि यही बात तो मैं पहले पूछना चाहता था।

लापरवाही से ठोड़ी झटककर वे बोलीं, "यों ही ज़रा बाथरूम में फिसल गई थी। ध्यान रहा नहीं, तो मैट से पाँव फ़िसल गया।"

"ज्यादा चोट तो नहीं आई ?" मैंने चिन्ताकुल स्वर में पूछा। उनकी ओर देखा तो मन हुआ पूछूँ कि आपने मुझे खुद क्यों नहीं बताया। लेकिन यह निहायत अनधिकार बात थी।

"नहीं।" उन्होंने ऐसे टालने के ढंग से कहा कि मुझे चुप हो जाना पड़ा। मुझे ऐसा लगा जैसे यह बाथरूम में फ़िसलने की बात सही नहीं है और इसे मैं पहले भी कहीं, किसी और मुँह से सुन चुका हूँ—शायद एकाधिक बार।

हम लोग चुपचाप चलते रहे। अँधेरा घना हो गया था और गैस की बत्तियाँ जलाने वाला दौड़-दौड़कर बत्तियाँ जलाता चला जा रहा था। सेण्ट ज्यार्जेज गेट के सामने वाली सड़क के बीच बने हरी घास के लॉन वाले द्वीपों को पार करके अब हम लोग चुपचाप हुगली के किनारे जाती पटरी की रेलिंग के सहारे-सहारे चलने लगे थे। मिसेज़ तेजपाल के साथ चलने में बड़ी झिझक लग रही थी। कोई परिचित देख ले तो क्या सोचे ? कल ही कोई कहेगा—'आप उस वक्त ज़रा 'ऊँचाई' पर थे इसलिये टोका नहीं।' लेकिन उनके साथ चलने में ऐसा कुछ आकर्षण था कि मन-ही-मन बड़ा गर्वमय सन्तोष हो रहा था। भीतर भय था कि कहीं सामने से रणधीर या मेज़र तेजपाल ही न आ जायें। तेजपाल के चेहरे की कल्पना करके मानो मेरा दिल आतंक से भर उठता। रह-रहकर मैं सिर मोड़कर उनकी ओर देख लेता और पकड़ा न जाऊँ इसलिए दूर बादलों, गुजरते कार्गो (लद्दू) जहाजों और स्टीमरों पर निगाहें टिकाये रखता। मिसेज तेजपाल धीरे-धीरे गुनगुनाती हुई व्यर्थ ही हाथ की बेंत को ऊपर-नीचे झटकार रही थीं। कुतिया चुपचाप चल रही थी। एक खुली जगह से रेल की पटरियाँ पार करते हुए हम लोग जब नदी के ठीक किनारे वाली सड़क पर आये तो वे धीरे से हँसीं।

मैंने इधर-उधर देखकर कि शायद कहीं कोई मज़ाक की चीज हो, पूछा, "क्यों, क्या हो गया ?" लेकिन कहीं कोई ऐसी चीज नहीं दिखाई दी।

"मुझे इन हुगली के किनारे घूमने वालों पर हँसी आती है।" उन्होंने सड़क के किनारे खड़ी कारों की लाइन की ओर इशारा करके कहा, "मछलियों की बदबू और जहाजों के मथे गन्दे पानी वाली इस नदी के किनारे आकर ये लोग शायद अपने को चौपाटी, जुहू या ट्रिप्लिकेन-बीच पर खड़ा समझते होंगे।"

"इसमें हँसने की क्या बात है ?" मैंने व्यर्थ ही झुककर एक कंकड़ उठा लिया और उसे दो-एक बार झुलाकर पटरी पर फेंकता हुआ बोला, "यह तो मजबूरी है। यहाँ कहाँ से ये लोग ट्रिप्लिकेन-बीच या जुहू चौपाटी लाएँ।"

"आपको हँसने की बात ही नहीं लगती ? देखिये न, यहाँ आकर भी ये लोग भीतर कारों में बन्द बैठे-बैठे रेडियो सुनते रहते हैं। तो फिर घर ही क्या बुरे थे ? बहुत हुआ तो मडगार्ड से टिक कर मूड़ी या आइसक्रीम खा ली—मानो हुगली पर कोई अहसान कर रहे हों।" हमारी पगडण्डी पर भी घूमने वाले आ-जा रहे थे।

"आप यह क्यों नहीं सोचतीं कि बन्द कारों में सही, लेकिन स्त्रियों को अपने साथ ले आना इनके लिए बड़ी भारी क्रान्ति है। वर्ना इन्हें निकलना कहाँ नसीब होता है ? वहीं अपने बन्द और घुटे वातावरण में रहती हैं, अपने को सबसे अनोखा समझती हैं। चूँकि जिन लोगों से मिलना-जुलना होता है वे या तो रिश्तेदार होते हैं या नौकर-चाकर और सेठजी के कृपा-पात्र लोग, इसलिए लामुहाला अपने को सबसे महान् और ऊँचा समझने का कम्प्लैक्स इनमें पैदा हो जाता है। गाड़ी से बाहर निकलकर घूमने लगें तो लोग साधारण आदमी न समझने लग जायें ? हर वक्त यह जताने की कांशसनैस न समाप्त हो जाये कि हम बड़े आदमी हैं।"

"हुँह" उन्होंने जिस तरह कहा, उससे उनका विचकता मुँह मेरी आँखों के आगे नाच गया। वे ज़रा ज़ोर से बोलीं, "दे शुड बी शॉट एण्ड चार्ज्ड फ़ॉर द बुलेट्स ! इनसे गोली के पैसे रखवाकर इन्हें गोली मार देनी चाहिए।"

बात सुनकर एक साहब चलते-चलते सिगरेट जलाना भूलकर देखने लगे। यों हर पास से गुज़रती निगाह एक बार उन्हें न देख ले, यह सम्भव नहीं था। अपने उस वाक्य पर वे खिलखिलाकर हँस पड़ीं। दो बार उन्होंने बाल झटके, हालांकि आज उन्होंने सारे बाल पीछे की ओर किए हुए थे और दो बड़ी-बड़ी चम्पाकलियों की तरह उनके कान ऊपर दिखाई देते थे। मुझे उनका यह वाक्य बड़ा अप्रत्याशित और असाधारण लगा। हम लोग अब मैन-ऑफ़-वार-जेटी के सामने से गुज़र रहे थे। सफ़ेद दूधिया रंग का एक खूबसूरत चुस्त जहाज़ बल्लों की आड़ी-तिरछी मालाएँ डाले खड़ा था। ढालू पुल से प्लेटफार्म पर लोग आ-जा रहे थे। मछली खरीदने और बेचनेवालों के अपनी ओर मुड़े, मुग्ध चेहरों के बीच बेंत से साड़ी बचातीं मिसेज़ तेजपाल झुके सिर पर जिस लापरवाही से बालों को लट-

कने दे रही थीं उससे यह बात मेरे दिमाग़ में आए बिना न रही कि वे अपने प्रति ही नहीं, लोगों की निगाहों और निगाहों में तैरती प्रशंसा के प्रति सचेत (कांशस) और लापरवाह, दोनों हैं। बात मुँह पर आते-आते रह गई कि जिन्हें आप गोली मार देना चाहती हैं वे भी तो आपके बार-बार हाथों पर खिसक आते पल्ले और वजह-बेवजह मुसकराने पर कुछ कह रही होंगी। लेकिन कहा, "आप शायद उनकी तरफ से नहीं सोचना चाहती ?"

"देखिए, नदी के किनारे आये हैं तो इस तरह बैठकर खुली हवा खानी चाहिये।" कहकर वे किनारे की घास पर बिना किसी पूर्व-सूचना के धम् से बैठ गईं। कुतिया उनके पीछे आ खड़ी हुई। अब मैंने देखा, कितनी बड़ी कुतिया थी। उसकी पीठ इनके सिर से ऊँची निकली हुई थी।

मन में आया, बड़ी अजब औरत है···

एक क्षण इधर-उधर देखकर मैं भी बैठ गया। भीतर एक अनजान भय था और एक अनाम पुलक थी। पास के पेड़ के नीचे हमारी ओर पीठ किये, कन्धे सटाये एक और बंगाली जोड़ा बैठा था। मुझे बार-बार लगता था जैसे अभी कोई भारी-सा पंजा पीछे से आकर गर्दन पर पड़ेगा, 'क्यों बच्चू, यहाँ बैठे हो ?' और मैं मुड़कर देखूँगा कि अरे, ये तो मेजर तेजपाल हैं। शायद यह बीनू का वह वाक्य था जो भय बनकर समा गया था। और इसलिए मैं उनके सान्निध्य को कभी सम्पूर्णता से ग्रहण नहीं कर पाया था। लेकिन मिसेज़ तेजपाल की निश्चितता देखकर बड़ी सांत्वना मिल रही थी।

वे अपलक आँखों से जहाज़ को देखती रहीं—छोटे-छोटे केबिन, रेलिंग, गैलरियाँ, वारजे और चिमनियाँ और भोंपे। किनारे पर दो सुन्दर-सी नाव खिलौनों की तरह लटकी थीं। दोनों पंजे छाती पर रखे खलासी लोग इधर से उधर दौड़ रहे थे। ऊपर कप्तान के केबिन के सामने मेज़ और कुर्सियाँ डाले दो अफ़सर कपों में कुछ पी रहे थे। एक कुर्सी खाली पड़ी थी। जहाज़ की बत्तियाँ मिसेज़ तेजपाल की आँखों में झलमला रही थीं। पीछे किले की ओर वाली पटरी पर खड़ी कनवर्टिबिल से हल्की-

हल्की रेडियो की आवाज़ में कोई सिनेमा का गाना आ रहा था। थोड़ी देर उसे वे यों ही अपनी गुनगुनाहट में उतारती रहीं। फिर सहसा सिर झटका।

"जाने क्यों, इन जहाज़ों को देख-देखकर बड़ी अजीब-अजीब बातें मेरे दिमाग़ में आती हैं।" वे अस्फुट-से स्वर में बोलीं, "जाने कहाँ-कहाँ घूमते होंगे ये। इसपर रहनेवालों को कैसा लगता होगा जाने···वैसे भी नदी के किनारे घास पर बैठने का मुझे नशा है। बचपन से बहते पानी को देखकर अजब-सा मन हो जाता है। मुझे याद है जब हम छोटे थे, हमारे घर के पीछे ही एक खूब चौड़ी नहर थी। मुझे जब भी मौका मिल जाता, वहीं भाग जाती। बैठी-बैठी घण्टों पानी को देखा करती। पानी में बादल तैरते रहते···मेरा मन होता मैं भी इन बादलों में से एक पर बैठकर तैरती हुई समुद्र में चली जाऊँ—खूब दूर चली जाऊँ···उधर कहीं से कोई तूफान में भटका, दिशा भूला जहाज़ जा रहा हो···मैं दोनों हाथों को भोंपू-सा बनाकर खूब ज़ोर-ज़ोर से जहाज़ वालों को आवाज़ दूँ···मेरे गले की नसें उभर आयें···लेकिन जहाज़ चला ही जावे···सूनी-सूनी आँखों से उसे क्षितिज से खोता हुआ देखती रहूँ और फिर फूट-फूट कर रो पड़ूँ···"

मैंने देखा, वे सहसा फिर भावुक हो उठी हैं। कितनी जल्दी वे अपने बाल झटकने के साथ ही मूड बदल लेती हैं···मैं तो इतनी जल्दी अपने को नहीं बदल पाता। पीछे खड़ी मोटरों की कतारें, आइसक्रीम, मूँगफली और मूड़ी, चना ज़ोर गरम या चीना-बादाम बेचने वालों, सन्नाटे में गुज़रती बसों, हमें रहस्यमय कुतूहल से देखते ठीक पास से गुज़रते सैलानियों की रेंगती निगाहों और सामने नावों, स्टीमरों और कार्गोलौंचों की छायाएँ मेरी चेतना में कुछ इस तरह कुलबुला रही थीं कि सहसा बादलों और चीलों के साथ तैरने की बात मैं नहीं सोच सकता था। लेकिन इन सबकी शायद उन्हें चिन्ता भी नहीं थी। आज सोचता हूँ तो लगता है कि वे शायद ये सारी बातें मुझे सुना भी रही थीं, इसमें शक है। वे तो अपनी मुखर मानसिक-स्थिति का एक गवाह चाहती थीं और संयोगवश वह मैं था।

"अब देखिये, इस किनारे पर देखिये।" वे अपनी कुतिया की गर्दन

पर हाथ रखकर कह रही थीं, "पानी कैसी लहरें मार रहा है। शायद ज्वार का समय है। अच्छा, आप ही बताइये, रोशनी की परछाइयाँ ऐसी नहीं लगतीं जैसे चमकदार सुनहले-सुनहले साँप पानी में तड़प रहे हों और फिसलन भरे किनारे पर चढ़ने की कोशिश कर-कर के रह जाते हों··· नावों के भीतर मसाला पीसते, खाना बनाते लोग···वह देखिये, हाय वह माउथ-ऑर्गन पर कैसी अच्छी धुन निकाल रहा है। "हमें तो शामें ग़म में काटनी है ज़िन्दगी अपनी···" और वे धीरे-धीरे माउथ-ऑर्गन के साथ स्वर मिलाकर गाती रहीं। फिर सहसा आनन्द की एक फुरहरी लेकर उन्होंने साड़ी को कमर के पास बग़ल में खींच लिया। उनकी चुस्त-ब्लाउज़ में कसी पीठ और सुडौल कन्धे—दोनों तो पूरे खुल ही गये, कमर का भी काफ़ी हिस्सा दिखाई देने लगा। इस ओर से बेखबर वे बोलीं, "उफ़, मेरा तो मन कर रहा है, उछलकर खड़ी हो जाऊँ और कुलाचें भरती हुई इधर से उधर भागूँ।" उन्होंने आवेश में आकर बैठी हुई कुतिया के दोनों कान अपनी अंगुलियों से इस तरह प्यार में झटक दिए मानो किसी बच्चे के बाल बिखरा दिये हों। "आज जाने क्यों मेरा मन बड़ा खुश है। बड़ा फ्री है। अच्छा एक गाना गाऊँ?"

"नहीं भैया, कुछ तो ध्यान कीजिए आस-पास का।" मैंने सहसा चौंककर कहा और कनखियों से इधर-उधर देखकर धीरे-से हँस पड़ा। इतनी बड़ी होकर भी मानो हर लड़की कहीं न कहीं छोटी बच्ची है जो अभी ठुमककर कह उठेगी, "उहूँ, हम तो सुनायेंगे।"

"नहीं, बस एक। भई, आप तो ग़ुस्सा बहुत जल्दी हो जाते हैं। मेरी बात को याद मत रखा कीजिए। मैं तो यों ही, जो मन में आता है वह कह देती हूँ। बहुत धीरे-धीरे गाऊँगी। आप भी कहेंगे, कैसी बदतमीज़ है, लेकिन गाऊँगी ज़रूर।"

उनके स्वर में एक ऐसी अजब और अप्रत्याशित आत्मीयता थी कि मैं चौंक पड़ा, जैसे वह एक ऐसा धक्का था जिसे एकदम सँभालाना मेरे लिए संभव नहीं था। पिछली धारणा उनके बारे में कुछ इस तरह की बन गई थी कि यह सब विरोधाभास-सा लगा।

और वे अपने उठे हुए घुटनों के निकट ठोड़ी लगाकर धीरे-धीरे गाने

लगी थीं। माउथ-ऑर्गन के साथ अभी तक वे गुनगुना रही थीं, और वह भी बड़ा अस्पष्ट और अस्फुट स्वर चूँकि काफ़ी धीमा था इसलिए मैं सिर पास लाकर सामने देखते हुए सुनने लगा···वे मजाज़ की नज़्म पढ़ रही थीं —"ऐ ग़मे दिल क्या करूँ, ऐ वहशते दिल क्या करूँ···"

ज़रा-सा गला साफ़ करके स्वभाव के अनुसार उन्होंने बाल झटके तो एक गुच्छा मेरे कानों से आ टकराया···तब पहली बार मेरा सारा शरीर ऊपर से नीचे तक झनझना उठा। मुझे जैसे नये सिरे से अपनी उपस्थिति का बोध हुआ। मैंने हथेली कान पर फेरकर उस चुनचुनाहट को झाड़ने की कोशिश की···लेकिन एक अजब-मादक, स्वप्निल मीठी-मीठी गंध का कुहासा मुझे अपने चारों ओर गाढ़ा-गाढ़ा उभरता-सा लगने लगा···जैसे विस्मृति के सागर की लहरें संगमरमर की चट्टानों पर पछाड़ खाती हों और उनकी फुहारों से मेरा तन-मन भीगा जा रहा हो···

मुन्तज़िर है एक तूफ़ाने-बला मेरे लिए,
अब भी जाने कितने दरवाज़े हैं वा मेरे लिए,
पर मुसीबत है, मेरा अहदे-वफ़ा मेरे लिए,
ए ग़मे-दिल क्या करूँ, ऐ वहशते दिल क्या करूँ···?
दिल में इक शोला भड़क उट्ठा है, आखिर क्या करूँ?
मेरा पैमाना छलक उट्ठा है, आखिर क्या करूँ?
ज़ख्म सीने का महक उट्ठा है, आख़िर क्या करूँ?
ऐ ग़मे दिल क्या करूँ, ऐ वहशते दिल क्या करूँ···?"

जिस समय मिसेज़ तेजपाल विभोर होकर ये लाइनें गा रही थीं, मैं जैसे अपने पास से उठकर कहीं और चला गया था। जैसे उनके आसपास के वातावरण से कहीं दूर··· किन्हीं अनजान बर्फ़ानी चोटियों के पार··· मुझे लगा जैसे मैं सितम्बर या मार्च की चाँदनी के सन्नाटे में किसी सूने-सूने लॉन पर सिर के नीचे हथेलियाँ रखे चित् लेटा कुहरिल आसमान को देख रहा हूँ और आसपास की क्यारियों के बेले और चमेली की लहरों के बीच गुलाब भँवर की तरह खिलखिला उठे हैं···जैसे कभी-कभी आधी रात तक ताजमहल के लॉन में लेटा रहा करता था और किसी बुज़ुर्ग की तरह घुटनों में सिर दिये ताजमहल चुपचाप बैठा चाँदनी में भीगता, किन्हीं

अतीत की दूरियों में खोया रहता था। एक क्षण को मुझे लगा जैसे सच-मुच मैं उसी क्षण में लौट गया हूँ और अधमुँदी आँखों से आसमान को थाहे जा रहा हूँ और ताज की सीढ़ियों पर, हथेली पर ठोड़ी रखे कोई उदास बैठा जाने क्या सोच रहा है, इस बात की छाया का अहसास मेरी पलकों पर रह-रहकर मँडरा जाता है···तभी किसी स्टीमर ने 'भों' की लम्बी कराह के साथ सामने की जगह पार की तो मैं फिर साश्चर्य अपने में लौट आया। कहाँ चला गया था मैं अभी-अभी ?···

"जी में आता है ये मुर्दा चाँद तारे नोच लूँ,
इस किनारे नोच लूँ, और उस किनारे नोच लूँ,
एक दो का ज़िक्र क्या, सारे के सारे नोच लूँ,
ऐ ग़मे-दिल क्या करूँ, ऐ वहशते-दिल क्या करूँ ?···"

उनके गाते-गाते मुझे लगा जैसे बीच में उनके गाने का प्रवाह कहीं रुका और उन्होंने कुछ सटककर ज़ोर से दाँत पीसे···मानो सचमुच चाँद-तारों को नोचने का जोश उनके भीतर उफन रहा हो···मुझे लगा जैसे जादू का ज्वर धीरे-धीरे उतरने लगा हो···उनका यह मूड, उनकी पुरानी तस्वीर और यह अवसाद···जैसे कहीं दोनों में कोई साम्य या संगति न हो···और इस चेतना ने मुझे फिर से हुगली के किनारे पर पहुँचा दिया···।

वे सामने बैठी खोई-खोई गाती रहीं और रह-रहकर मुझे उनकी अपनी ओर वाली मख़मली बाँह, रेशमी बाल, और कनपटी पर चाँद, किटी का चौकन्ना चेहरा—सभी कुछ एक कुहासे के पार खोला हुआ लगने लगता और फिर मैं होश में आकर देखता कि वे अपने हाथों की पतली-सी बेंत को धीरे-धीरे अपने उठे हुए पंजों पर मार रही थीं। जैसे उनकी यह हरक़त, हिलते हुए होंठ और कुहनी पर बँधी सफ़ेद पट्टी मुझे खींचकर फिर धरती पर ले आती और कॉस्मेटिक्स की भीनी-भीनी महक फिर ऊपर हवाओं पर उछाल देती, फूल-सा हल्का बना देती। अपने सिर के पास ही उनके सिर का होना मुझे बड़ा अच्छा लग रहा था और मन कहता था—कोई हम दोनों को इस प्रकार देखकर क्या कहता होगा ! मैं उस समय उनके स्वर में, उनकी उपस्थिति के जादू और उल्लसित मूड के प्रवाह में

बेबस होकर वह ज़रूर जाता था, लेकिन एक हल्की-सी टीस भी उठती थी कि शायद मैं किसी के बदले यहाँ बैठा हूँ···पता नहीं वह कौन है ! अकेले पहाड़ी झरने के एकान्त किनारों और घाटियों की हरियल सलवटों की अँगड़ाई लेती भूल-भुलैयों से लौटकर ही मुझे यह भी लगता कि ये अपना सिर मेरे सिर के इतने पास क्यों ले आती हैं ? बराल में बैठे ये लोग कहीं इस गीत को सुनकर यह न सोच लें कि जाने कौन बाज़ारू औरत साथ है···

और यह मैं भी जानता था कि वे हल्की चाहे जितनी हों, चाहे जितनी उन्मुक्त और स्वच्छंद होकर व्यवहार करें या गाएँ, लेकिन उनकी हर बात में एक संयत ऊँचाई का भाव है, ऐसा कुछ ग्रेस है कि सहसा उनके बारे में कोई ऐसी-वैसी बात नहीं सोच सकता । मुझे याद है—उस समय एक बार जाने कैसे मुझे लगा कि जैसे मिसेज़ तेजपाल के बाल बहुत लम्बे-लम्बे हैं और उन्होंने खूब गोल-सा जूड़ा बाँध रखा है । इच्छा हुई कहीं से रजनीगंधा की कलियों का एक अर्धचन्द्राकार जूड़ा लेकर उनके केशों में लगा दूँ और जाने किस आवेशवश मेरे हाथ उनकी पीठ सहलाने के लिए तड़प उठे । एक बार तो शायद उठ भी गये, लेकिन मैंने सिर्फ़ अंगड़ाई लेकर उस इच्छा को दबा लिया···शायद बीनू की बात मन में तस्वीर बन गई थी···सारी रोमान्टिक भावनाओं के बावजूद मुझे गर्व था कि वे मुझे अपने इन एकान्त क्षणों को यों गवाह बना रही हैं···यों निकट आने दे रही हैं···मैं जताना चाहता था कि ऐसी अपटूडेट अभिजात सौन्दर्यशालिनी नारी मुझे यह गौरव दे रही है और मैं यों उसके मूड में हिस्सा ले रहा हूँ···

गाना खत्म करते ही बिना मुझे कुछ कहने का अवसर दिये वे बोलीं, "कितनी दुखभरी गज़ल है ! है न ? जाने क्यों, जब मेरा दिल खूब-खूब खुश होता है तो यों ही कोई बड़ी दुखभरी चीज़ गाने को मन करता है । गाते-गाते इच्छा होती है, एक-एक लाइन को कई-कई बार गाऊँ और खूब-खूब रोऊँ । अच्छा, एक बात आपको पता है ? मुझसे दुखान्त फ़िल्में नहीं देखी जातीं—मैं जाती ही नहीं । कई दिनों तक मन बहुत खराब रहता है" पीछे से जाती माल-लदी ट्रक का कोई पुर्जा इतनी ज़ोर से आवाज़ करता हुआ चला गया कि उनकी बात टूट गई···

उन्हें मानो मेरी ओर से कुछ सुनने की जरूरत ही नहीं थी। लेकिन मुझसे अब नहीं रहा जा रहा था। बार-बार उनके कन्धे पर हाथ रखने की इच्छा फड़ककर रह जाती थी और रह-रहकर लगता था जैसे कहीं उनकी ज़िन्दगी में कोई बहुत बड़ी ट्रेजेडी है, कोई गड़बड़ है और उस गड़बड़ को उनकी बलबलाती हुई जीवनी-शक्ति स्वीकार नहीं कर पा रही है। मैं स्पष्ट ही अपने हृदय से उठकर अँगुलियों की पोरों तक आती कोई लहर जैसी चीज महसूस करता और यह लहर शब्दों का रूप लेकर मेरे मन में गूँज उठती थी। तब कल्पना में मैं उनकी कनपटी पर हथेली रखकर उनके सिर को अपने कन्धे से लगा लेता और कहता—बहुत दुखी हो मिसेज़ तेजपाल तुम। मैं जानता हूँ। गोलियों के फूल की छाया में तुम्हारी यह कुहुक कौन सुनता होगा?' साथ ही यह भी जानता था कि इस सहानुभूति और दया को उनका आत्मसम्मान कभी स्वीकार नहीं करेगा। मैंने झिझकते स्वर में कहा, "एक बात पूछूँ मिसेज़ तेजपाल ?"

"पूछिये।" वे सहसा चौंक उठीं। नदी किनारे बैठे अपने-आप में अकेले युवक-युवती में से जब कोई ऐसा सवाल पूछता हो तो उसका अर्थ क्या होता है, मानो यह बात सहसा उन्हें याद हो आई।

उनकी आशंका समझकर मैंने हँसकर कहा, "नहीं, कोई ऐसी ख़ास बात नहीं है। मैं तो यों ही पूछना चाहता था कि आपका नाम क्या है?"

उन्होंने मुक्ति की साँस ली और खिलखिलाकर हँस पड़ीं, "बस ? अरे, मेरा नाम मिसेज़ तेजपाल है, और क्या होता ?"

"नहीं, यह नहीं। यह तो बाद में ही हुआ होगा न, शादी के पहले भी तो होगा कुछ।" मैंने हठ करके पूछा, "कई बार यह बात मन में आई। पहले सोचा, बीनू से पूछूँगा। अब आपसे ही पूछ लेता हूँ।"

वे उसी तरह हँसती रहीं और मेरा मन होता रहा कि रोशनी होती तो मैं उनके खिलते दाँत देखता। वे बोलीं, "बहुत अच्छी लग गई हूँ क्या? बड़े इण्टेरेस्टेड हैं मुझमें ? कहीं मुझसे मुहब्बत-उहब्बत तो नहीं करने लगे ? भई, आप पुरुष लोगों का क्या ठीक है ?" वे सीधी मुड़कर मेरी ओर देख रही थीं।

मैं सकपकाकर स्तब्ध रह गया। वे तड़ाक से यह बात कह बैठेंगी,

यह चीज़ मेरी कल्पना से एकदम बाहर थी। लगा जैसे वे मुझे बच्चे की तरह खिला रही हैं। यह भी जानता था कि वे मज़ाक कर रही हैं; लेकिन जाने क्यों मुझे इस बात में सुरुचि का अभाव लगा। नारीत्व को संकोच और शालीनता के साथ मिलाकर देखना, हो सकता है मेरे संस्कार हों; मगर मुझे उनकी बात से ऐसा लगा जैसे किसी ने एक झटके के साथ सारा मायाजाल खींचकर अलग फेंक दिया है और मैं अनावृत निरीह-सा खड़ा रह गया हूँ। स्वर समेटकर बोला, "अच्छी तो वाकई आप हैं, इसमें क्या शक है! लेकिन नाम पूछने का यह सब अर्थ कहाँ है?" और मैं सीधा बैठ गया।

उन्होंने कुछ नहीं कहा। एक गहरी साँस ली और बोलीं, "मिसेज़ तेजपाल नाम खास बुरा तो नहीं है? नाम ही क्या, पहले जाने कितनी चीज़ें थीं जो मिसेज़ तेजपाल होने के बाद छूट गईं···नाम ही क्यों रहता?"

"मसलन···" मैंने समझा इस प्रश्न के द्वारा मैं उनके नाम के साथ-साथ पिछले जीवन की और कुछ बातें भी जान सकूँगा।

"मसलन मैं पहले किसी की बेटी थी, किसी की बहन थी, बाद में सिर्फ पत्नी हो गई। शादी के समय सिर्फ लेफ्टिनैण्ट की बीवी थी और आज मेजर की हूँ, तीन साल बाद कर्नल की हो जाऊँगी।"

"यह तो आप सवाल को टाल रही हैं।"

"टाल कहाँ रही हूँ? इतना साफ तो कह रही हूँ कि मैं पिछला कुछ भी नहीं लाई अपने साथ। अपने शौक, अपने सम्पर्क, अपना नाम—सब पीछे छोड़ आयी हूँ।" मेरे अविश्वास को पढ़कर वे बोलीं, "अच्छा मान लीजिये, मेरा नाम···मेरा नाम···" उन्होंने इधर-उधर सहारे के लिए देखा, "मेरा नाम हुगली था, फुटपाथ था···या किट्टी था, क्या फ़र्क़ पड़ता है इससे? अब मिसेज़ तेजपाल हूँ बस।"

और मैं सहसा बुझ गया। या तो यह स्त्री जान-बूझकर अपने आस-पास एक रहस्य का जाला ताने रखना चाहती है या मुझे बहला और टाल रही है। उस पल लगा, उनमें मेरी दिलचस्पी समाप्त हो गई है। याद आया आज कुछ ज़रूरी कागज़ भी तो टाइप करने हैं, वर्ना कल मुसीबत हो

जायेगी। लेकिन उठने का प्रस्ताव करने की हिम्मत नहीं हो रही थी। मैं जहाज पर घूमते सफेद और नीली वर्दी पहने अफसरों और खलासियों को देखता रहा। जहाज़ के सिरे पर रोमन अक्षरों में लिखा था—'हैलन'। शायद कोई ब्रिटिश जहाज़ है, तभी तो ऐसा चुस्त-दुरुस्त है। नीचे जहाज़ से पानी की मोटी धार एकरस धड़धड़ गिरे जा रही थी।

"विश्वास नहीं हुआ ?" उन्होंने हल्के मुस्कराते स्वर में पूछा।

"नहीं, ठीक ही है।"

"अपने कालेज में सबसे मस्त लड़की थी। हर चीज़ में हिस्सा लेती थी, दिनभर हँसती-खिलखिलाती घूमा करती थी, इसलिए लड़के-लड़कियों ने मेरा नाम क्या रख दिया था, जानते हैं ?" वे फिर अपने में डूबकर बोलीं, "झुकि झूमि-झूमि मुसकात जाति !" फिर अपने इतने लम्बे नाम पर खुद ही हँस पड़ीं "लड़कियाँ भी बड़ी शैतान होती हैं। कैसा लगा आपको यह नाम ?"

"काफी अच्छा नाम है।" मैंने फिर बिना किसी विशेष दिलचस्पी के कह दिया।

मेरे स्वर के ठण्डेपन को उन्होंने पकड़ा या नहीं, लेकिन सहसा बाल झटककर बोलीं, "अच्छा एक बात बताऊँ ? मैं भारतीय नहीं हूँ।"

"तो ?" मैं सचमुच अपनी जगह से उचक पड़ा। यह तो नई बात थी। मैंने एकदम उनके चेहरे को ग़ौर से देखा। उनके फीचर्स अँधेरे में दिखाई नहीं दिये।

"पन्द्रह साल की उम्र में मैंने बर्मा छोड़ा था। तब मैं जूनियर कैम्ब्रिज में पढ़ती थी। बाम्बिग हुई तो हम लोग इधर चले आये।"

"ओ !" मैंने सन्तोष की साँस ली। सोचा था, जाने किस देश की होंगी। पूछा, "बर्मा में कहाँ ?"

"पेगू। पेगू का नाम सुना है ? वहाँ हमारे पिताजी फ़ारेस्ट ऑफीसर थे। माँ बर्मी थीं और पिताजी पंजाबी।" वे फिर दूर खो गईं, "हमें याद है जब भगदड़ मची थी तो आने में कैसी मुसीबत हुई थी। हम लोग रंगून आये। जिस जहाज में हम लोग भेड़-बकरियों की तरह भरकर आये उस पर जापानियों ने बम गिरा दिया। नावों में जितने लोग आ सकते थे,

आये। जब तक दूसरा जहाज़ आया तब तक जाने कितने डूब चुके थे। माँ तो उसी भागदौड़ में कहीं छूट गई हम लोग किसी तरह दिल्ली पहुँचे···।"

अब मुझे फिर मिसेज़ तेजपाल पर दया आने लगी। हमदर्दी से पूछा, "कितने भाई-बहन हैं आप लोग?"

"मैं बीच की हूँ। एक भाई मुझसे बड़ा है एक छोटा। वहाँ से आकर फादर देहरादून में रेन्जर हो गये। बड़े भाई मिलट्री-कॉलेज में तेजपाल के साथ पढ़ते थे। मैं दिल्ली में हॉस्टल में थी। छुट्टियों में जाती थी, तभी एकाधबार भाई के साथ इन्हें देखा···"

"अब कहाँ हैं वे लोग?" मैंने पूछा।

"पता नहीं। इस बात को भी तो आठ-नौ साल हो गये।" वे निहायत तटस्थ अरुचि से बोलीं, "अभी बताया न, पिछले सम्पर्क-शौक वगैरा सभी कुछ···"

"तो भी जब मेजर तेजपाल कैम्प वगैरा चले जाते हैं तो कहाँ रहती हैं?"

"क्यों? क्वार्टर है न। बस वहीं रहना और दिन भर रेंकना···" वे लापरवाही से बोलीं, "पिछला सब खत्म···किसी जमाने में टॉलस्टाय के उपन्यास, शा के नाटक, चेखव की कहानियाँ पढ़ने का शौक था···कीट्स और वर्ड्सवर्थ पर जान देती थी और बंगला कविताएँ गाती थी। भरत-नाट्यम नाचती थी—अब तो सब खत्म। अब तो···रॉक-एन-रोल पर कन्धे मटकाते हैं और जॉज़ सुनते हैं। फिल्म-फ़ेयर और फ़िल्म-इण्डिया, अगाथा क्रिस्टी और स्टेनली गार्डनर को घोंटते हैं और दिन भर जो जी में आता है सो रेंकते हैं। मुहब्बत में ऐसे कदम डगमगाये, जमाना यह समझा कि हम "पी के आये।" वे अचानक बहुत ही हल्की हो आईं। फिर एकाएक उठ खड़ी हुईं, "चलिये, अब उठें। क्या बज गया?" फिर रोशनी की ओर कलाई घुमाकर घड़ी देखी तो मुंह खुला रह गया, "हाय, आठ। चलिये···चलिये।"

खड़े होकर जरा झुके-झुके चप्पलों में पाँव डालते हुए वे एकदम डग-मगा उठीं तो झट मेरे कन्धे पर हाथ रख दिया, "उफ़, मेरे तो दोनों पाँव सो गये।" उनकी कमर की ऊँचाई तक आने वाली कुतिया ने बड़ा-सा मुँह

फाड़कर जँभाई ली, "क्याऽऽ !" उसके सफेद दाँतों और आँखों में जहाज़ की परछाईं कौंध गई।

मेरा सारा शरीर रोमांचित हो उठा।

मैंने डरते-डरते-से उनके कन्धे को छूकर सहारा देने का भाव दिखाया, और इधर-उधर देखा। मुझे लगा जैसे उस क्षण उनकी कुहनी भी रोमांचित हो आई थी। थोड़ी देर पाँव घिसटा-घिसटाकर चलने के बाद वे ठीक हो गईं। मेरे कन्धे पर उनकी अँगुलियों की पकड़ अब भी सिहर रही थी।

रात को सोते समय बहुत देर तक मुझे हुगली के किनारे की बातें याद आती रही थीं। और वह सब एक मधुर चित्र बनकर मेरे मन में सुरक्षित रह गया था। आशंका भी थी, कहीं मिसेज़ तेजपाल मुझसे मज़ाक न कर रही हों। जिस ढंग से उन्होंने अपने ऊपर मोहित हो जाने की बात पूछी थी उससे यह नामुमकिन भी नहीं था कि वे यों ही एक चुहल कर डालें। मुझे लगा, ज़रूर कोई ऐसी बात उन्होंने मेरे व्यवहार में देखी होगी जो 'फ़ाँसी' की बात उन्होंने कही और चलते-चलते सीढ़ी पर कहा गया वाक्य तो ऐसे किसी भी भाव के लिए जगह भी नहीं छोड़ता। फिर भी उन चित्रों में कुछ था कि सोते समय मैं मन में कई बार उन्हें दुहराता रहा।

लौटते समय हम लोग किले की तरफ वाली पटरी से लौट रहे थे। वे कह रही थीं, "आज तो बहुत गप्पें लड़ाईं। आप तो बहुत बोर हुये। ये मेरी बड़ी बुरी आदत है। बोलने पर आती हू तो बस, बकर-बकर बोले ही जाती हूँ, कोई सुने या न सुने। ममी बहुत डाँटती थीं कि लड़कियों का बहुत बोलना अच्छा नहीं होता लेकिन सुनता कौन था। एक बात थी, घर

में बड़ा रोब था···मम्मी, फादर, भाई—सभी डरते थे। क्या मजाल जो मैं बात कह दूँ और वह न हो···एक बार की बात है···" वे कहकर सहसा चुप हो गईं। फिर सिर झटककर बोलीं, "अच्छा कुछ नहीं।"

मैंने इधर-उधर देखा। कोई नहीं था। "क्यों, चुप क्यों हो गईं आप ?"

"नहीं, कुछ नहीं। यों ही एक बेवकूफी की बात थी।" वे टालकर बोलीं, "पर उन लोगों ने मेरा बड़ा नुकसान कर दिया। अब अगर मेरी कोई इच्छा पूरी नहीं होती तो मन होता है गोली मार लूँ···" अनजाने ही उन्होंने फ़ीते लिपटे हाथ से दूसरी कुहनी सहलाई।

"लेकिन आपके शौक तो बहुत अच्छे थे। आपने उन्हें छोड़ क्यों दिया ?" मैंने उन्हें प्रोत्साहन देने के लिए पूछा।

"छोड़ न देती तो उन्हें लेकर घुटती ?" वे तलख़ी से बोलीं, "आप देखते नहीं, यहाँ कौन-से शौक पनपते हैं ? आदमियों को क्लब, कैबरे, रेस और ब्रिज से फुर्सत नहीं है या फिर दिनभर अपने अफ़सरों की बातें—फ़लाने की फ़लाने से झड़प हो गई···फ़लाने के प्रमोशन में क्या गड़बड़ी पैदा हो गई। एटीकेट, मैनर्स और कल्चर पर रिमार्क या इसका ट्रांसफर उस डिवीजन में हुआ, उसका वहाँ। या फिर वही एक-दूसरे के यहाँ डिनर, रिटर्नविजिट्स और चाय पार्टी, बर्थ-डे पार्टी के बाद वही घिसे-पिटे मजाक। एक-दूसरे के बारे में उल्टी-सीधी बातें और पोजीशन की होड़। दिन को वही खड़-खड़ करती खाकी काहिया यूनीफॉर्म, वही तनी हुई रीढ़ें और अकड़ी हुई गर्दनें। रोज़-रोज़ वही फ़ीतों और स्टारों की पॉलिश और शाम को काले-काले सूट। आइ'म सिक आफ् देम। नपी-तुली चाल, नपी-तुली हँसी, नपा-तुला मनोरंजन। आप लगातार एक-दूसरे के यहाँ चार साल जाइये, वही पहले दिन वाली फार्मेलिटी, वही तकल्लुफ़, वही औपचारिकता। लगता ही नहीं, जैसे आदमी मिल रहे हों। कठपुतलों की ज़िन्दगी···जिनकी हर हरकत पहले से तय हो···।"

"हाँ, है तो यही बात।" मैंने समर्थन किया, "मैं तो और लोगों से भी काफी मिलता जुलता हूँ फिर भी यही सब देखते-देखते बोर हो जाता हूँ। तब आप लोगों को तो सचमुच कभी-कभी बड़ी ऊब होती होगी।"

"और यहाँ की औरतें ? उफ़, हद है," वे उत्साह से बोलीं, "खाना और कपड़ा, बस इसके सिवा वे कोई बात ही नहीं कर सकतीं। चौबीस घण्टे बस वही बातें, सबके यहाँ दैनिक अखबार आते हैं लेकिन उसे खोलती उसी दिन हैं जिस दिन सिनेमा जाना होता है। यों जाने को क्लबों में जाती हैं; पार्टियाँ अटैण्ड करती हैं; मुस्कराती हैं, लोगों को अपने यहाँ खाने पर निमन्त्रित करती हैं, लेकिन इतनी रूढ़िवादी हैं कि क्या बताऊँ ? एक हैं जिन्होंने अपने हर दरवाज़े पर सतिये काढ़ रखे हैं। ज्यादातर सातवें-आठवें या दसवें-बारहवें तक पढ़ी हैं, बस। बैरों ने मेम साहब कह दिया तो बहुत खुश। बीनू को छोड़ कर मुझे तो यहाँ एक भी बात करने लायक नहीं लगती। अगर उनके पति फौज के ऊँचे अफ़सर न हों तो सच-मुच वे एकदम फूहड़ और गँवार हैं। दुनियाँ की किसी बात से इन्हें कोई मतलब ही नहीं। दूर रहते थे तो बहुत सोचा करते थे कि मिलिटरी में यों स्वतन्त्रता है···यों छूट है···लेकिन सब दूर से दीखता है।" कुछ देर चुप-चाप चलने के बाद वे धीरे से हँसीं, "पहले मैं लेटी-लेटी रातों को सोचा करती थी कि जिसने अन्ना-केरेनिना लिखा होगा, उसके दिल में कितना दर्द होगा···क्या-क्या बातें उसके मन में आया न करती होंगी ! अब तो वह सब याद भी नहीं आता। किसी और जन्म की बातें लगती हैं, किसी बहुत पुराने जमाने की···।"

"खैर, यहाँ वाले भी तो आपसे खुश नहीं हैं।" मैंने जरा और कुरेदने के लिए कहा।

"मैं तो कभी इसकी चिन्ता ही नहीं करती ?" वे उद्धत स्वर में बोलीं, "अपने बारे में वह सब मैं भी सुन चुकी हूँ। यह शोर तो उन दिनों सुनते जब मैं आई-आई थी। यहाँ तो लोग रेडियो भी सुनते हैं तो कमरा बन्द करके ताकि बाहरवाला कोई सुन न ले। मैंने पूरा गला फाड़कर गाना शुरू कर दिया तो बड़ी चर्चा ! कोई कहता—मैनर्स नहीं आते; कोई कहता, भले आदमियों में नहीं रही; किसी के हिसाब से मुझे कपड़े पहनने का सलीका नहीं था; साड़ी कहीं जाती थी पल्ला कहीं; और किसी के लिए मैं ग्रामोफ़ोन थी, किसी के लिए रेडियोग्राम। चलने-फिरने की तमीज़ नहीं है। फ्लर्ट है, फ़िल्म-ऐक्ट्रेस है ! मेजर तेजपाल जाने किस

गाने वाली को पकड़ लाये हैं । और तो और, एक दिन मैंने अपने बारे में यह सुना कि मैं किसी 'बार' में नाचा-गाया करती थी और वहीं मैंने मेजर तेजपाल को फाँस लिया; तो बड़ी हँसी आई। ऐसे रिमार्क सुनना तो अब आदत बन गई । मैं भी कहती हूँ, कुढ़ो ! जितना कुढ़ती हो, मैं उतना ही कुढ़ाऊँगी । मेरा क्या जाता है ? और अब हालत यह है कि किसी दिन अगर ऊपर सन्नाटा रहे तो मिसेज मकरीजा का आर्डर्ली आकर पूछता है—मिसेज तेजपाल की तबियत तो ठीक है, मेम साहब ने पूछा है।"

"लेकिन ये सब चीजें तो चलती ही रहती हैं। कोई चाहे तो अपना शौक चलाये रख सकता है।" मैंने कोमल सांत्वना के शब्दों में कहा ।

"जी हाँ, चलाये रख सकता है ।" उन्होंने मुँह बिचका दिया, "पहले हमारे यहाँ एक लड़का आया करता था । वह भी भाई का क्लासफैलो था और फिर बाद में कुछ दिनों हम लोग एक जगह साथ-साथ भी रहे। ऐसा अच्छा वायलिन बजाता था कि क्या बताऊँ ! मन होता था कि बस बैठे-बैठे उसका वायलिन सुनते रहो। वह फोर्ट के भीतर ही बेचलर्स-क्वार्टर्स में रहता था और अक्सर आ जाया करता था। मैं कोई भी काम करती तो मुझे ऐसा लगता है जैसे कहीं दूर वह वायलिन बजा रहा हो। और कन्धे पर बाँह पर वायलिन थामकर डूबा-डूबा सिर, काँपती अँगुलियाँ और खिचता गज—सभी कुछ हर समय आँखों के आगे नाचा करता। मैं खाना खाती रहती और अचानक लगता जैसे—नीचे किसी के फ्लैट में वह वायलिन बजा रहा है । मैं चौंककर रुक जाती । ये पूछते—क्या हुआ? मेरे मुँह से निकल जाता—यह कैसी आवाज है ? ये बोलते—कछ भी नहीं, पानी सनसना रहा है किचिन में, या ऊपर पानी की टंकी भरने की मशीन चल रही है। मैं झेंपकर चुप हो जाती । कभी-कभी तो सोते-सोते चौंककर जाग उठती···"

"फिर ?"

"फिर क्या ? उन दिनों जो-जो कुछ सुनने को मिला उसे भूल सकती हूँ ? उसी को लेकर इनकी उससे कुछ अनबन हो गयी । बाद में उसका ट्रांसफर हो गया···" पता नहीं यह मेरा भ्रम था कि मुझे लगा जैसे

उनका गला रुँध आया है। हम लोगों के ब्लॉक अब शुरू हो गये थे। हमारा ब्लॉक अभी आड़ में पड़ता था। वे बोलीं, "अब मैं आपके साथ चल रही हूँ। किसी ने देखा होगा तो कल ही सुन लीजिए, क्या-क्या उड़ायेगा। उड़ाये, मुझे किसी की कोई चिन्ता नहीं···"

"मिसेज़ तेजपाल, मैं आपके बारे में इतनी बातें नहीं जानता था।" गहरी साँस लेकर मैंने उनसे कहा। मुझे उन पर तरस आने लगा और समय-समय पर आने वाली झुंझलाहट पर खेद हुआ।

हठात् वे खिलखिलाकर हँस पड़ीं, "अरे आप तो भावुक हो उठे। ये तो रोज़ होने वाली बातें हैं। मैंने ऐसी-वैसी बात कह दी हो तो बुरा मत मानिये। मैं बड़ी सनकी हूँ। जो भी धुन आ जाये बस अकेले-अकेले ही बोले जाती हूँ। कोई गाना सुबह-सुबह ज़बान पर चढ़ जाये, बस समझ लीजिए, उसे गा-गाकर ढेर कर दूँगी।" फिर जाने क्यों रुमाल से आँखें और मुँह पोंछकर बोलीं, "और क़ायदे से मुझे माफ़ी-वाफ़ी माँगनी भी नहीं चाहिए। जैसे आप बीनू के लिए, वैसे ही मेरे लिए···"

"नहीं···नहीं, ऐसी कोई बात नहीं···" मैंने जल्दी में कहा।

और अब हम लोग सीढ़ियाँ चढ़ रहे थे तो उन्होंने कई बार मेरी ओर सिर मोड़ते हुये बालों को झटका और आत्मीयता और झेंप की गंगा-जमुनी मुस्कराहट उनके गालों के भँवरों में वर्तुलाकार थिरक उठी। जब किटी उन्हें खींचती ऊपर ले गई तो मैं सोचता रहा, कितनी स्मार्ट हैं ये···जाने क्यों दिल के भीतर एक गहरी साँस निकल गई। ऊपर मोड़ से उन्होंने हाथ हिलाया—

"टा-टा···"

टा-टा ! आज सड़क पर यों ही चहलकदमी करते हुए एक-एक चित्र मेरे सामने उभर-उभरकर आ रहा था। फिर तो किटी को घुमाते, आते-जाते, सीढ़ियाँ चढ़ते या बीनू के यहाँ से विदा लेते समय वे बड़े दोस्ताना ढंग से

हाथ उठाकर टा-टा करतीं, ठीक जैसे बच्चे करते हैं उ
वे गुड्डी के साथ थीं तो उन्होंने टा-टा करने के बाद अ
से लगा लिया था। जाने किन गहराइयों के कुनकुने
निकाल लिया था कि उन्हें देखते ही एक अजब स्फूर्ति
भूति के भाव साथ-साथ मुझे छा लेते थे। और रात को मैं देर तक उनके बारे में सोचा करता था। वे किस समय कहाँ हैं, इसकी खबर रखता था। एकाध बार रणधीर ने मज़ाक में कहा, "आजकल हमारे दाने से बड़ी दोस्ती हो रही है, डिप्टी गॉड की···बड़ा ख़तरनाक खेल है। मेजर तेजपाल गोली मार देगा, याद रखना।"

बीनू उसे डपट देती, "आपके दिमाग़ में तो हमेशा बस ये ही बातें आती हैं। दूसरों पर कीचड़ उछालते हैं, कुछ अपनी कहिए न ?"

हजामत बनाना छोड़कर रणधीर कहता, "अपना भाई चाहे क़त्ल कर आये, लेकिन तुम उसकी तरफ़दारी जरूर करना।" फिर ज़बरदस्ती संजीदा मुँह बनाकर कहता, "देखो भाई, समझाना हमारा काम है। बाकी तुम जानो···यों डिप्टी गॉड को हम क्या खाकर समझायेंगे।"

मुझे नहीं मालूम, मैं उन दिनों खतरनाक खेल खेल रहा था या नहीं; लेकिन यह सच है कि जब-जब मैं उन्हें देखता, तेजपाल की सूरत आँखों के आगे आ खड़ी होती। टाइप करते-करते कभी बालों को झटकारता मिसेज़ तेजपाल का चेहरा आ जाता तो कभी मेजर तेजपाल का बड़ी-बड़ी मूँछों वाला। इस बात को दिल के भीतर मैं भी जानता था कि वे उन लोगों में से हैं जो गोली मार सकते हैं···और जब उसके बाद पिकनिक वाली घटना हो गई तब तो यह बात और भी साफ हो गई। मैं कसमसा-कर रह गया···

रणधीर ने झुँझलाकर मुझसे कहा, "बुलाओ न उन्हें, क्या हो रहा है ?" फिर तेजपाल की ओर देखकर बोला, "इन लेडीज़ का निकलना भी बस···"

उनका गला रुँध आया है। हम लोगों के ब्लॉक अब शुरू हो गये थे। हमारा ब्लॉक अभी आड़ में पड़ता था। वे बोलीं, "अब मैं आपके साथ चल रही हूँ। किसी ने देखा होगा तो कल ही सुन लीजिए, क्या-क्या उड़ायेगा। उड़ाये, मुझे किसी की कोई चिन्ता नहीं···"

"मिसेज़ तेजपाल, मैं आपके बारे में इतनी बातें नहीं जानता था।" गहरी साँस लेकर मैंने उनसे कहा। मुझे उन पर तरस आने लगा और समय-समय पर आने वाली झुंझलाहट पर खेद हुआ।

हठात् वे खिलखिलाकर हँस पड़ीं, "अरे आप तो भावुक हो उठे। ये तो रोज़ होने वाली बातें हैं। मैंने ऐसी-वैसी बात कह दी हो तो बुरा मत मानिये। मैं बड़ी सनकी हूँ। जो भी धुन आ जाये बस अकेले-अकेले ही बोले जाती हूँ। कोई गाना सुबह-सुबह ज़बान पर चढ़ जाये, बस समझ लीजिए, उसे गा-गाकर ढेर कर दूँगी।" फिर जाने क्यों रूमाल से आँखें और मुँह पोंछकर बोलीं, "और क़ायदे से मुझे माफ़ी-वाफ़ी माँगनी भी नहीं चाहिए। जैसे आप बीनू के लिए, वैसे ही मेरे लिए···"

"नहीं···नहीं, ऐसी कोई बात नहीं···" मैंने जल्दी में कहा।

और अब हम लोग सीढ़ियाँ चढ़ रहे थे तो उन्होंने कई बार मेरी ओर सिर मोड़ते हुये बालों को झटका और आत्मीयता और झेंप की गंगा-जमुनी मुस्कराहट उनके गालों के भँवरों में वर्तुलाकार थिरक उठी। जब किटी उन्हें खींचती ऊपर ले गई तो मैं सोचता रहा, कितनी स्मार्ट हैं ये···जाने क्यों दिल के भीतर एक गहरी साँस निकल गई। ऊपर मोड़ से उन्होंने हाथ हिलाया—
"टा-टा···"

टा-टा ! आज सड़क पर यों ही चहलकदमी करते हुए एक-एक चित्र मेरे सामने उभर-उभरकर आ रहा था। फिर तो किटी को घुमाते, आते-जाते, सीढ़ियाँ चढ़ते या बीनू के यहाँ से विदा लेते समय वे बड़े दोस्ताना ढंग से

हाथ उठाकर टा-टा करतीं, ठीक जैसे बच्चे करते हैं और एकाध बार जब वे गुड्डी के साथ थीं तो उन्होंने टा-टा करने के बाद अँगुलियों को भी होठों से लगा लिया था। जाने किन गहराइयों के कुनकुने पानी में मुझे डुबाकर निकाल लिया था कि उन्हें देखते ही एक अजब स्फूर्ति और करुण सहानुभूति के भाव साथ-साथ मुझे छा लेते थे। और रात को मैं देर तक उनके बारे में सोचा करता था। वे किस समय कहाँ हैं, इसकी खबर रखता था। एकाध बार रणधीर ने मज़ाक में कहा, "आजकल हमारे दाने से बड़ी दोस्ती हो रही है, डिप्टी गॉड की···बड़ा ख़तरनाक खेल है। मेजर तेजपाल गोली मार देगा, याद रखना।"

बीनू उसे डपट देती, "आपके दिमाग़ में तो हमेशा बस ये ही बातें आती हैं। दूसरों पर कीचड़ उछालते हैं, कुछ अपनी कहिए न ?"

हजामत बनाना छोड़कर रणधीर कहता, "अपना भाई चाहे क़त्ल कर आये, लेकिन तुम उसकी तरफ़दारी जरूर करना।" फिर जबरदस्ती संजीदा मुँह बनाकर कहता, "देखो भाई, समझाना हमारा काम है। बाकी तुम जानो···यों डिप्टी गॉड को हम क्या खाकर समझायेंगे।"

मुझे नहीं मालूम, मैं उन दिनों खतरनाक खेल खेल रहा था या नहीं; लेकिन यह सच है कि जब-जब मैं उन्हें देखता, तेजपाल की सूरत आँखों के आगे आ खड़ी होती। टाइप करते-करते कभी बालों को झटकारता मिसेज तेजपाल का चेहरा आ जाता तो कभी मेजर तेजपाल का बड़ी-बड़ी मूँछों वाला। इस बात को दिल के भीतर मैं भी जानता था कि वे उन लोगों में से हैं जो गोली मार सकते हैं···और जब उसके बाद पिकनिक वाली घटना हो गई तब तो यह बात और भी साफ हो गई। मैं कसमसाकर रह गया···

रणधीर ने झुँझलाकर मुझसे कहा, "बुलाओ न उन्हें, क्या हो रहा है ?" फिर तेजपाल की ओर देखकर बोला, "इन लेडीज का निकलना भी बस···"

बीनू मिसेज़ तेजपाल को लाने गई तो वहीं की हो रही। पिकअप आ गई थी अर्दली पिकनिक का सारा सामान रख चुके थे। दो बार हॉर्न भी दिया। रणधीर, तेजपाल और रुद्रा नीचे खड़े हो गये थे। मिसेज़ रुद्रा और उनकी गुड्डी पहले ही पिकअप में चढ़कर बैठ गई थीं। गुड्डी लाल पतलून पहने पिकअप की रेलिंग पर झूलती सामने के दूसरे तल्ले के फ़्लैट से झाँकते शेखर से बात कर रही थी, पीछे से मिसेज़ रुद्रा ने उसे पकड़ लिया था। ऊपर जाते हुए मैंने देखा, तेजपाल एक खाली सिगरेट के डिब्बे को ठोकर मारते हुए कुछ कह रहे थे।

"बीनू !" मैंने पुकारते हुए तेजपाल के फ़्लैट में कदम रखा। बैरा पिकअप पर सामान ले जा रहा था, इसलिए दरवाज़ा खुला था। मैं ड्राइंगरूम में झाँकता हुआ सीधा बग़ल वाले कमरे में—"मिसेज़ तेजपाल, आप भी तैयार होने में···" कहता हुआ जा पहुँचा।

मेरी बात आधी रह गई।

"भीतर तो आ।" बीनू खिलखिलाने के बीच में रुककर बोली। और जैसे ही मैंने पर्दा उठाया कि पहली बार तो स्तब्ध रह गया, फिर सहसा गला फाड़कर हँस पड़ा।

बीनू पलंग पर बैठी बुरी तरह हँस रही थी और ड्रेसिंग टेबिल के सामने मिसेज़ तेजपाल पैण्ट और शर्ट-ब्लाउज़ में खड़ी हुई झुकी-झुकी होठों पर लिपस्टिक लगा रही थीं, "हल्लोऽऽ !" वे निहायत ही बेतकल्लुफी से शीशे में यों ही व्यस्ततापूर्वक अपना चेहरा देखती बोलीं।

"यह क्या तमाशा है ? नीचे वे लोग शोर मचा रहे हैं और···" मैंने प्रशंसात्मक दृष्टि से मिसेज़ तेजपाल को देखा और बनावटी झुँझलाहट से कहा। इन कपड़ों में भी वे बड़ी आकर्षक लग रही थीं। लगता था, जैसे मैंने इन कपड़ों के सिवा उन्हें कभी और कपड़ों में देखा ही नहीं है।

"चलते हैं भाई, यहाँ हमारी जान मत खाओ।" वे इत्मीनान से शीशे में देखकर बिन्दी लगाती रहीं। फिर खुद ही जैसे अपने पर रीझ गईं। "ये हॉर्न नीचे तो बज ही रहा था अब ऊपर भी आ गया।" उन्होंने मिलिट्री अफ़सरों की टोपी लगा ली। बिन्दी के साथ बड़ा अजब मेल था। पीछे बाल निकल आये थे।

"लेकिन आख़िर यह सब तमाशा क्या है ? चलते-चलते मूड ख़राब करेंगी ?" मैंने देखा, नये कपड़ों की चढ़ती झेंप से उनका चेहरा झलझला आया था। पूछा, "यों चलेंगी ?"

"क्यों ? अच्छी नहीं लगती क्या ?" उन्होंने सीधे मेरी ओर मुँह करके पूछा—"हमारे स्लैक्स पसन्द नहीं आये ?"

"बिलकुल वैकाई लगती हैं आप !"

"बस !" वे बनावटी निराशा से बोलीं, "सिर्फ़ वैकाई ! कम-से-कम यह तो कहा होता कि ऑड्रे हैबर्न लगती हूँ !"

"ऑड्रे हैबर्न !" मैंने चिढ़ाया, "लोगों को भी अपने बारे में बड़े-बड़े भ्रम होते हैं। बेचारे हालीवुड वालों को पता नहीं था वर्ना 'भवानी जंक्शन' में क्यों आवा गार्डनर को परेशान करते ?"

"लगती तो वाक़ई बहुत अच्छी हैं।" नीचे फिर हॉर्न सुना तो लाचारी और झुँझलाहट से बोला, "अच्छा साहब, जैसे चलना हो चलिए। पर निकलिए तो सही !"

"थैंक्यू।" उन्होंने बाद वाली बात ही नहीं सुनी।

बीनू ने बताया, "असल में कल ये कहीं मेजर तेजपाल के साथ मैदान से लौट रही थीं। रास्ते में कुछ योरोपियन औरतें जीन्स और फ़्लाइंग-शर्ट पहने गोल्फ खेलने जा रही होंगी, उन्हें देखकर मेजर तेजपाल बोले, 'देखो, ये औरतें कैसी बेशर्म लगती हैं। अगर बीच से कमर इन्होंने न कस रखी होती और चाल में जनाना नख़रा और मटक न होती तो पीछे से लड़के और लड़की में फ़र्क़ करना मुश्किल हो जाता।' ये बोलीं, 'इसमें बेशर्मी की क्या बात है ? ये तो अपने-अपने कपड़े हैं। ऐसी खुली रहती हैं, तभी तो ऐसी स्वस्थ हैं।' और बस तभी से मेरे पीछे लगी थीं कि मैं भी ज़रा जीन्स पहनकर देखूँगी। अब वह नहीं तो पैण्ट ही सही।"

"मज़ाक नहीं, आप जो कुछ भी पहन लें, उसी में अच्छी लगती हैं।" बिन्दी और होंठों की लाली के साथ टोपी सचमुच इतनी अच्छी लग रही थी कि अगर बीनू न होती तो परिणाम की चिन्ता किये बिना मैं उनकी ठोड़ी अपनी ओर घुमाकर ज़रूर कुछ क्षण एकटक देखता रहता, तब उनकी पलकें किस प्रकार झेंपकर नीचे झुकी रहतीं, इस कल्पना ने मन

को एक अद्भुत रोमांच से भर दिया ।

लाली, पाउडर, रूज़ इत्यादि का प्रयोग करने वाली औरतों की प्रदर्शन-प्रवृत्ति को मैंने कभी अच्छी निगाह से नहीं देखा; लेकिन इनके बारे में कुछ भी बुरा सोचने को मन नहीं करता था ।

"अच्छा मिसेज़ तेजपाल, अब चलिए, नहीं तो वाकई ये लोग नाराज़ हो जायेंगे ।"

वे फिर कपड़े बदलने चली गईं । उन्हें गुड्डी के साथ देखकर जो बात बाद में मेरे मन में आई थी कि वे बड़ी गुड्डी हैं, इस समय भी वही बात शब्दहीन रूप में प्रत्याभासित हुई ।

"क्या हुआ ?" रणधीर ने शायद इसलिए झल्लाकर पूछा कि कहीं तेजपाल ज़ोर से न भड़क उठें ।

"आ रही हैं । आल्मारी की चाबी कहीं रख दी थी ।" मैं डर रहा था कि इन लोगों के नीचे आते ही तेजपाल ज़ोर से दहाड़ेंगे ।

तभी देखा, सारी सीढ़ियों को सैण्डिलों की खटर-पटर से गुँजाती हुई, हँसती खिलखिलाती दोनों उतर रही थीं । सीढ़ियों की काँचवाली खिड़की से देखा—मिसेज़ तेजपाल दो-तीन रंग-बिरंगे गुब्बारे लिये हुए थीं । आसमानी नाइलोन की साड़ी और ब्लाउज़ पहने थीं । उसे पहनने में लाभ क्या है, यह मेरी समझ में अभी तक नहीं आया । साटन का पेटीकोट और ब्रेसरी अनेक पटलियों और तहों के बावजूद ज्यों की त्यों दिखाई दे रही थी । मिसेज़ तेजपाल के इस रूप को देखकर हम सभी को धक्का लगा और जैसे सभी ने नज़रें चुरा लीं । बोला कोई कुछ नहीं । छिपी नज़रों से देखा तो लगा, तेजपाल कुछ बोलते-बोलते रुक गये । उनके कान एक बार लाल हुए और वे निचला होंठ दबाकर रह गये । शान्त स्वर में बोले, "किटी के लिए बोल दिया है बैरा से ?"

"जी ।" वे बोलीं और गुड्डी के पास आकर उससे बातें करते हुए दोनों गुब्बारे उसे दे दिये तो वह किलक उठी । पिकअप का पिछला हिस्सा पकड़कर वे व्यस्तता से चढ़ने लगीं तो उनकी पिंडली घुटनों तक खुल गई । सभी उनको प्रशंसा-मुग्ध के साथ-साथ घृणा-भरी छिपी-छिपी निगाहों से देख रहे हैं, इस बात के प्रति वे एकदम लापरवाह थीं । और

कोई समय होता तो मैं भी शायद उन्हें यों ही देखता; लेकिन उनके इस रूप से शर्म मुझे लग रही थी। सीट पर बैठते ही उन्होंने फिर बाल झटके और गुड्डी को दोनों बाँहों में भींचकर बोलीं, "आण्टी की गोद में नहीं बैठेगी? देखो हमने तुम्हें गुब्बारे दिये हैं।"

सब लोग बैठ गये तो ड्राइवर ने पल्ला चढ़ा दिया। बैरा सामने ड्राइवर की बगल में बैठ गया। गाड़ी गेट से निकलकर हावड़ा की तरफ दौड़ चली। हम लोग आमने-सामने बैठे थे। महिलाएँ सब एक सीट पर थीं। उनके कान के आसमानी शेडवाले बड़े-से नग को गुड्डी मुग्धभाव से छूती हुई घुसुर-घुसुर जाने क्या-क्या बातें कर रही थी और उसके दोनों गुब्बारे इधर-उधर इस तरह उड़ रहे थे कि वह नन्ही परी-जैसी लगती थी। शायद सुन्दरता के प्रति बच्चे भी काफी प्रबुद्ध होते हैं। आश्चर्य मुझे इस बात का था कि तेजपाल ने देरी को लेकर कुछ भी नहीं कहा। जिस ढंग से वे सिगरेट के खाली डिब्बे को ठोकर मार रहे थे, उससे तो ऐसा लगता था कि वे उन्हें देखते ही बुरी तरह फुफकार उठेंगे।...इस समय वे अपने घुटनों की क्रीज उठा-उठाकर ठीक कर रहे थे। रणधीर ने कार्ड-राय की गहरी कत्थई पतलून और खुले कॉलर की सफेद कमीज़ पहन रखी थी और उसका कॉलर बार-बार उड़कर कनपटी पर बज रहा था। गाड़ी तेज चलने लगी थी और मिसेज़ तेजपाल को बार-बार अपने कानों पर अँगुलियाँ फेरकर बाल ठीक करने पड़ते थे। मिसेज रुद्रा छाती के ऊपर गर्दन तक पूरा पंजा फैलाकर उड़ती सलेटी बँगलौरी साड़ी को दबाये थीं। बीनू ने सलवार के साथ का दुपट्टा सिर पर घुमाकर दाँतों से दबा लिया था। वहाँ तो बीनू में कोई ऐसी बात नहीं दिखाई दी थी; लेकिन अब लगता था मिसेज़ तेजपाल की ओर उपेक्षा का भाव धारण करने में दोनों महिलाओं ने मूक समझौता कर लिया था।

"मेजर अइयर से नहीं कहा?" रुद्रा ने कनपटी पर लहरें पैदा करते हुए जेब से इलायची निकालकर फैली हथेली पर सब को आफ़र की। पहले महिलाओं को फिर पुरुषों को। मिसेज़ तेजपाल ने मुसकराकर थैंक्स कहा और मना कर दिया। उन्होंने पर्स से निकाल-निकालकर सबको टॉफियाँ दीं और बाहर ऐसी व्यस्तता से देखने लगीं जैसे कोई बहुत ही

ज़रूरी काम कर रही हों।

"कहा था, लेकिन आज अपने डान्स-टीचर को बुलाया था उन्होंने।" रणधीर ने बताया।

"वॉट! डान्स-टीचर?" दाँतों से दबाकर इलायची के दाने छीलते हुए तेजपाल ने माथा सिकोड़कर पूछा, "तभी आजकल उसके फ्लैट से तबला-वबला बहुत सुनाई देता है।"

"तबला नहीं, मृदंगम्।" रुद्रा ने अपने उसी मज़ाकिया चेहरे से कहा, "तुम्हें नहीं मालूम, आजकल मेम और साहब दोनों को डान्स सीखने का बड़ा शौक लगा है, जब देखो तब नाचते रहते हैं।"

"हुँह, इन साउथ-इण्डियन्स का भी दिमाग़ ख़राब होता है।" सिर झटककर तेजपाल बोले, "परेड करना छोड़कर अब उदयशंकर बनने की धुन लगी है।"

"उदयशंकर बनने की क्या बात है अपनी-अपनी हॉबी है।" गुड्डी के कान में 'कू' करना छोड़कर एकदम मिसेज़ तेजपाल बोल पड़ीं, "अगर अँग्रेजी डान्स की प्रैक्टिस करना बुरा नहीं है तो अपने डान्स की प्रैक्टिस करना क्या बुरा है। ये तो अपनी-अपनी हॉबी है।"

"आई सैड, डैम हॉबी," तेजपाल ने हाथ झटके, "ये औरतों की तरह हाथ-पाँव मटकाना अच्छी हॉबी है! अरे, कोई और काम नहीं हो तो टेबिल-टेनिस खेलो। सच बात है, इनका खाना, रहना-सहना कभी मेरी समझ में नहीं आया। ये लोग कैसे रहते हैं? उस दिन हमें लंच पर बुलाया, रसं···भातं—जाने क्या-क्या लाकर रख दिया। मेरी तो सारी भूख देखते ही हवा हो गई। आई सैड, यार तुम हमें ऐगपोच और दो स्लाइस मँगा दो, यह सब हमसे नहीं चलेगा। ये तो बैठी-बैठी शौक से खाती रहीं। इनको कुछ दे दीजिए, आप सब खा जाती हैं।"

"मान लीजिए, अच्छा न भी लगे, लेकिन होस्ट के मुँह पर यह सब कहा जाता है?" मिसेज़ तेजपाल ने मानो तड़पकर कहा, "बेचारों ने इतने शौक से तैयारी की···"

यों तो मैं बहुत प्रसन्न नहीं था, लेकिन न जाने मुझे उनका यह पक्ष लेना और अपनी पतली कलाई उठा-उठाकर ज़ोर देकर बात कहना सब बड़ा

बनावटी-सा लगा। मुझे कभी-कभी स्वयं आश्चर्य होता है कि कैसे इस दिखावटी स्त्री के प्रति मेरा दिल इतनी हमदर्दी से भर गया था और कैसा इसका वह सम्मोहन था कि उस संध्या के बाद मैं जाने-अनजाने, हर क्षण उसी के बारे में सोचा करता था। शायद उस दिन की छाप मन की तहों में कुछ ऐसी गहरी समा गई थी कि मुझे लगता, गुलाबी सर्दी की दोपहर में मैं मिसेज तेजपाल के साथ लेक की किसी एकान्त बेंच पर बैठा हूँ और सामने नाव चलाना सीखने वाले अपनी सफेद बनियान-जाँघिये की ड्रेस में पतली-सी नाव पर तीर की तरह गुजर जाते हैं। एक साथ चप्पू कातर के पाँवों की तरह उठते हैं और हथेली में पानी उछालते आगे झपट पड़ते हैं—बाँहों की मछलियाँ तड़प-तड़पकर रह जाती हैं। धूप में चिलकते पानी से मिसेज तेजपाल की आँखें चौंधिया रही हैं, इसलिए उन्होंने भौंहों पर हाथ लगाकर आड़ कर ली है और हम लोग चुपचाप बैठे हैं। कभी लगता, पहाड़ पर घाटी के किनारे बने बरामदे में खिड़की के बन्द शीशों के पास हम लोग बैठे-बैठे चाय पी रहे हैं और वे जाने क्या-क्या लगातार बोले चली जा रही हैं। सारी घाटी गहरे-घने सुरमई कोहरे से छाई हुई है और शीशों को छू-छूकर वह कुहरा बूँद-बूँद में पिघल उठने वाली भाप की तरह जम गया है, बड़ा अजब अवास्तविक-सा वातावरण है। और भी इसी तरह की जाने कितनी तस्वीरें थीं जो उन दिनों हर समय नाचा करती थीं। मैं जानता था कि वे तस्वीरें सच नहीं हैं; लेकिन उन सपनों को मैंने इतनी बार दुहरा-दुहराकर मन में बसा लिया था कि लगता था वे सब बीती हुई सच घटनाओं का पुनरावलोकन ही है। जाने कितने प्रश्न थे जिनको मैं मन ही मन उनसे पूछता, उनके उत्तर की कल्पना करता और प्रतिक्रिया या प्रभाव ग्रहण करता।

इस समय मिसेज रुद्रा की टेढ़ी-टेढ़ी, शायद हल्की घृणा से भरी निगाहों को, जिनसे एक साथ वे पुरुषों की मिसेज तेजपाल के प्रति भावनाओं को भी तोल रही थीं, देख-देखकर स्वयं आश्चर्य होता था कि क्या सचमुच मैंने वे सारी बातें इन्हें ही लेकर सोची थीं। उनका सारा पल्ला बाँह पर पड़ा था। कोई मजाक की बात कहने के लिए रुद्रा की बटर-फ्लाई मूँछें बार-बार फड़ककर रह जाती थीं। वे बोले, "खैर मिसेज तेजपाल, आपको

क्या है ? आप तो भारतीय हैं नहीं, आपको भरत-नाट्यम से क्या लेना-देना ? आप चाहें तो थोड़ी-बहुत मनीपुरी की तारीफ़ कीजिये । और इस वक्त तो सबसे बड़ी बात यह है कि हम लोग ग्रामोफ़ोन जानबूझकर नहीं लाये हैं।"

और फिर सब लोग हँस पड़े। उनके गालों के गड्ढे गहरे हुए और वे गुड्डी की कलाइयों को अपने हाथ में लेकर उसकी नन्ही-नन्ही हथेलियों से ताली बजाती हुई बोलीं, "आप कुछ कहिये, हमारी गुड्डी कहेगी तभी गायेंगे। है न गुड्डी ? देख गुड्डी, वो पुल···"

हुगली के दोनों किनारों पर पाँव रखे सामने पुल खड़ा था । इस बात को हम भी जानते थे कि गुड्डी को खिलाने के बहाने वे जान-बूझकर अपने कपड़े अस्त-व्यस्त हो जाने देती हैं। जब वे बाहर की ओर मुड़कर गुड्डी को कोई चीज दिखातीं तो उनकी बीच की नाली के दोनों ओर उभरी केले के नये चौड़े पत्ते-सी पीठ एक अजब आकर्षक मरोड़ खाकर हमारी ओर आ जाती और उस समय मेजर तेजपाल दाँतों से नाखून कुतरते हुए बाहर देखने लगते। बड़ी बेचैनी हम सभी लोग महसूस करते ···अचानक अब वे वहीं धीरे-धीरे गुड्डी को गाना सुनाने लगी थीं।

उनकी इस 'बेशर्मी' को महिलाओं ने किस रूप में लिया, यह बीनू से सुनने को मिला, थोड़ी देर बाद।

सारी महिलाओं ने जब एक स्वर से ब्रिज की मुखालफत की तो झुँझलाकर तेजपाल और रुद्रा शतरंज खेलने बैठ गये। आज पिकनिक का विशेष कार्य-क्रम यह था कि रणधीर छोटी बंदूक से महिलाओं को निशाना लगाना सिखायेगा। सभी जानते थे कि अगर ये लोग ब्रिज पर बैठ गये तो शाम तक न तो खाने का नम्बर आयेगा, न निशानेबाज़ी का। बीनू ने रणधीर को पहले ही पक्का कर लिया था। यही सोचकर रणधीर ने भी ख़ास उत्साह नहीं दिखाया। वहीं पास ही ईंटों का सफरी चूल्हा बना लेने के बाद

गोमेज चूल्हा और स्टोव साथ-साथ जलाकर अपनी दूकान फैलाकर बैठ गया। तेजपाल सीधी टाँगे फैलाये अधलेटे थे और दोनों हाथों में फ्लास्क उठाये गट-गट पानी पी रहे थे और रुद्रा उभरती खुशी को अँगुली से मूँछों के ऊपर खुजाकर छिपाये हुए थी। इससे साफ था कि बाजी कड़ी पड़ गई है।

इसके बाद वह घटना हो गई कि सारी पिकनिक ने दूसरा ही रूप धारण कर लिया।

हम सब लोग वहाँ से हटकर ऐसी जगह आ गये थे जहाँ सामने एक टूटी-फूटी बाउण्ड्री की मोटी-सी दीवार थी। बीच में घास बिछा छोटा-सा मैदान था, जो कि थोड़ी दूर जाकर एक ओर ढालू हो गया था। नीचे जहाँ यह ढलान खत्म होता था वहाँ से काफ़ी लम्बा-चौड़ा ताल था और उसके काई लदे किनारों पर घास-सिवार के बीच-बीच में छोटे-छोटे ढेर-से कमल खिले थे। ताल के दूसरी ओर कुछ औरतें और बच्चे कमर-कमर पानी में डूबे, जाल मढ़े ढप जैसे लिए हुए मछलियाँ पकड़ रहे थे। उन्होंने छोटे-छोटे बर्तन या घड़े इधर-उधर तैरा दिये थे और पकड़ी हुई मछलियाँ उनमें डालते जाते थे। गुड्डी ने फूल लेने की जिद की तो मिसेज़ तेजपाल उसका हाथ पकड़कर उसे वहाँ भगा ले गई थीं। दोनों के हाथों में रंग-बिरंगे गुब्बारे थे और दोनों किनारे पर खड़ी बड़े मुग्ध भाव से मछलियों का पकड़ना देखती रहीं। गुड्डी कुछ पूछ रही थी और वे बताती जाती थीं। ऐसा लगता था जैसे गुड्डी का ही 'एनलार्ज्ड फ़ोटो' साथ खड़ा कर दिया गया हो।

निशानेबाजी की क्लास शुरू करने के लिए रणधीर ने किटबैग से टारगेट, गोलियों का डिब्बा और फीता निकाल लिया था। सबसे पहले उसे समझाना था बन्दूक के हिस्से और मशीन की बनावट। मूँगफली खाती हुई मिसेज रुद्रा और बीनू इधर-उधर उत्सुक विद्यार्थियों की तरह आकर बैठ गई थीं। मिसेज़ तेजपाल को बुलाना था, वर्ना उन्हें दुबारा समझाना पड़ेगा। बीनू ने दोनों हाथों का भोंपा-सा बनाकर पूरे दम से पुकारा, "मिसेज़ तेजपाल गुड्डीऽऽ।" और इसी में उसके गले की सारी नसें उभर आईं। झेंप मिटाने को बोलीं, "उनको तो गुड्डी

ऐसी भा गई जैसे दोनों न जाने कब की सहेली हों। जाने आपस में क्या बातें किया करती हैं।"

"गुड्डी भी तो उनके लिये जान छोड़ती है।" अपने बड़े-बड़े दाँतों को ढकने की चिन्ता किए बिना ही, खिलकर मिसेज़ रुद्रा बोलीं, "नीचे ज़रा-ज़रा-सी देर बाद कहेगी, ममी, आण्टी के यहाँ चलो। जहाँ मैंने कहा, "वहाँ मेजर तेजपाल हैं, बस वहीं सहमकर चुप। उनसे और किटी से अभी इसकी दोस्ती नहीं है।"

"हैं ही डरावने।" बीनू ने रणधीर की ओर सहमी निगाहों से देखते हुए मुस्कराकर कहा। वह टारगेट की झण्डी हाथ में लिये लगातार तालाब की ओर देखे जा रहा था।

देखा, गुड्डी को दौड़ाती हुई मिसेज़ तेजपाल दौड़ी चली आ रही हैं। रणधीर मुग्ध आँखों से उधर देखता रहा। फिर जैसे अनायास ही उसके मुँह से निकला, "कुछ भी कहो, कम्बख़्त का एक-एक अंग साँचे में ढला है!" इधर भागकर आते हुए उनकी साड़ी शरीर से चिपककर पीछे उड़ने लगी थी और एक विचित्र अतीन्द्रिय-स्पर्श उनके शरीर को दिए दे रही थी। पीछे उड़ती साड़ी से दोनों पाँवों, कमर, धड़—सबकी बनावट और गठन अधिक स्पष्ट रूप में इस तरह उभरकर धूप में दिखाई दे रही थी जैसे खिले गुलाब की क्यारियों पर कुहरे का झीना नीला-नीला जाला हिलोरें ले रहा हो। बात सबके मन में यही थी, लेकिन रणधीर ने उसे खुलकर शब्द दे दिए थे, "हिरन की तरह कुलाचें भरती घूमती हैं।"

अगले ही क्षण मिसेज़ रुद्रा की निगाह बीनू के खिसियाये चेहरे पर जा पड़ी। वे बोलीं, "कुछ कहिये, मेजर धीर, बुरी तो बीनू भी नहीं हैं। यह तो बेशर्मी है। ऐसे कपड़े पहनने से फायदा ही आख़िर क्या है?"

तब शायद रणधीर को ध्यान आया कि उन्होंने मिसेज़ रुद्रा और बीनू के सामने ऐसी बात कह दी जो शायद अनुचित और अशिष्ट है। वह अपनी सकपकाहट सँभालता प्यार से बीनू के कन्धे पर हाथ रखकर बोला, "हमारी बीनू लाखों में एक है।"

"हटाइए हाथ।" बीनू ने लज्जा और अपमान से उसका हाथ झटक दिया। जैसे घुटकर बोली, "घर की मुर्गी दाल बराबर। इधर-उधर न

ताकें तो आदमी ही किस बात के !" उसकी आँखें झलझला आईं।

हालाँकि बीनू को मैंने डाँटा, "बीनू यह क्या बेवकूफ़ी है। मज़ाक भी नहीं समझती ?" लेकिन उसकी बात मुझे भीतर छू गई। उसकी बात में मिसेज़ रुद्रा जैसी न तो सालती ईर्ष्या थी, न आक्षेप। आत्महीनता की एक ऐसी घुटती कचोट थी जो मेरे मन को चीरती हुई चली गई। मिसेज़ तेजपाल की 'लापरवाही स्वच्छंदता' ने दोनों महिलाओं को कितने भीतर तक मथ डाला है, इसका अहसास मुझे उस क्षण हुआ तो बड़ी दया आई। पता नहीं यह मेरे मन का पक्षपात था या कमज़ोरी; मुझे उन पर क़तई क्रोध नहीं आ रहा था और साथ ही रणधीर का ढीलापन भी अच्छा नहीं लग रहा था।

कभी वे दौड़ने में आगे निकल आतीं तो चाल धीमी करके गुड्डी को बराबर आ जाने देतीं। गुड्डी के पाँव आड़े-तिरछे पड़ रहे थे। अँगुली पकड़ाये वह लुढ़कती-सी दौड़ी आ रही थी। जाने क्यों मुझे लगा—किटी के साथ मिसेज़ तेजपाल का दौड़ना और यह गुड्डी के साथ दौड़ना कहीं किसी अदृश्य-सूत्र से अन्तर्ग्रथित है। यों देखने में यह दृश्य ठीक उल्टा था। किटी उन्हें इस तरह खींचकर जहाँ चाहे ले जाती थी जैसे वे सिर्फ़ उसकी इच्छा से चल रही हों और यहाँ वह गुड्डी के साथ बच्ची बनी उसके साथ चली आ रही थीं। उस समय मैंने नहीं सोचा था कि यह दृश्य मन में इतनी गहराई से अंकित हो जायेगा और मिसेज़ तेजपाल के नाम के साथ यही चित्र उभरा करेगा या उनके सारे चरित्र को एक नया अर्थ दे देगा।

"ममी, आण्टी ने हमें दौड़ाया।" गुड्डी अपनी माँ से जा चिपकी। "ये फूल दिये।" उसके एक हाथ में दो-तीन फूल थे। पता लगा कि उन लड़कों से गुब्बारों के बदले यह सौदा स्वयं गुड्डी ने किया था। वह हाँफ रही थी।

"हम तो तुम्हारे लिए कमल-गट्टे तुड़वा रहे थे। बुलवा क्यों लिया हमें ?" हाँफती हुई मिसेज़ तेजपाल आसमान से उतरी परी की तरह एक हाथ से बाल सँवारती सामने खड़ी थीं। आँखें झपकाकर मैंने देखा और देर तक मन-ही-मन सोचता रहा—सचमुच, कैसे कोई इन पर क्रोध कर

सकता है ?

"आइये, पहले यह काम खत्म कर लें। फिर वे लोग खाने को बुला-येंगे।" रणधीर को बात शायद चुभ गई थी। अपराधी की तरह आँखें नीची किये वह रूमाल से बन्दूक का 'बट' (पीछे का हिस्सा) साफ़ करता रहा।

इसके बाद अपने चारों ओर हमें बैठाकर जितनी देर रणधीर ने बन्दूक के पुर्जों, बन्दूक चलाने के क़ायदों के बारे में समझाया, शायद ही उन्होंने आँख उठाकर देखा हो। फ़ीते से दूरी नापकर टारगेट पलैग गाड़े गये। ग़लती से कोई आने-जानेवाला उधर से न आ निकले, इसलिए एक आदमी को दीवार के पीछे भेजना था। "मैं जाऊँगी। आओ गुड्डी, हम चलें।" मिसेज़ तेजपाल बोलीं तो गुड्डी फिर उनकी टाँगों से जा चिपकी। "ममी से टा-टा बोलो।" मुझे फिर अपने को विदा देती उनकी मूर्ति दिखाई दी।

"ममी टा-टा !" गुड्डी ने कहा और वे दोनों लुढ़कती-पुढ़कती-सी सामने दौड़ चलीं—जैसे किसी विशाल रेतीले किनारे पर दूर चली जा रही हों।

"अरे मिसेज़ तेजपाल, इतना मत खिलाओ भाई। बाद में रोती है।" बड़े अनुनय-भरे स्वर में पीछे से मिसेज़ रुद्रा बोली। और जब बिल्कुल लम्बे, दण्डवत् की मुद्रा में, लेटकर कुहनियाँ धरती पर और बट कन्धे पर टिकाकर रणधीर ने निशाना लेना सिखाने के लिए कहा—'रेडी'—तो दीवार के पीछे से लहराता-सा स्वर उठा, 'मेरा तन डोले, मेरा मन डोले, मेरे दिल का गया क़रार, यह कौन बजाए बाँसुरिया···'

हम लोग एक-दूसरे की ओर देखकर मुसकराये। मुझसे फिर हँसे बिना नहीं रहा गया, "सचमुच बड़ी मस्त हैं।" तभी आँखों के आगे सहसा गोलियों का फूल कौंधा। किसी ने भीतर सुधारा—"मस्त नहीं, हिम्मत-वाली !"

महिलाओं के लिए तो बन्दूक़ हाथ में लेकर निशाना साधना ही एक अभूतपूर्व रोमांचकारी अनुभव था। हरेक को तीन-तीन गोलियाँ चलानी थीं। मिसेज़ रुद्रा और बीनू की छह गोलियों में से मुश्किल से दो बाहरी

वृत्त के कोने पर लगीं लेकिन दोनों ऐसे उल्लास से भरी काँप रही थीं मानो किसी बड़ी भारी दौड़ में प्रथम आई हों। मिसेज़ तेजपाल का नम्बर आया तो आवाज़ देकर उन्हें बुलाया गया। वे उसी अलमस्त और अल्हड़ चाल से टॉफ़ी कुतरती आईं और निःसंकोच लेट गईं। गुड्डी को उधर ही छोड़ आई थीं। इस बार मिसेज़ रुद्रा के साथ 'मैं भी चलती हूँ' कहकर बीनू भी चली गई। रणधीर ने उनकी कुहनियों को ढंग से धरती पर टिकाया, बन्दूक़ दी, और निशाना साधने के लिए उनके सिर से सिर मिलाकर, उनके स्पर्श को अधिक-से-अधिक बचाते हुए उनपर झुक गया। बन्दूक उसने उनके पंजों के ऊपर से खुद भी पकड़ ली थी। "देखिए, मिसेज़ तेजपाल, काँपिये मत। आप बहुत ज्यादा 'एक्साइटेड' हो रही हैं।" एक आँख टारगेट पर टिकाकर रणधीर बोला। हालाँकि खुद उसके नथुने फड़कने लगे थे। कान की लवें लाल हो आई थीं। फिर भी वह आश्चर्यजनक रूप से संयत दिखाई दे रहा था। इस दृश्य को देखना बड़ा दिलचस्प था। मेरे भीतर कहीं बहुत गहरे में इच्छा हुई, काश! मैं भी यों इन्हें गोली चलाना सिखा पाता। आश्चर्य की बात यह कि उस समय मैं यद्यपि काफी पीछे था और रणधीर की ठोड़ी उनके सिर पर रखी-सी थी, लेकिन मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मेरी ठोड़ी वहाँ रखी है और उनके बालों की भीनी-भीनी गन्ध मेरे मस्तिष्क में समाई जा रही है और उनके नाइलोनी कपड़ों के सजीव पारदर्शी स्पर्श ने मुझे रोमांचित कर डाला है; उनकी शरीर की गन्ध का जादू मेरे चारों ओर लहरा उठा है। मैं साँस रोके उस अनुपमेय अनुभूति को पीता रहा।

"मिसेज़ तेजपाल, आप बेकार देर लगा रही हैं।" मुझे सहसा रणधीर का झुँझलाया स्वर सुनाई दिया। देखा, रणधीर ने सिर घुमाकर एक उड़ती-सी नजर उस ओर डाली जहाँ धरती के उठाव के पार पेड़ों की आड़ में तेजपाल और रुद्रा शतरंज खेल रहे थे।

"कैसे पकड़ें, बताइये न?" नाक के स्वर में वे बोलीं।

और जैसे-ही अँगुली पर अपनी अँगुली रखकर रणधीर ने घोड़ा दबाया कि उन्होंने बन्दूक़-वन्दूक़ छोड़कर हथेलियाँ कानों पर रख लीं, "उई!" वे चीख उठीं।

"धाँय !" के साथ देखा—सामने एक तेरह-चौदह साल का लड़का हक्का-बक्का खड़ा है।

"हाय।" सबके मुँह खुले रह गये। अभी एक क्षण में गज़ब हो सकता था, यह सभी के सामने बिजली की तरह कौंध गया।

रणधीर झटके से उठ खड़ा हुआ और उसने अपनी बन्दूक एक ओर फेंक दी।

"यह क्या मिसेज तेजपाल ? अभी गज़ब हो जाता न। आपको हर वक़्त बचपना···सारी पिकनिक रखी रह जाती।" दाँत पीसकर झुँझलाया वह आगे झपटा और सारा गुस्सा उस लड़के पर उतार डाला। अन्धाधुन्ध तीन-चार झापड़ जड़ दिये, "यहाँ क्यों आया ? आवाज़ देनी चाहिए थी। तुझे भेजा किसने यहाँ ?"

लड़का खुद भौंचक्का होकर स्तब्ध-सा रह गया था। हकला-हकलाकर टूटे-फूटे स्वर में उसने कहा कि "मेमसा'ब लोगों ने कहा, सा'ब को खाने को भेज दो।"

"कहाँ हैं मेमसा'ब ? साले खुद मर जाते और हमें मुसीबत में डाल जाते।" और उसकी कुहनी पकड़कर घसीटता रणधीर उसे दीवार के पीछे ले गया। मुड़कर मुझसे कहता गया, "गन और कार्टिलेज लेते आना।"

"अभी-अभी अगर दुर्घटना हो गई होती ? इस बात की कल्पना अनेक भयंकर रूपों में सामने आ रही थी। मिसेज़ तेजपाल पहले तो आँखें फाड़े बुद्धू की तरह रणधीर को देखती रहीं और फिर घुटनों में सिर गड़ाकर सिसकने लगीं। इस समय मुझे उनपर कोई दया नहीं थी—उनके ज़रा-से खिलवाड़ में एक जान जा सकती थी। लेकिन इस लड़के को भी आख़िर यहाँ आ मरने की क्या ज़रूरत थी ? बीनू वग़ैरा ने आखिर इसे वहाँ रोका क्यों नहीं ? मैंने सहमते हाथों से बन्दूक़ इस तरह उठा ली जैसे इस सारे सम्भावित भयंकर कांड की जिम्मेदारी मेरे ऊपर हो, और कहीं मूल रूप से अपराधी मैं हूँ। बन्दूक से डर लगता था कि कहीं चल न जाये। आदमी ने अपने-आपको मारने के लिए भी कैसे-कैसे हथियार बना लिए हैं। सीसे की इंच भर गोली और पिछला और अगला सारा इतिहास

एक क्षण में समाप्त ! कैसी आसानी से लोग पलक मारते ही दूसरे का अस्तित्व समाप्त कर डालते हैं; कभी नहीं सोचते कि हर जीवन के साथ उनके अपने जीवन की तरह ही इतिहास, भावनायें, सम्पर्क और सम्बन्ध होते हैं । सब सामान उठाकर मैंने कहा, "ख़ैर, जो हुआ सो हुआ, मिसेज़ तेजपाल···"

वे कुछ नहीं बोलीं । उनके बाल उनकी बाँहों पर बिखरे रहे । सिर दो-एक बार काँपा ।

"अब छोड़िये, लेकिन आपको ऐसा नहीं करना चाहिए था ।" मैं उनके बिलकुल पास आ खड़ा हुआ । झुककर कुहनी पकड़कर उठाते हुए संकोच से बोला ।

उन्होंने घुटे स्वर में रुँधे गले से कहा, "तुम चलो ।" और सिर उठाकर कुछ ऐसी निरीह कातर निगाहों से देखा कि मैं उन्हें संभलने को छोड़कर इस तरह चला आया जैसे मैं ही किसी को मारकर आ रहा हूँ । धूप चुभने लगी थी । इस समय मुझे उनसे पहले जैसी कोई हमदर्दी नहीं थी लेकिन मुझे लगा जैसे यह षड्यंत्र बीनू और मिसेज़ रुद्रा का बनाया है ।

देखा मेजर तेजपाल और रुद्रा की शतरंज चालू थी । रुद्रा बार-बार बैठक बदल रही थी और उनके जबड़े की हड्डी कनपटियों पर तेज़ी से चल रही थी । तेजपाल सिगरेट के टिन पर ताल दे रहे थे । बीनू और मिसेज़ रुद्रा स्नैप्स लेने में मशगूल थीं । गोमेज़ सबके घरों से आये टिफिन कैरियरों को खोल-खोलकर प्लेटें लगा रहा था । रणधीर लड़के का कान पकड़े खड़ा बुरी तरह उन्हें डाँट रहा था, "आप लोगों को वहाँ से आने की जरूरत क्या थी ? कम से कम आवाज़ देकर आतीं । ज़ुबान तो थी । ज़रा-सी देर नहीं बैठा जाता था ? अभी यह साला मर जाता तो ? कोई काम कितना सीरियस है, तुम लोगों को कभी समझ में नहीं आयेगा !"

लेकिन मैंने देखा जैसे रणधीर का स्वर कहीं दब रहा था । बीनू थोड़े उद्धतभाव से गाल फुलाये कैमरा बन्द कर रही थी । पता चला, गोमेज़ ने बर्तन वग़ैरा धोने के लिए उस लड़के को यहीं से पकड़ लिया था । जब सब तैयार हो गया तो उनसे कह आने के लिए उसे भेजा कि 'सा'ब बुलाता

है ।' इन लोगों ने सोचा कि ज़रा-सी देर में इधर कौन आता है, ये उठकर चली आईं। उस कम्बख़्त को भी पहले वे ही मिलीं। उन्होंने लड़के से कहा कि यहाँ बैठ जाओ, जब तीन गोलियाँ चल जाएँ तो बुला लाना, दीवार के उस पार से सा'ब को। शायद बात उसने पूरी समझी नहीं, थोड़ी देर बैठा और फिर बुलाने को दौड़ पड़ा।

"ओए, की होंदा पेया यारा?" मस्ती में आकार तेजपाल बोले। उनका वज़ीर दुश्मन के व्यूह में घुस गया था और सफलतापूर्वक कई मुहरें मारकर ऊँट के ज़ोर में शह देने की तैयारी कर रहा था। वे शराबियों की तरह हाथ फैलाकर बोले, "मरा तो नहीं? अब छोड़ो, उन बेचारियों की जान क्यों आफ़त में किये हो? और अगर मर ही जाता तो कौन सारी दुनिया सूनी हो जाती।"

मैं बन्दूक इत्यादि वहीं रखकर बैठ गया और शतरंज देखने लगा। मन में खटक लग रही थी कि मैंने मिसेज़ तेजपाल को न लाकर ग़लती की। कम से कम एकाध बार और मुझे उनसे अनुरोध करना चाहिए था। वे बेचारी वहाँ बैठी रो रही हैं। रणधीर बोला, "बात मरने की नहीं है, यह तो इनकी लापरवाही की बात है। एक काम दिया सो वह भी ठीक से नहीं किया गया।"

"यार धीर, तू तो एक बात के पीछे पड़ जाता है। अब जो नहीं हुआ उसे लेकर क्यों जान खाये जा रहा है?" तेजपाल झुँझला उठे, "हमने सैंकड़ों मार दिए। कोई साला पूछने वाला था?"

"लेकिन लड़ाई की बात और है न?" गम्भीर स्वर में रुद्रा ने हथेली पर धीरे-धीरे ठोढ़ी ठोंक-ठोंककर कहा। उनकी कनपटियों की हड्डियाँ जिस तरह चलती थीं, उससे जाने क्यों ख़याल होता था कि उन्हें बुरी तरह शराब पीने की आदत है।

"लड़ाई में नहीं जी, एकाध तो यों ही निशाना देखने को ख़त्म कर दिया।" तेजपाल उत्साह से बोले। उनके चेहरे और आँखों में बड़े क्रूर क़िस्म की चमक लपक उठी थी। "जिन दिनों हम लोग चाँदमारी किया करते थे उन्हीं दिनों की बात है। किसानों से हमने खेत ले रखे थे, उनके चारों तरफ़ अपने हिस्से में कँटीले तार खींचकर बाउण्ड्री बना ली थी।"

वे मुझे सबसे अधिक दिलचस्पी लेते हुए देखकर मुझे ही सुनाने लगे, "वह हमारी राइफ़िलों का रेंज (सीमा) था। उसके भीतर आने की लोगों को मनाही थी। क्योंकि अगर उसके भीतर गोली लग जाती तो कोई ज़िम्मेदारी किसी की नहीं थी। यों ही एक दिन चाँदमारी कर रहे थे कि देखा, एक बुड्ढे की भेड़ें दूर कँटीले तारों में घुस आईं। अपने हाथ के डण्डे से कँटीले तार उठाकर बुड्ढा भी उनके पीछे-पीछे उन्हें घेरता हुआ घुस आया। मैं देखता रहा, देखता रहा। जब भेड़ें हाँककर वह बाहर निकल गया और तारों में फँसे डण्डे को निकालने लगा तो मेरे मन में आया देखें तो सही राइफ़ल का रेंज उसके बाहर तक है भी या नहीं। मैंने कहा—"एक तमाशा ही सही। एक सचमुच की डमी ही सही। मैंने राइफ़िल सीधी की और धाँय से निशाना दाग दिया।"

"फिर ?" मेरा मुँह खुला का खुला रह गया।

"फिर क्या ? साला टें बोल गया। गोली पसली के पार हो गई। ट्वेल्व बोर की गोली खाकर साँस ले सकता था कहीं ? कद्दू की तरह लुढ़क गया।" वे अपने गाल फुलाकर दोनों हथेलियों को आपस में इस तरह ममलते रहे जैसे पानी में हाथ धो रहे हों।

"फिर कुछ नहीं हुआ ?"

"होता क्या ?, साले की टाँग खींचकर भीतर तारों में कर लिया। कह दिया, भीतर घुस आया था, और वहाँ पूछता कौन है ?" रुद्रा ने चाल चल दी थी अतः अत्यन्त इतमीनान से तेजपाल अँगुलियाँ नचाते हुए अगली चाल तय कर रहे थे। बोले, "यार, सब दीख रहे हैं। हमारी बीबी नहीं दीख रही। किधर गई ?"

"उधर बैठी अफ़सोस कर रही हैं।" रणधीर कड़वाहट से बोला।

जो आदमी सिर्फ़ मज़ाक के लिए किसी की जान ले सकता है, उसे मैं फटी-फटी आँखों से देखता रहा, जी बहुत ख़राब हो आया था और मन होता था कि पास पड़ी बन्दूक उठाकर मैं भी एक 'फन' देख लूँ कि इनके उठे-उठे बालों के गुच्छे वाले कान। गोली लगने पर कैसे लगते हैं। बन्दूक का बट उनके टेंटुए पर रखकर दबाने की तड़पन भीतर मचल-मचलकर रह जाती थी। मैं बैठा-बैठा भुनता रहा, लेकिन वे निहायत निरुद्विग्न भाव

से खेलते रहे। मुझे उनकी आँखों और नाक की जगह बन्दूक़ की गोलियाँ रखी दिखाई दीं। और लगा जैसे चेहरा लाल फ़ैल्ट का टुकड़ा हो··· गोलियों का फूल···जिसमें सेकिण्ड की सुई पलीता लगाती गोल-गोल घूम रही हो···जिसके दोनों ओर पत्थर की आँखों वाले मुर्दा बारहसिंघे के सिर लगे हों।

"यार, उस कमबख़्त के नाज़ुक दिल के मारे हम परेशान हैं। जो बात नहीं हुई, अब उसके लिए घण्टों रोयेगी। इतना समझता हूँ कि तू आख़िर मेजर की बीवी है। कुछ तो दिल कड़ा कर, लेकिन समझ में ही नहीं आता।"

मैंने देखा, उनका चेहरा आश्चर्यजनक रूप से कोमल हो उठा। वे हथेली टेककर उठे और फिर दोनों हथेलियाँ झाड़कर बोले, "भई, एक मिनट में आता हूँ। ज़रा धीर, देखना, ये मुहरे इधर-उधर न कर दें। है किधर वो?"

रणधीर ने अँगुली उठाकर इशारा कर दिया, और वे झूमते-झामते कपड़े खड़खड़ाते उधर चले गये। सादा कपड़ों में भी जब वे चलते थे तो ऐसा लगता था जैसे वर्दी पहने हों। देखा तो थोड़ी देर बाद ही मिसेज़ तेजपाल की बाँह को अपनी बाँह मे दाबे, वे उन्हें लिये चले आ रहे हैं; उनकी घड़ी का डायल धूप में चमक रहा है। रूठे बच्चे की तरह वे जैसे अनिच्छापूर्वक झेंप से मुसकराती खिंची चली आ रही हैं। उनकी आँखें लाल थीं और वे बार-बार नाक सुड़क रही थीं। बिन्दी बिगड़ गई थी। दूसरे हाथ से कभी-कभी कान के ऊपर बाल ठीक कर लेती थीं। तेजपाल का चेहरा खिला था। तब मैंने जाना, तेजपाल कहीं भीतर गहराई में उन्हें बहुत प्यार भी करते हैं।

लेकिन उस क्षण मात्र गहरी काहिया वर्दी में रंग-बिरंगे रिबन लगाये मेजर तेजपाल और आसमानी कपड़ों में फूटे-पड़ते निष्कलुष सौन्दर्य की आभा को देखकर किसी ने मन में ही बहुत जोर से दुहराया···ब्यूटी एण्ड द बीस्ट?···

पिकनिक फिर कैसी हुई, मुझे पता नहीं। मेजर तेजपाल का चेहरा देखकर मुझे उबकाई-सी आती थी। उनकी कनपटियों पर सफ़ेद होते

बाल बड़े भद्दे लगते थे और बालों से भरी कलाई पर घड़ी का चौड़ा-सा डायल हाथ घुमाते ही झलमला उठता था और जिसमें अंकों की जगह सुनहरी बिन्दियाँ रखी थीं और सेण्टर सेकिण्ड की लाल सुई निरन्तर घूमती रहती थी···मैंने जब-जब उसे देखा तो लगा जैसे कोई परिचित चीज याद आ रही है···जैसे इस घड़ी के सुनहरे बिन्दियों वाले डायल और लाल सुई का किसी चीज से निकट सम्बन्ध है···तभी एकाएक वह गोलियों का फूल स्मृति में कौंध गया···घड़ी के सुनहरे अंक गोलियों के पीतल के शरीर की याद दिला गये थे···फिर न जाने क्यों ऐसा लगा जैसे सैकिण्ड की लाल सुई ऐसी जलती तीली है जो एक-एक अंक को जलाती हुई निकल जाती है !···और तब कल्पना में गोलियों का फूल आतिशबाजी की चरखी की तरह जलता हुआ घूमने लगता था···और हर बार कोई कहता था—यह आदमी अपने मनोरंजन के लिए हत्या को स्वीकार कर चुका है···जाने कितनी और की होंगी···और···

आज मैं सोचता हूँ कि रणधीर ने ठीक कहा था। वह आदमी जरा-सी बात में बेझिझक मुझे गोली मार सकता था। सच बात तो यह है कि उस दिन से मैं उनसे मन ही मन दहशत खाने लगा था। लेकिन मैं क्या सचमुच मिसेज तेजपाल को लेकर कोई ख़तरनाक खेल खेल रहा था ? जहाँ तक स्मृति को कुरेदकर देखता हूँ लगता है, ऐसा तो नहीं है। वे मुझे अच्छी लगती थीं, क्योंकि उनकी सुन्दरता और सजीवता के जादू से मैं अपने-आपको मुक्त नहीं कर पाता था। इस बात को वे भी जानती थीं और निगाहें मिलते ही हम दोनों इस तरह मुसकरा उठते थे जैसे किसी व्यक्तिगत और साझे के रहस्य के दोनों हिस्सेदार हैं। उनके कुछ कमजोर और भावुक क्षणों में मैंने उन्हें देखा था। और यही हमारी आत्मीयता थी। मुझे तेजपाल पर क्रोध आता; मिसेज तेजपाल पर—जिनका नाम मैं आज तक नहीं जान सका, दया आती थी, उनके प्रति हमदर्दी होती

थी···आज भी ऐसा लगता है जैसे जाने-अनजाने पोजों में उनका चेहरा, वह बाल झटकारने का ख़ास अन्दाज़, सभी कुछ मेरे सामने साकार हो उठे हों। मुझे मन-ही-मन इसपर भी गर्व था कि उनके और मेरे बीच में कहीं कोई नाजुक, गहरा और शायद मधुर समझौता है। हम लोग मित्र हैं, लेकिन बस, इसके आगे और कोई बात मेरे दिमाग़ में नहीं आती। मैं मानता हूँ कि उनका शरीर-सौन्दर्य आँखों को बाँध लेता था और उनमें वह चीज़ कूट-कूटकर भरी थी जिसे अंग्रेज़ी में सेक्स-अपील कहते हैं। लेकिन उनके शरीर-सौन्दर्य में कुछ था जो जाने किन स्वप्नों के रहस्य-लोकों में मन को पहुँचा देता था। उनकी बच्चों जैसी हरक़तें बिलकुल बनावटी हैं, यह जानकर भी मन में उन पर क्रोध नहीं आता था। ख़ैर जो भी हो, तेजपाल से मैं कतराता था और उनकी उपस्थिति में प्रायः मुझे बड़ी बेचैनी अनुभव होती थी। अब इसे समय का प्रभाव कहिए या कुछ और कि जैसे ही मैं उनके सामने से हटा कि मन पर पड़ी उनकी छाप बदलती गई। बाद में जब भी एकाध बार उनका ज़िक्र आया तो 'अरे वो हमारे तेजपाल' कहकर ही उनका नाम याद आता। मन-ही-मन मैं उन्हें दोस्त समझने लगा था, क्योंकि आगे उस रूप में मिलने की कभी उम्मीद नहीं थी।

लेकिन आज उन्होंने मुझे पहचाना तक नहीं। कॉफ़ी हाउस में अगर वे पहचान लेते तो मैं ही उन्हें जी-भरकर कॉफ़ी पिलाता और इतने पुराने परिचित के मिलने पर ख़ुश होता। लेकिन आज तो उन्होंने जैसे मनजाने, पर खुले रूप में शत्रु ही घोषित कर दिया···मगर बीनू कहती है कि वे बेचारे तो अपने होश में नहीं थे? वे तो रांची से छुटकर आये हैं···जाने क्यों पागल हो गये? मिसेज़ तेजपाल जाने कहाँ होंगी···कैसी होंगी, जाने···

और मेरा मन घूमने में कतई नहीं लगा। यों ही सिगरेटें फूँकता लौट आया। क्वार्टरों में अँधेरा हो चुका था। मुश्किल से दस बजे होंगे और यहाँ आधी रात हो गई लगती है। कहीं एक पिछले बरामदे में हल्की रोशनी दीखती थी, अर्दली सुबह के लिए साहब के परेड के कपड़े लगा रहा होगा। गेट के दरबान ने ताला बन्द कर लिया था। बग़ल के रास्ते

से मैं भीतर की सड़क पर आ गया। कुहनी पर जिस दिन पट्टी बँधी थी, उस दिन मिसेज़ तेजपाल यहीं तो मुझे मिली थीं। दाहिनी ओर वे चल रही थीं और बाईं ओर कुतिया उन्हें घास की ओर खींचे जा रही थी। मन पर बड़ा बोझ घुमड़ आया। मान लो, किसी दूसरी जगह वे मुझे मिलें तो मैं उन्हें पहचान लूँगा ? या मुझे देखकर क्या वे खुद ही चहककर पूछेंगी, "कहो, अपनी फाँसी-वासी को कहाँ छोड़ आए···?"

अपने फ़्लैट की घण्टी बजाई। दरवाज़ा खुलने की राह देखते हुए मुझे ऐसा लगा कि अगर जल्दी ही दरवाज़ा नहीं खुलता तो मैं यहीं ज़मीन पर बैठ जाऊँगा। दूसरी बार घंटी बजाने वाला ही था कि किवाड़ों का काँच भक् से जल उठा, यानी भीतर बरामदे की बत्ती जली। चटखनी खुली। बड़े-बड़े फूलोंवाला गाऊन चढ़ाये बीनू थी। एक हाथ से अपने गालों पर किसी क्रीम की मालिश कर रही थी, "बड़ी देर कर दी···"

भीतर बरामदे में आकर, दरवाज़ा बन्द करके उसके लौटने की राह देखते हुए मैं बोला, "हाँ, यों ही। यहाँ अकेले बैठे-बैठे मन नहीं लग रहा था, सो ज़रा-सा टहलने निकल गया। अब तो किले के पास भी बहुत-से क्वार्टर बन गये हैं। पहले तो नहीं थे।"

"हाँ। ये तो तभी बन गये थे। अख़बारवालों ने तो बहुत शोर मचाया कि कलकत्ते की सारी सुन्दरता ही इस मैदान की वजह से है। अगर यों क्वार्टर या और चीज़ें बनती चली गईं तब तो बस यही याद करने को रह जायेगा कि यहाँ कभी मैदान था।"

"रणधीर सो गया क्या ?' मैंने अपने कमरे की ओर जाते हुए पूछा।

"अरे मैंने कहा, डी० जी० साहब, शाम को मेजर तेजपाल मिले थे, इस वक़्त कहीं मिसेज़ तेजपाल तो नहीं मिल गईं···?" मेरी बात के जवाब में भीतर से रणधीर की आवाज़ आई। फिर वह खुद ही हो-हो करके दबी-सी हँसी हँसा। रात में हँसी की आवाज़ बाहर भी जाती है।

पर्दा हटाकर मैं भीतर आ गया। टाँगों पर रजाई डाले, पलंग के सिरहाने के साथ टिका, रणधीर कोई किताब पढ़ रहा था। किताब रजाई पर औंधी रखकर मेरी ओर देखता बोला, "सुना, आज आपको मेजर

तेजपाल मिले थे···" बैठ-बैठ, फिर थोड़ी देर बाद जाकर सोना।" और उसने मेरे बैठने के लिए अपनी टाँगें समेट लीं। लगा, इस समय वह बातें करने के मूड में है। उसने किताब बीनू वाले खाली पलंग पर रख दी। दोनों पलंग सटे हुए बिछे थे। ऊपर अनखुली मसहरियाँ चाँदनी की तरह तनी थीं। बीनू ड्रेसिंग टेबिल के सामने वाले स्टूल पर आ बैठी और अँगुलियों में जाने कौन-कौन क्रीम, लोशन लगा-लगाकर चेहरे पर मालिश करती हुई हमारी बात सुनने लगी।

मैंने सचमुच परेशानी से कहा, "यार, इतना बड़ा धोखा कैसे हो सकता है? उस आदमी की शक्ल तो हूबहू तेजपाल से मिलती थी। फिर इस बीनू ने यह बताकर मेरा शक और भी पक्का कर दिया कि उनका दिमाग़ ख़राब हो गया था। क्योंकि जिस ढंग से उस आदमी ने बातें कीं, वह सही दिमाग़वाले आदमी की बातें थीं ही नहीं।"

रणधीर को अभी विश्वास नहीं हुआ। हँसकर बोला, "अरे जनाब, यही तो मैंने कहा कि—"वह तो मेजर तेजपाल थे, अगर किसी दिन मिसेज़ तेजपाल मिल गईं तो हमें अस्पताल में आपकी तलाश करनी पड़ेगी। आपके दिमाग़ में तो वही छाई है न, सो क्या ठीक है, जाने किस दिन किसी को भी जाकर पकड़ लें कि आप मिसेज़ तेजपाल हैं।"

इस बार उसके मज़ाक पर ध्यान न देकर मैंने परेशान स्वर में कहा, "मज़ाक छोड़ यार, बता न कहाँ हैं आजकल वे? मेजर तेजपाल को क्या हुआ था?"

शीशे में बीनू का पूरा शरीर दिखाई दे रहा था—उसके साथ ही मेरी परछाईं और पीछे का खाली पलंग, ऊपर लटका बल्ब। होठों पर अँगुलियों से मलने के बहाने अपनी दुष्ट हँसी छिपाती हुई बोली, "बता क्यों नहीं देते? खलबली के मारे बिचारे को रात-भर नींद भी नहीं आयेगी।"

"भई, जानने की उत्सुकता तो है ही···।" मैंने स्वीकार किया।

"अरे तुझे तो ख़त लिखती होगी न, तेरी तो दोस्त थी···मोस्ट इंटीमेट फ्रैण्ड···" उसकी मुसकराहट में मेरी बेचैनी का मज़ा लेने का भाव था। उसकी हर मुद्रा मानो कह रही थी कि मिसेज़ तेजपाल की बात सुन-

कर रहा नहीं जा रहा न···

मुझे ऐसी झुँझलाहट आ रही थी कि इसके बाल नोंच लूँ, इस वक़्त भी यह मज़ाक करने से बाज नहीं आ रही। मैंने आजिज़ी से कहा, "बीनू, तुम्हारे हाथ जोड़ता हूँ, इस वक़्त मज़ाक मत करो। न बताना चाहो तो कोई बात नहीं···"

बीनू की गर्दन मुड़ी, एक बार निगाहें रणधीर से और फिर मुझसे मिलीं। सहसा वह गंभीर हो गई। बोली, "ज्यादा तो ये ही जानें, इन्हीं के साथ तो थे मेजर तेजपाल उस वक्त। मैं तो यहाँ की बात जानती हूँ।"

इस बार जैसे कहीं दूर खोकर रणधीर बोला, "वह तो बहुत ही गंभीर केस हो गया भाई। हममें से किसी को भी अन्दाज़ा नहीं था कि बात यह होगी। हम लोग तो यही समझते थे कि दोनों का स्वभाव नहीं मिलता··· लेकिन भीतर इतनी बड़ी ट्रैजेडी होगी···"

ये लोग साफ़-साफ़ क्यों नहीं बता देते? क्यों मेरी उत्सुकता को खींचे चले जा रहे हैं? मैंने दोनों घुटनों पर हाथ रख लिए, अगर अब नहीं बताया तो मैं उठकर चला जाऊँगा। चिंतित मुँह बनाकर पूछा, "क्यों? कहीं कोई ऐसी-वैसी बात हो गई क्या?" तभी वही पुराना मज़ाक दुहराने का लोभ संवरण नहीं कर पाया, "दाने को कोई चुग गया क्या?"

"नहीं···" सोचता-सा रणधीर बोला, "चुगा-वुगा तो कोई नहीं गया। हाँ, दाने को ही पर निकल आए सो एक दिन फुर्र···" उसने हाथ से चिड़िया उड़ने का इशारा किया।

"हैं···" मैं चिहुँक-सा पड़ा, "सच? मज़ाक तो नहीं कर रहा?"

रणधीर अब भी नहीं हँसा। उसी तरह बोला, "हाँ, मज़ाक नहीं। उसी से उस बेचारे तेजपाल का दिमाग़ ख़राब हो गया। चाहे जो कहो, आदमी उस पर जान देता था। वैसे भी—ही वॉज़ ए फ़ाइन चैंप···"

"वे चाहे जान देते हों, लेकिन मिसेज़ तेजपाल ने तो शुरू से ही उन्हें पसन्द नहीं किया···लगता था जैसे वे उनकी छाया से दिन-रात बचती रहती हों और हमेशा अपने को कुतिया और गुड्डी में बहलाये रखना चाहती हों।" बीनू ने बाल खोलकर कन्धे के ऊपर से सामने की ओर कर

लिए और तेल की प्याली में अँगुलियाँ डुबा-डुबाकर धीरे-धीरे बालों की लटों में लगाने लगी थी, "तेजपाल के कैम्प चले जाने के बाद तो सचमुच उनकी हालत अजब हो गई थी। उन दिनों ज़रूर लगा जैसे वे या तो उन्हें बहुत ही याद कर रही हैं या बड़ी मानसिक कशमकश में से गुज़र रही हैं···"

"क्यों, कैम्प क्या बहुत दिनों को गये थे ?" मैंने पूछा।

"पूरे दो महीने का था। पहले तो उन्होंने मिसेज़ को घर भेजने की बहुत जिद की; लेकिन वे ही नहीं मानीं। बोलीं, यहीं रहूँगी। वहाँ मुझे अच्छा नहीं लगता। ख़ैर, यहीं रहने लगीं। वही दिन-दिन भर गाना और कभी गुड्डी और कभी कुतिया को लिए इधर से उधर घूमना। कुतिया को लिए हुए ईडन गार्डन तक घूमने जातीं। मिसेज़ रुद्रा को गुड्डी को इतनी-इतनी देर तक छोड़ना अच्छा नहीं लगता था; लेकिन हम लोग समझा देते कि बेचारी अकेली है। आपका क्या है, उनका मन लग जाता है। मिसेज़ रुद्रा को यह अन्धविश्वास भी था कि कहीं गुड्डी को वे कुछ कर-करा न दें। किसी आया ने शायद बता दिया कि जिन औरतों के बच्चे नहीं होते वे कुछ उस तरह की उल्टी-सीधी बातें करती हैं। और एक दिन उन्होंने मिसेज रुद्रा के चेहरे पर जाने क्या पढ़ा कि उस दिन से न तो रुद्रा के घर गईं, न कभी गुड्डी को साथ ले गईं—बस, दूर से ही टा-टा कर लेतीं। शुरू-शुरू में दो एक दिन तो हमारे यहाँ अड्डा जमाए रक्खा···इस बीच में कई बार कहा, 'मिसेज रुद्रा बड़े ओछे दिल की हैं।' मैंने बहुत बार पूछा, लेकिन बताया कुछ भी नहीं। बस यही पूछती थीं कि 'आपका किशोर कब आयेगा ?' लेकिन एक बात की ओर हम सभी लोगों का ध्यान जाये बिना नहीं रहा कि धीरे-धीरे उनका गाना कम होता चला गया। इसके साथ-साथ ही औरों के यहाँ आना-जाना भी घटा, हमने सोचा कि बेचारी अकेली हैं, परदेस में हम लोग ही तो उनके अपने हैं, सो मैं अक्सर उन्हें देखने जाने लगी। लेकिन उनके व्यवहार में एक ऐसी अजीब निर्जीवता और उदासीनता आने लगी थी कि भई, फिर हमने भी जाना बन्द कर दिया। वे अक्सर मोटी-मोटी किताबें लेकर बैठी रहतीं। ये मुझे अक्सर कहते—आजकल ग्रामोफ़ोन चुप क्यों है ? दाना आज दिन-भर

नहीं दिखाई दिया। तबीयत तो ख़राब नहीं है, तुम्हीं देख आओ···"

रणधीर ने अपनी सफ़ाई दी, 'मैंने सोचा कि अकेली औरत है। कभी किसी चीज की जरूरत ही पड़ जाये। अकेले मन भी तो नहीं लगता होगा। मान लो, आज मैं ही कैम्प चला जाऊँ तो पास पड़ोस वालों पर ही तो इन्हें छोड़कर जाऊँगा या नहीं ? इसलिये मैं कहता कि दोपहर में उनके साथ ज़रा ताश-वास खेल लिया करो···"

बीनू ने मुसकराकर बात काट दी, "तो मैं आपसे कुछ कह थोड़े ही रही हूँ ? आप अपनी सफ़ाई क्यों दे रहे हैं ?" फिर अपनी बात का आनन्द लेती हुई मेरी ओर मुड़ीं, "सो जब भी अक्सर इनसे मुलाकात होती आप जुबान में शहद घोलकर कहते, मिसेज तेजपाल, आपकी तबियत-वबियत तो खराब नहीं रहती ? वैसे तो आप खुद ही तकल्लुफ में विश्वास नहीं रखतीं—कि कुछ सोचेंगी नहीं, लेकिन हमारे लायक कोई काम हो तो बिना किसी संकोच के बताइये। आपका यों सुस्त रहना सारी जुबली-लाइन्स को अखर रहा है। हमें तो बिना गाना सुने खाना हजम होना बन्द हो गया है। इस बीनू के साथ-साथ पहले आप शॉपिंग, क्लब, सिनेमा वगैरह तब भी चली जाती थीं, दिन भर कुछ-न-कुछ करती रहती थीं अब आपने वह भी बन्द कर दिया···लेकिन उन्होंने इन्हें कभी लिफ़्ट नहीं दी। एकाध बार तो इन्होंने मजाक में कह भी दिया, "मेजर तेजपाल को बहुत ही मिस कर रही हैं क्या ? अगले हफ्ते मुझे भी कैम्प जाना है। उन्हीं के साथ पड़ा है। जाऊँगा तो कह दूँगा। वे 'थैंक्स' कहकर चुप हो गईं। फिर सुस्त-सी हँसी हँसकर बोलीं, 'नहीं' कोई ऐसी ख़ास बात तो नहीं है।' ये अपना-सा मुंह लेकर रह गये···"

रणधीर नई जलाई सिगरेट का कश खींचने की व्यस्तता में अपनी झेंप भरी मुस्कराहट छिपाता रहा, 'नो बीनू ! ऐसी कोई बात नहीं थी। डौंट बी सिली। मैं तो यों ही कर्टसी शनर के लिए पूछता था।"

"हाँ-हाँ, तो मैं कौन-सा कोई दूसरा मतलब लगा रही हूँ ?" वह रहस्यमय ढंग से मुस्कराई। फिर अपने किस्से पर जाकर बोली, "किटी को सुबह-शाम घुमाने वे जरूर ले जातीं। इस प्रोग्राम में कभी लापरवाही नहीं हुई। वर्ना दिन भर इस बरामदे में कभी उस बरामदे में रेलिंग के

सहारे खड़ी-खड़ी कुहनियाँ टिकाये, होंठों को नीचा करतीं···मैंने उन्हें तीन-तीन चार-चार घण्टे यों ही खड़े देखा है···जाने क्या देखा करतीं, सूनी-सूनी आँखों से। यह तो सभी जानते थे कि हस्बैंड और वाइफ में बहुत ज्यादा प्यार हो, ऐसा नहीं है; फिर भी हमने सोचा कि उन्हें टीज़ करने, तंग करने के लिए ही सही, सारे दिन गातीं खिलखिलातीं तो रहती थीं, एक रौनक बनी रहती थी। हम लोगों के लिए भी चर्चा के लिए कोई चीज थीं। अब वह सब कुछ भी नहीं रह गया। जब जाओ तब कभी 'वार एण्ड पीस' पढ़ रही हैं, कभी 'ज्यां क्रिस्तोफ'। हम घण्टों चुपचाप बैठे रहते। हारकर पूछते, "मिसेज़ तेजपाल आपका मन कैसे लगता है इन किताबों में?" बस, जवाब में खोई-खोई सी मुसकरा देतीं···मानो किसी दूसरी दुनिया में जाकर रहने लगी हों···हम सभी इस बात को महसूस करने लगे थे कि सिर्फ़ शरीर यहाँ है···ये अब यहाँ नहीं रहतीं···इसके बाद इनके भी ऑर्डर्स तेजपाल के साथ ही कैम्प जाने को आ गये। मेरे दो एक हफ़्ते इनके तैयारी और बाद की सँभाल में चले गये···इस बीच में मुझे दिल्ली भी जाना पड़ा···किशोर से मिलने।"

मैंने गम्भीरता से कहा, "ख़ैर, यह तो मैंने भी मार्क किया कि उनका वह गाना खिलखिलाना बहुत स्वाभाविक और भीतर से फूटा हुआ नहीं था। लगता था, मेजर तेजपाल को चिढ़ाने के लिए ही वह सब करती हों···" और मुझे फिर हुगली वाली याद हो आई।

"भई, अब जो भी हो···उनके मन की बात तो भगवान् ही जाने।" बीनू यों ही हथेलियों पर बालों के सिरे को लेकर तेल लगे हाथ मसलती रही, 'लेकिन दिल्ली से आते ही उनमें एक और परिवर्तन की ओर हमारा ध्यान जरूर गया। दिन में दो-तीन बार मिसेज़ तेजपाल हमारे यहाँ पूछने आने लगीं कि 'पोस्टमैन आ गया क्या?' जैसे ही पोस्टमैन आता, वे दूर से ही अपना दरवाज़ा खोलकर खड़ी हो जातीं और जब वह नीचे से ही चला जाता तो उनका चेहरा देखने लायक हो जाता। वे हमारे यहाँ आतीं, 'ग़लती से हमारा कोई ख़त तो पोस्टमैन यहाँ नहीं डाल गया?' अक्सर किटी को घुमाती हुई हेस्टिंग्ज़ के पोस्ट ऑफिस जा पहुँचतीं···या गेट पर खड़ी-खड़ी दरबान से पूछा करतीं कि डाक किस-किस समय

बँटती है। दूसरों के खत लेकर उनकी मोहर देखतीं और अक्सर शिकायत करतीं कि मुहर पर समय साढ़े आठ पड़ा है और डाक ग्यारह बजे बाँटी जा रही है। इन डाकियों की शिकायत होनी चाहिये। लगता था कि ख़त पाने के लिए वे पागल रहती थीं···उनका रोम-रोम मानो साकार प्रतीक्षा बन गया था। उनका खत तो हमारे यहाँ नहीं आया; लेकिन एक दिन वे ट्रेनों का टाइम पूछते हमारे यहाँ आईं। एक हाथ में खुला पेन और दूसरे में आधे लिखे ख़त का पैड था। शायद ख़त में ट्रेन के आने या जाने का टाइम लिखना था, सो यों ही लिये भाग आईं। चली गईं तो तो मैंने देखा—ख़त का एक पन्ना मेज़ से उड़कर कुर्सी के नीचे जा गिरा है···मैंने इन्हें भी दिखाया। मेरी समझ में तो कुछ आया नहीं। जाने क्या-क्या लिखा था! उन्हें वापस लौटा देने के लिये मैंने वह पन्ना एक किताब में रख दिया और फिर ऐसी भूल गई कि बहुत खोजने पर भी नहीं मिला। इसीलिए फिर जान-बूझकर उनसे जिक्र भी नहीं किया कि माँगेंगी तो क्या दूँगी। ये मुझसे लड़ते रहे कि अगर ऐसी ही याद पाई है तो उसे मेज़ पर ही रख देती कम-से-कम उन्हें लौटा तो देते ही···"

रणधीर निहायत निर्विकार भाव से आँखें बन्द किये सिगरेट पी रहा था, उसने पीठ पीछे टिका ली। यों ही रहकर बोला, "तुम अपनी बात तो पूरी कर लो पहले···।"

बीनू ने उसे देखा और मेरी ओर भौंह से इशारा किया। बोली, "हम लोग आश्चर्य करते और दिन-रात इसी बारे में बातें करते कि आख़िर मिसेज़ तेजपाल को हो क्या गया? सपने में भी ख्याल नहीं था कि तेजपाल के बाद उनकी हालत यह हो जायेगी। हम तो सोचा करते थे कि ये उन लोगों में से हैं, जिन्हें कुएँ में भी डाल दो वहाँ भी गाती-गुनगुनाती रहें···लेकिन उन दिनों तो गाना खो ही गया था···"

हममें से कोई कुछ पूछे इसके लिए थोड़ा-सा समय देकर बीनू ने आगे बताया, "और तब सुना, एक दिन उनके फ्लैट में वॉयलिन की आवाज़ आ रही है। उन्हें वॉयलिन सीखने की धुन लग गयी थी। एक काला-सा आदमी उन्होंने लगा लिया था जो रोज़ आकर उन्हें वॉयलिन सिखाया करता था।। शायद मेजर अइयर ने वह ट्यूटर उन्हें सुझाया था। जब

भी जाओ तो वॉयलिन बजा रही हैं···उसी के बारे में बातें···बाज़ार जाओ तो उसी की चीज़ों का वर्णन···उन्हीं की दुकानों का चक्कर··· हम लोग समझ गये थे कि ये सनकी हैं और जो भी इनके दिमाग़ में चढ़ जाता है बस, उसी के पीछे हाथ धोकर पड़ जाती हैं। और इसके बाद न इन्हें खाने का होश रहता है, न सोने का। बस, किटी को घुमाने का काम वे बिना नागा नियमित रूप से करती थीं। कलाई में फ़ीता लपेटे वे रोज़ दोनों वक्त उसे घुमाने ले जातीं। लेकिन जैसे पहले उसके पीछे गाती, गुनगुनाती, क़ुलाचें भरती-सी निहायत बेफिक्र मस्ती से चली जाती थीं वह सब एकदम समाप्त हो गया था···अब तो लगता था जैसे बीमार और मजबूर-सी उस लगड़ी कुतिया के पीछे-पीछे घिसटती चली जा रही हों···। हम लोगों को बड़ा तरस आता···देखो, इनकी क्या हालत हो गई है।···फिर एक दिन देखा कि सामान-वामान बाँधकर उन्होंने सीट रिज़र्व कराई और आकर बोलीं, 'मैं घर पर जा रही हूँ।' हम लोग कर ही क्या सकते थे? स्टेशन जाकर उनको और उनकी कुतिया को बिदा कर आये···जाते-जाते रोने लगीं···'गुड्डी की मुझे बड़ी याद आयेगी।' बस, उस दिन के बाद से आज तक पता ही नहीं लगा कि कहाँ गईं···।" बीनू का गला भर आया।

थोड़ी देर हम लोग सभी चुप रहे। मानो उस प्रभाव को आत्मसात् करते रहे। उनका दुःख मुझे भीतर ही जैसे सालने लगा। गले का थूक निगलकर पूछा, "उस ख़त के पन्ने में क्या लिखा था?"

"एक शायरी थी और भी जाने क्या-क्या था···" बीनू ने बताया।

तब रणधीर ने आँखें खोलीं और फ़िज़िडियर के पास वाली अलमारी की ओर इशारा करके कहा, "वे चर्चिल के 'वॉर मैमोअर्स' रखे हैं न, उनके बायें सिरे वाली जिल्द में रखा है ख़त।"

"हैं?" मैं जोर से उछल पड़ा। लपककर किताब उठाई और भूखे की तरह पलटकर ख़त खोजने लगा।

"आपको पन्ना मिल गया और आपने हमें बताया तक नहीं···?" बीनू ने शिकायत के लहजे में कहा।

"अभी सात-आठ दिन पहले ही किताब के पन्ने पलटते-पलटते दीख

गया था···" फिर मुझसे बोला, "वह है न नीला-सा कोना···।"

मैंने नीला कागज़ खींच लिया। देखा, किसी बड़े ख़त के बीच का हिस्सा था। एक बार पढ़ा, दो बार पढ़ा, तब कहीं समझ में आया कि मैं क्या पढ़ रहा हूँ। कागज़ एकदम यों शुरू होता था—

"···तनाव टूट जाने की स्थिति तक आ पहुँचा है। सारे दिन अकेली बैठी-बैठी पढ़ा करती हूँ, लेकिन कुछ भी पढ़ नहीं पाती। किताबें खुली रहती हैं, पन्ने पलटे जाते हैं, आँखें अक्षरों और लाइनों पर घूमा करती हैं और लगता है, दिमाग़ के बोझ से पलकें बन्द हो-हो जाती हैं। पता नहीं रहता कि चारों तरफ़ क्या होता रहता है? जाने यह क्या हो गया है मुझे! सारे दिन सर्दी लगती रहती है और बदन पसीने से तर-बतर रहता है। नींद पूरी तरह नहीं आती। जाने क्या क्या घूमा करता है दिमाग़ में!"

"याद है, एक बार तुमने लिखा था, 'हम लोग एक-दूसरे को सँभालने, सँवारने और बनाने में मदद दें, दुःख और कमज़ोरी के क्षणों में उसे बाँटकर एक दूसरे को हल्का कर सकें, बल दे सकें···' कुछ कर सकते हो, बोलो···? मेरे दिमाग़ से यह बोझ उतार सकोगे? इस तनाव से पीछा छुड़ा सकते हो···? मानोगे, मैं आजिज़ आ गई हूँ···

"···सुनो, एक हफ्ते भर को यहाँ आ जाओ न···मैं कतई परेशान नहीं करूँगी तुम्हें, सारा दिन···कुछ देर बातें करेंगे बस, फिर तुम बैठे वॉयलिन बजाया करना···मैं चुपचाप सुना करूँगी···

"साहिर की लाइनें बार-बार तुम्हें लिखने को मन करता है—

कहीं ऐसा न हो कि मेरे पाँव थर्रा जाएँ
और तेरी मरमरी बाहों का सहारा मिले
अश्क बहते रहें, खामोश सियह रातों में···
और तेरे रेशमी आँचल का किनारा न मिले···"

बस, ख़त यहीं समाप्त हो गया था। जाने क्या लिखा होगा अगले पन्नों में! मैं बड़ी देर सोचता रहा। जानता था, यह पत्र मेरे लिए नहीं हो सकता था···फिर भी एक ठण्डी साँस दिल को चीरती चली गई··· काश, यह ख़त मेरे लिए ही लिखा गया होता···

"देखूँ, मैं भी तो देखूँ, क्या मतलब निकलता है इसका···?" बीनू

के स्वर और ख़त लेने को बढ़े हाथ से मैं जैसे तन्द्रा से चौंक पड़ा··· किसी वॉयलिन बजाने वाले की बात उस दिन हुगली के किनारे बताई तो थी। गहरी साँस लेकर बात को पूरा किया, "तो इसी ग़म ने मेजर तेजपाल को पागल कर दिया ?"

इस बार रणधीर सीधा उठकर बैठ गया। सिरहाने दूध के गिलास वाली मेज़ पर रखी जूते के आकार की एश-ट्रे में सिगरेट डालकर उसने दोनों हाथों को पहलवानों की तरह छाती पर कस लिया, निचला होंठ सिकोड़कर चबाया और बड़ी संजीदगी से गर्दन हिलाकर बोला, "नॉट एक्ज़ैक्टली ··नहीं, इस ग़म ने मेजर तेजपाल को पागल नहीं किया। वह ग़म बहुत गहरा था, दूसरा था। जैसा कि तुम कहते हो न, कि मिसेज़ तेजपाल का गाना, चहचहाना सब बनावटी और नकली लगते थे, उसी तरह मुझे भी लगता है कि मेजर तेजपाल का दबदबा, खूँखारपना और कठोरता भी असली नहीं थे···और दोनों अपने-अपने नकली हथियारों से एक दूसरे से लड़ रहे थे···मजा यह कि दोनों जानते थे कि हथियार दोनों के पास नकली हैं···यह लड़ाई खुद नकली है ! असली मोर्चा तो कुछ भीतरी ही था और वहीं वह उन्हें हरा गई···"

"क्या मतलब ?" रणधीर ने इतनी सारी बात कही और सचमुच मेरी समझ में कुछ नहीं आया। पूछा, "वे कैम्प जा पहुँचीं क्या ?"

"नहीं जी, वे कैम्प क्यों पहुँचतीं ?" और फिर आँखें बन्द करके उसने कहा, "बात असल में यों हुई कि···भई, मेजर तेजपाल को तो तुमने देखा ही था। शुरू से ही रिज़र्व रहते थे। मूड में हुए तो बोल लिये, नहीं तो बहुत कम ही बोलते-चालते थे। कैम्प पर एक दिन लालटेन बीच में रक्खे हम लोग खाली वक्त में कोई ज़रूरी कागज़ देख रहे थे। मेज़ पर आमने-सामने बैठे थे। तभी अर्दली ने डाक लाकर दी। उनका भी ख़त था। उन्होंने लिफ़ाफ़ा खोला, ख़त निकालकर पढ़ा और फिर रख दिया। थोड़ी देर चुप रहे। मैं समझ तो गया कि ख़त मिसेज़ तेजपाल का है। फिर भी पूछा, "किसका है, कोई ख़ास बात है क्या ?" तो जवाब दिया, "नहीं, यों ही पूछा है, घर चली जाऊँ ?" ख़ैर, हम लोग फिर काम में लग गये। मुझे लगा जैसे मेजर तेजपाल का मन काम में

लग नहीं रहा। थोड़ी देर बाद उन्होंने फिर लिफ़ाफ़ा उठाया, पढ़ा और वहीं रख दिया। मैंने सोचा, काम सुबह हो जायेगा। इस वक्त इन्हें अपने सोचने के लिए अकेला छोड़ दूँ। सो डिनर पर मिलने को कहकर मैं भी उठ आया। खाने पर जब वे नहीं पहुँचे तो पता लगवाया। अर्दली ने आकर कहा कि 'साहब तो बन्दूक़ लेकर गया है। कह गया है कि हम शिकार पर जाता है।' मुझे अजब-सा लगा। इतने दिन हो गये, इस वक्त तो कभी शिकार पर नहीं गये। लेकिन दो दिन पहले ही वे गाँव के एक आदमी से नीलगायों के बारे में बातें कर रहे थे, सोचा शायद उनके साथ कोई समय तय कर डाला हो। लेकिन बिना मुझे बताये चले जाना कुछ समझ में नहीं आया।

"दूसरे दिन पता लगा कि उस रात को पास की पहाड़ी पर चले गये थे और वहाँ उन्होंने अन्धाधुन्ध आसमान की ओर फ़ायर किये थे। सुबह जब अर्दली ने लाकर बेड-टी लगायी तो धक्का मारकर उसे दूर फेंक दिया। परेड पर आये तो बड़ा अजब हाल, वही रात के कपड़े, हजामत बढ़ी हुई, रात भर जगा, भारी-भारी आँखों वाला मनहूस चेहरा। मैंने पास जाकर कन्धे पर हाथ रखा, हमदर्दी से पूछा, 'वाट्स रौंग चैप···' तो अचानक मेरा हाथ झटककर पागलों की तरह एक तरफ भाग खड़े हुए। झाड़ी, पत्थर, गड्ढे, काँटे-कंकड़ कुछ भी नहीं देखा···जाने कहाँ-कहाँ भागते फिरे। सारे कपड़े फाड़ लिये। बदन में जगह-जगह खरोंचे पड़ गईं ···सारा शरीर ख़ून से रंगीन हो गया। लोगों ने भागकर पकड़ा तो लगे लात-घूँसों से मारने।···वहीं के दो-एक आदमियों ने बताया, सा'ब, इन पर देवी आ गई है।' मैंने सबको भगा दिया और बार-बार पूछने लगा, 'मेजर तेजपाल, ये आप क्या कर रहे हैं ? कुछ तो सोचिए, आपको यह क्या हो गया है ? ये लड़के लोग भी क्या सोचेंगे ? लेकिन मेरी बात का जवाब न देकर बस, एक से एक बुरी-बुरी गंदी गालियाँ देते और हर तीसरे मिनट कहते, 'मैं गोली मार दूँगा।' उस वक्त उन्होंने किसी की एक नहीं सुनी। यह तो कहो उनके दिमाग़ में नहीं आया; वर्ना अगर कहीं ईंट-पत्थर मारने की बात दिमाग़ में आ जाती तो दो-एक को घायल कर डालते। संभालना भी मुश्किल हो जाता। दो-चार आदमियों के तो यों

भी बस के नहीं थे। ख़ैर, जब उन्हें पकड़कर कैम्प लाये तो उनका बुखार कुछ-कुछ उतर गया था और वे अच्छे-भले, लेकिन बीमार आदमी की तरह व्यवहार करने लगे थे। बहुत देर माफ़ी-वाफ़ी माँगते रहे। बोले, 'यार धीर, मुझे जाने क्या हो गया था। बुरा मत मानना,, प्लीज़। आइम सो सॉरी, रीयली।' मैंने भी उन्हें समझाया, 'कोई बात नहीं, कोई बात नहीं। आप अब आराम कर लें।' सोचा कि कोई लहर आ गयी थी, अब गुजर गई। थोड़ी देर उनका माथा-वाथा सहलाता रहा। सोचा, इस वक्त ज्यादा सवाल-जवाब करना ठीक नहीं है। दो आदमी पहरे पर रखकर चला आया। वे सारे दिन कम्बल ओढ़े पड़े रहे। कैप्टन मक्रीजा ने आकर देखा, बिल्कुल नॉर्मल आदमी थे। हाँ, वह खत उन्होंने जाने कब फाड़-फूड़ डाला और अब मक्रीजा ने उसके बारे में पूछा तो डाँट दिया, 'वह मेरा अपना पर्सनल मामला है।' दिन भर कुछ भी नहीं खाया-पिया। सारा बदन अंगारों की तरह तपता रहा, एक पल को आँख नहीं लगी। किसी से कुछ बोले भी नहीं···"

"वह खत नहीं देखा···?" मैंने पूछा।

"वही तो ग़लती हो गई। उसे देख लेता तब तो सारी बात का पता ही चल जाता। ख़ैर, दूसरे दिन संध्या को बोले, 'मैं ज़रा टहलूँगा।' इन लोगों ने भी सोचा कि भले आदमी की तरह छत्तीस घण्टे हो चुके हैं, अब बुखार उतर गया होगा। उनके बैरा को साथ करके उन्हें टहलने भेज दिया। झुटपुटे का समय था। वे आगे-आगे थे, बैरा कुछ दूरी पर चल रहा था। रास्ते भर दोनों चुप रहे। लेकिन आते वक्त उन्हें एक औरत मिल गई। वह अपने खेत से पोटली सिर पर लादे घर आ रही थी। बस, उसे देखते ही उनका दिमाग़ फिर खराब हो गया। एक ही छलांग में उसके सिर पर सवार हो गये। पूछा न ताछा और औरत को उठाकर धरती पर दे पटका। उसके सारे कपड़े-वपड़े फाड़ डाले और जब तक उसकी चीख-पुकार सुनकर, अर्दली की आवाज़ पर लोग दौड़े, तब तक उन्होंने उसके शरीर पर एक इंच कपड़ा नहीं रहने दिया था। गाँव वालों ने कुछ शायद पीट-पाट भी दिया और लाकर कैम्प छोड़ गये। रात-भर उन्हें खाट से बाँधकर रखा गया। वे सारी रात चिल्लाते-चीखते रहे, 'मुझे

छोड़ दो, मुझे छोड़ दो।' दूसरे दिन कैप्टन मक्रीजा ने रिपोर्ट दे दी कि इनका दिमाग़ ख़राब हो गया है और उन्हें जल्दी से जल्दी कैम्प से हटा देना जरूरी है। मक्रीजा के साथ उसकी नर्स भी थी। उसे देख-देखकर वे जैसी चेष्टाएँ करते थे, और जिस अश्लील और बीभत्स-भाषा में कहनी-अनकहनी सुना रहे थे, उसे देखकर नर्स को वहाँ से हटा देना पड़ा। इससे यह तो साफ़ हो गया कि औरत की सूरत देखते ही उनका पागलपन भड़क उठता है। इसके बाद उन्हें रांची पहुँचा दिया गया···सच कहता हूँ, मैं तो उस बेचारे की बात आज भी सोचता हूँ, तो बड़ा दुख होता है। मेरे साथ ही 'प्रमोशन' मिलने वाला था। शुरू के दिनों की रिपोर्ट के बारे में मक्रीजा बताता था कि खम्बा, पेड़, किवाड़ उनके सामने जो भी पड़ जाता उससे लिपट जाते, उसके साथ अश्लील चेष्टाएँ करते और खुद अपने-आपको लहू-लुहान कर डालते···" रणधीर दर्द से बोलता रहा और मुझे पहली बार ऊपर का बल्ब उसकी नम आँखों में झलमलाता दिखाई दिया।

कुछ देर चुप्पी छाई रही। बीनू ने भी ख़त पढ़कर किताब में रख दिया था और किताब को दोनों हथेलियों में दाबे, घुटनों पर रखे चुपचाप कुछ सोचती, बैठी थी। शीशे में उसकी कनपटी को ढंकते, कन्धे से सामने आते बाल लटके थे। मैं फिर बोला, "ख़ैर ख़त तो नहीं पढ़ा जा सका, लेकिन जो कुछ वे बकते थे उससे कुछ अन्दाज तो लग ही सकता है। अक्सर क्या कहते थे?"

"चिल्ला-चिल्लाकर यही कहते थे कि मैं भी आदमी हूँ। मैं अभी दिखा दूँगा, मैं मर्द हूँ। लाओ, औरत लाओ, मेरे सामने, मैं अभी दिखाता हूँ···"

"हैं?" और बेचैनी से रणधीर को बात पूरी करने देने से पहले ही मैं चौंककर खड़ा हुआ, "अच्छा? यह सब कहते थे···? तब तो, तब तो···" मैं अगली बात कैसे कहूँ, यह सोचकर हकलाने लगा, "तब तो इसका मतलब यह हुआ कि···"

लाचारी और असहाय भाव से रणधीर धीमे गले से बोला, "भई कैसे कहूँ? मुझे तो आज भी विश्वास नहीं है···डाक्टरी रिपोर्ट भी ऐसा नहीं कहती···।"

इस बार वीनू ने कहा, "सचमुच बड़ी वैसी औरत थी···उस बेचारे अच्छे-खासे आदमी की जिन्दगी खराब कर दी···अरे, तुझे जाना ही था तो यों ही चली जाती ! ···"

लेकिन उस गंभीर वातावरण में बीनू की बात को किसी ने महत्व नहीं दिया। और जाने कितनी देर हम लोग यों ही अलग-अलग बैठे सोचते रहे···मेरे दिमाग़ में एक के बाद एक तस्वीरें कौंध रही थीं···

बरामदे की घड़ी ने जब घन्-घन् करके बारह घण्टे बजाये तो गहरी साँस लेकर मैं उठा, "अच्छा, अब तुम लोग सोओ···मैं चलता हूँ···सच-मुच सुनकर बड़ा अफसोस हुआ···"

और जैसे ही बीनू की गोद से किताब उठाकर चलने लगा कि अपनी गंभीरता के पार बड़े खिसियाने-से ढंग से मुस्कराकर रणधीर ने मज़ाक किया, "अब इसे छाती पर रखकर सोना, बड़े खूबसूरत सपने आयेंगे···"

कोई बात कितनी नाजुक होती है और किस पर मज़ाक करना चाहिए, किस पर नहीं, यह तमीज़ इन मिलिटरी वालों को कभी नहीं आयेगी—मैंने मन-ही-मन सोचा और चला आया। लेकिन यह सच है कि युद्ध के संस्मरणों के बीच दबा वह ख़त मेरे सिरहाने रखा रहा और मुझे रात भर बड़े अज़ब-अज़ब सपने आते रहे। जैसे मैं मन-ही-मन अपने-आपसे बातें करता रहा। मैं अवचेतन रूप से रात भर मिसेज़ तेजपाल और मेजर तेजपाल की ही बातें सोचता रहा···स्मृति के प्रोजैक्टर के सामने कुछ तस्वीरें बार-बार उभर-उभरकर आती रहीं···मैं चाँदनी रात में ताजमहल के पास सीले-सीले लॉन में हथेलियों पर सिर रखे चित्त लेटा आसमान को ताके जा रहा हूँ···कोई सीढ़ियों पर घुटनों में सिर गड़ाये चुपचाप बैठा है—यह छाया मेरी चेतना पर अंकित हो गई है।·· होली के भूत जैसी शक्ल बनाये मेजर तेजपाल मिसेज़ तेजपाल की पीठ में बन्दूक़ की नली अड़ाये उन्हें जाने किन ऊबड़-खाबड़ रास्तों से धकेले लिये जा रहे हैं···गुड्डी के हाथ में ढेर से कमल के फूल देकर वे खुद गुब्बारे उड़ातीं, हरियाले मैदान के ढाल पर मेरी ओर दौड़ी चली आ रही हैं··· मैं देखता हूँ कि दौड़ते-दौड़ते मिसेज़ तेजपाल अचानक ग़ायब हो जाती हैं और उनकी जगह सिर्फ़ गुड्डी दौड़ती आती दिखाई देती है। वह अकेली

ही भागी चली आ रही है···भयानक आँखों वाली कमर से ऊँची और तगड़ी अलसेशियन कुतिया उन्हें सीढ़ियों पर, सड़क पर और न जाने कहाँ-कहाँ घसीटे लिए जा रही है···कलाई में चमड़े का फीता लपेटे कुहनी पर सफ़ेद पट्टी बाँधे गाती हुई वे खिंची चली जा रही हैं···खिंची चली जा रही हैं···कमान बनीं···। अचानक देखता हूँ कि कुतिया के पीछे मिसेज़ तेजपाल नहीं, बल्कि गुड्डी खिंची चली आ रही है···आवाज़ मेरे गले तक आकर रह जाती है—'गुड्डी ! कलाई से फीता छुड़ा लो। उसे छोड़ दो···वह कुतिया बड़ी भयानक है···तुम्हें जाने कहाँ गड्ढे-खाई में गिरा देगी'···और फिर सारी तस्वीरें गोलियों के फूल में बदल जाती हैं···और यह फूल अँधेरे में आतिशबाजी की चरखी की तरह फूटता हुआ सारे आसमान को ढँक लेता है···और बीचोंबीच एक सैण्टर-सैकिण्ड की सुई लपलपाती जीभ की तरह घूमती रहती है···

सारी रात मुझे लगा जैसे कहीं बहुत गहरे से, एक निहायत ही महीन रोती-सी वॉयलिन की लहरी सुनाई देती रही···

सुबह एक गहरी छाप मन पर थी, पता नहीं वह तगड़ी अलसेशियन कुतिया उन्हें खींचकर कहाँ ले गई···नहीं, वे खुद नहीं गईं···।